TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180536
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 R31S   Acc. No. GH2611

रेडियो वार्तायें

उपाध्याय

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

all No

Accession No

uthor

tle

This book should be returned on or before the date ist marked below

श ब री

[रामायणकालीन पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास]

बालशौरि रेड्डी

शिक्षा भारती
१, रामकिशोर रोड, दिल्ली

मूल्य	:	दो रुपये (२.००)
प्रथम संस्करण	:	१९५९
प्रकाशक	:	शिक्षा भारती, दिल्ली
मुद्रक	:	हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

शबरी

विन्ध्याचल से लेकर दक्षिण में ऋष्यमूक पर्वत तक भयंकर जंगल फैला हुआ है। घने वृक्षों से पूर्ण उस वन में हिंस्र पशु स्वेच्छापूर्वक विहार करते रहते हैं। सूर्य की किरणें भी उस सघन वन में नहीं पहुंच पातीं। उस जंगल के दूर तक फैले हुए विशाल वृक्षों की शाखाओं पर नाना प्रकार के पक्षी अपने नीड़ बनाए हुए हैं। पक्षियों के कलरव सदा गूंजते रहते हैं। बीच-बीच में पहाड़ हैं, उनपर से पहाड़ी झरने कल-कल ध्वनि करते झरते दिखाई देते हैं। उस वन में बाहरी प्राणिमात्र का प्रवेश करना असंभव दीखता है। वृक्ष फल-फूलों से लदे हुए हैं।

वहां की प्रकृति अत्यंत शोभायमान है। हरे-भरे वृक्षों पर कोयलें कूक रही हैं, तो वृक्षों के नीचे मयूर नाचते दिखाई देते हैं। कहीं-कहीं गुफाओं में जटाधारी ऋषि-मुनि ध्यानमग्न हो वेदमंत्रों का उच्च स्वर में पाठ कर रहे हैं। दिगंत तक फैले हुए गगन-मंडल के नीचे वहां की वनदेवी इठलाती, बलखाती नृत्य करने वाली नर्तकी की भांति मानो अपना हरा अंचल फैलाए हुए हो।

जंगल के बीच में एक सुन्दर सरोवर है। जहां पर पानी पीने के लिए सभी पशु जाया करते हैं। सरोवर में कमल खिले

हुए हैं जिनपर भ्रमर गुंजार करते हुए मधु के लोभ में ऐसे मंडरा रहे हैं मानो किसी चन्द्रवदनी के मुख-मंडल पर केशों का जाल फैला हो। तड़ाग के निर्मल जल में मलय समीर के झोंके खाकर तरंगें ऐसे उठ और गिर रही हैं मानो शिशु की पीठ पर उसकी माता थपकियां दे रही हो।

सरोवर के एक तरफ हाथियों का झुंड पानी पीते, पानी उछालते और कमल-नालों को ऊपर उठाए क्रीड़ा कर रहा है। हिरणों का समूह उछलते-कूदते और छलांग मारते सरोवर के समीप पहुंच रहा है।

तड़ाग के चतुर्दिक् घास ऊंची उगी हुई है, जिसमें सरीसृप आदि सरसर ध्वनि करते रेंग रहे हैं। पास के वृक्षों पर बैठे तोता, मैना, कबूतर और कोयल कल-कूजन कर रहे हैं। वृक्षों के ऊपर अपने पंख फड़फड़ाते चील शिकार की खोज में अपनी पैनी दृष्टि प्रसारित कर चारों तरफ मंडरा रहे हैं। इस प्रकार उस वन के पशु, पक्षी और झरनों की ध्वनि पहाड़ों से टकराकर तराइयों में प्रतिध्वनित होती हुई गिरि-कंदराओं में विलीन होने लगी। यही सारा वन-प्रदेश दंडकारण्य नाम से विख्यात है।

भगवान् विष्णु ने रामावतार लेकर अपने चरण-स्पर्श से इस पवित्र भूमि को पुनीत किया। उनकी चरण-धूलि पाकर वहां के पाषाण भी प्राणवान् हो उठे थे। श्री रामचन्द्रजी के आगमन से उजड़ा हुआ जंगल हरा-भरा हो गया था। धरती माता पुलकित हुई। वहां के पशु-पक्षी और कृमि-कीट तक धन्य हो गए। पापियों ने मुक्ति प्राप्त की। सदाचारसम्पन्न भक्तों

का नाम अमर हो गया।

रामायण-काल से एक अत्यंत पवित्र नदी 'शबरी' नाम से प्रवाहित होती आ रही है जो कि भगवान् रामचन्द्र की अनन्य आराधिका शबरी का स्मृति-चिह्न बनी हुई है। शबरी ने रामचन्द्रजी के चरण-कमलों की दर्शनाभिलाषा से उनका ध्यान करते हुए अपना सारा जीवन यहीं पर व्यतीत किया था।

२

दण्डकारण्य के बीच एक ऊंचे टीले पर वृक्षों की छाया में शबरों की छोटी-सी बस्ती बसी हुई है। उस बस्ती के बीच में शबर नायक की झोंपड़ी पत्तों के तोरणों से अलंकृत है और उसके सामने लोग प्रसन्न मुद्रा में नाच-गान कर रहे हैं।

शबर नायक के यहां एक पुत्री का जन्म हुआ। सभी लोग नाच-गान द्वारा अपनी खुशी प्रकट कर रहे हैं। शबर नायक के हर्ष की सीमा नहीं है। वह बार-बार उस शिशु के पास पहुंच जाता है और फूल जैसे उसके मृदु शरीर का स्पर्श कर तन्मय हो उठता है। शबरी की माता अपने पति के इस प्यार को देख मन ही मन प्रसन्न हो रही है।

आज ग्यारहवां दिन है। जन्म से ही उस शिशु के मुख-मंडल पर एक प्रकार का अपूर्व तेज दिखाई दे रहा है। शबर जाति के सभी लोग उस शिशु के सौन्दर्य पर मुग्ध हैं। सबको ऐसा मालूम होने लगा कि यह बच्ची भविष्य में जाकर अवश्य

कीर्तिशालिनी होगी और अपनी जाति का मस्तक ऊंचा करेगी। इसलिए सबने सोच-समझकर अपनी जाति के यश को चिरस्थायी रखने के विचार से उस शिशु का अपनी जाति का सूचक शब्द 'शबरी' नामकरण किया। नामकरण-संस्कार बड़े धूमधाम से मनाया गया। उस बच्ची के जन्मधारण के बाद शबर नायक में भी बहुत बड़ा परिवर्तन दिखाई देने लगा। उसमें अगाध वात्सल्य-भावना हिलोरें मारने लगी जो कि उसको एक अच्छे रास्ते पर लगाने में समर्थ हुई। उसमें दया, प्रेम, स्नेह, ममता इत्यादि गुण उगने लगे। वह अपनी प्रजा को अच्छे मार्ग पर चलाने का प्रयत्न करने लगा।

प्रतिदिन प्रातःकाल के होते ही शबरों की उस बस्ती के नौजवान और बूढ़े सभी नायक के घर के सामने इकट्ठे हो जाते हैं। वहां पर लूट-खसोट की योजना बनती है, उसके बाद सभी भाले, बर्छी, तीर-कमान और डंडे लेकर चल पड़ते हैं। कुछ दूर जाने पर लोग दलों में बंट जाते हैं और विभिन्न मार्गों में जाकर झाड़ों-झंखाड़ों में छिप जाते हैं। यदि उस रास्ते से सार्थ-वाह या अन्य व्यापारी-दल अथवा लोगों को जाते हुए देखते हैं तो झुरमुटों में से अचानक उनपर धावा बोल देते हैं। यदि उनमें से कोई विरोध करता है तो उसे सताया जाता है और बहुमूल्य चीज़ें लूट लेते हैं। ज़रूरत पड़ने पर ये लोग मरने और मारने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। अक्सर इन दलों को लूटने में खून-खराबा करना पड़ता है। कभी-कभी अनाथों को भी इनके अत्याचारों का शिकार होना पड़ता है। लूटते समय भले-बुरे की ज़रा भी सोच नहीं करते। दया नामक चीज़ उनके

हृदयों में है ही नहीं। उत्तम मानवीय गुणों से दूर हो ये लोग पशुतुल्य जीवन बिता रहे हैं। मांस और मदिरा का सेवन इनके दैनिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। शिकार खेलना और लूटना इनका प्रधान पेशा है।

सभ्य समाज से दूर जंगल के कोने में असभ्य जीवन बिताने वाले ये लोग अपनी बस्ती को ही एक छोटी-सी दुनिया मानकर जीवन-यापन कर रहे हैं। इनकी दृष्टि में नारी का कोई मूल्य या सम्मान नहीं है। केवल ये लोग अपने नायक की आज्ञा का पालन करना जानते हैं। इनकी संतान भी बचपन से शिकार खेलने का अभ्यास करती है। और उसमें कुशलता प्राप्त करती है। यही इनके जीवन का सबसे बड़ा सहारा है।

३

मानव-जीवन में सुख-दुःखों का चक्र दिन-रात की भांति बराबर घूमता रहता है। अधिक सुख से भी मनुष्य ऊब जाता है और असहनीय दुःख से भी। सुख-दुःखों के सुन्दर समन्वय में ही मानव-जीवन मधुरतम हो उठता है। मनुष्य अपने सुख का अनुभव आप ही करता है और दुःख को लोगों में बांटता फिरता है। इस दुर्बलता के कारण ही वह वास्तविक जीवन के मर्म को पहचान नहीं पाता।

शबरी के आगमन से नायक के घर और बस्ती में संतोष की लहरें हिलोरें मारने लगी थीं। सारी बस्ती में उत्सव मनाया

गया। अपनी आराध्य देवी कालीमाई की मूर्ति पर बलि चढ़ाई गई। और मांस-मदिरा का सेवन करके उस आनन्द में तन्मय हो नाच-गान किए। विनोद हुए। घर-घर में दीपों की आरती हुई। सबने अपने नायक की पुत्री के फलने-फूलने के मन ही मन आशीर्वाद दिए और ईश्वर से प्रार्थना भी की। मगर कौन जानता था कि इतने अल्प समय में ही उस बस्ती में आनन्द की जगह विपाद की छायाएं फैल जाएंगी और सबको दुःख-सागर में डुबकियां लगानी होंगी। विधाता की इस विडंबना से सारी बस्ती खिन्न हो उठी। सबके चेहरों पर प्रसन्नता के स्थान पर विपाद की मलिन रेखाएं खिच गई। सबके मन में वैराग्य-भाव पैदा होने लगा। जीवन की अस्थिरता और मृत्यु की भयंकरता का उन्हें बोध होने लगा।

अर्धरात्रि का समय था। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। घना अंधकार फैला हुआ था। वह नीरव निशीथ ऐसा भयंकर लगता था कि मानो कोई अनहोनी घटना घटित होने वाली है। हवा स्तब्ध थी। कहीं-कहीं आकाश में नक्षत्र टिमटिमा रहे थे। सारी बस्ती गाढ़ निद्रा में मग्न थी। लेकिन केवल दो आंखें जाग रही थीं। उन आंखों में विषाद और भय, आशा एवं निराशा के बीच संघर्ष की भावनाएं प्रत्यक्ष और लुप्त होती जा रही थीं। नायक अपनी पत्नी के सिरहाने बैठे अपने दिल की धड़कनें मानो गिन रहा था। पास में ही शिशु शबरी निश्चित सो रही थी। उसके कोमल होंठों पर कभी मंद मुस्कराहट फूट पड़ती और कभी चिल्लाहट। कभी वह चौंक पड़ती। नायक कभी निराशा भरी दृष्टि से अपनी औरत की ओर देखता और कभी

उस अबोध शिशु की ओर। कभी भविष्य की चिन्ता कर उसका हृदय व्याकुल हो उठता।

रात बीतती जा रही थी। हठात् नायक के रुदन की ध्वनि उस नीरव रात्रि में गूंज उठी। सारी बस्ती चौंक पड़ी और सब बेतहाशा दौड़ते आए और नायक की झोंपड़ी के सामने इकट्ठे हुए। नायक फफक-फफककर रो रहा था और उसके सामने उसकी पत्नी की लाश पड़ी हुई थी। इधर दस-बारह दिन से वह ज़च्चे के रोग से पीड़ित थी। दवा-दारू की गई। कल तो कुछ अच्छा मालूम हुआ; लेकिन आज फिर रोग का प्रकोप हुआ और मृत्यु के भयंकर हाथों ने उसका गला घोंट दिया। बस्ती के सभी लोग उस दृश्य को देख एकसाथ करुण-क्रंदन कर उठे।

शबरी मातृ-हीन हो गई।

४

रामायण-काल से ही शबरी नदी पवित्र मानी जा रही है। रामायण में भी इस नदी का आदर के साथ उल्लेख किया गया है। बहुत-से लोग इस पवित्र नदी में स्नान कर धन्य हो चुके हैं। इस नदी की महिमा से भक्त कवि आत्मविभोर हो उठे हैं। आज भी भक्तजन यत्र-तत्र इस नदी की महिमा का गुण-गान करते दिखाई देते हैं। इसकी कहानी इतनी ही पुरानी है जितनी कि रामायण।

विश्व की प्रत्येक वस्तु का अपना विशिष्ट इतिहास होता है। सृष्टि की हर वस्तु अपने स्थान पर अपनी विशिष्टता रखती है। उसकी महत्ता का मूल्यांकन लोग अपने-अपने दृष्टिकोण से करते हैं। वास्तव में वस्तु का बड़प्पन उसके गुण से और उसकी पवित्रता से प्रकट होता है। परिमाण अथवा स्थान विशेष को दृष्टि में रखकर उसका महत्त्व जाना नहीं जा सकता है।

भयंकर जंगल में जन्म लेकर पहाड़ों के बीच में बहने वाली शबरी नदी का लौकिक दृष्टि से कोई महत्त्व न हो और जनता को उससे विशेष लाभ न होता हो लेकिन अवतार-पुरुष के चरण-स्पर्श तथा संकल्पमात्र से वह अत्यंत पुनीत बन गई है। भक्तों के लिए तो वह पतित-पावनी गंगा समान है। अनेक ऋषि-मुनियों ने और पशु-पक्षियों ने भी उसमें स्नान कर अपूर्व आनंद प्राप्त कर लिया है। पापियों के पाषाण-हृदयों की मलिनता का प्रक्षालन कर वह पवित्र तीर्थ बन गई है।

इस नदी के जन्म के पहले उसी पवित्र स्थान पर शबर नायक ने अपनी एकमात्र पुत्री शबरी को पाल-पोसकर बड़ा किया था। शबरी शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गई। शबर नायक ने बचपन से ही शबरी को लाठी चलाना, घोड़े पर सवारी करना, तीर चलाना, कुश्ती लड़ना और लूटना इत्यादि एक नायक के लिए आवश्यक, सभी विद्याएं सिखाईं। शबरी देखने में सुन्दर थी और उसका स्वभाव भी तदनुकूल था। शबरी अपने पिता का सम्पूर्ण स्नेह पाकर सौभाग्यशालिनी पुत्री बनी। शबर नायक भी पुत्री के रूप-गुण, और उसको सभी

विद्याओं में निष्णात देख फूला न समाता था। शबर नायक को उससे बड़ी-बड़ी आशाएं थीं।

दिन, महीने बीतते गए। ऋतुओं का चक्र तेज़ी से घूमता गया। कई वर्ष बीत गए। अब शबरी षोडशवर्षीया युवती बन गई। शबर नायक वृद्ध हो चला था।

शबर नायक के सिर पर अब चिंता सवार हो गई थी। वह चाहता था कि उसके बाद उसकी पुत्री शबरी ही उसका स्थान ग्रहण करे। लेकिन क्या सारी शबर जाति इसे पसन्द करेगी? वह इस दुविधा में दुःखी हो उठता और फिर कभी सोचता कि शबरी सभी विद्याओं में प्रवीण है। वह अपनी शक्ति और प्रताप से अवश्य नायिका बन जाएगी। वह इस अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। उस शुभ दिन को देखने का कुतूहल उसके मन में बराबर उमड़ा करता था। कभी उसकी पत्नी की याद ताज़ा हो उठती तो उसका सारा मुख-मंडल उदास हो जाता। वह सोचता कि यदि वह ज़िन्दा रहती तो आज अपनी इस योग्य पुत्री को देख कितना प्रसन्न होती! उसके हृदय-गह्वर से दुःख का स्रोत उमड़ पड़ता और मन पर काबू न कर सकने के कारण वह ज़ोर से रो पड़ता। उसकी दीनता को देख करुणा को भी कभी करुणा आ जाती। अब वह सारे कार्यभार अपनी पुत्री को सौंपकर निश्चिंत होना चाहता है। लेकिन उसके मन में कभी शंका पैदा हो जाती है कि शबर जाति के लोग इसकी आज्ञा का कहां तक पालन करेंगे?

५

यह शबरों की बस्ती है। बस्ती के एक कोने में कालीमाई की एक ऊंची मूर्ति है। देखने में यह मूर्ति बहुत ही भयंकर मालूम हो रही है। इस मूर्ति के सामने इसके चरणों के पास शबर नायक बैठा हुआ है। इसकी बगल में शबरी बैठी हुई है। मूर्ति के सामने थोड़ी दूर शबर जाति के लोग अर्धचन्द्राकार में कतारों में खड़े हुए हैं। पहली कतार में बीस-पचीस साल का नौजवान राहू गंभीर मुख-मुद्रा में खड़े होकर सुन्दरी शबरी की ओर घूर रहा है। उसके अगल-बगल में विष्कंभ, चिक्कू, चाकू, भंगी और उसके अन्य अनुयायी दिखाई दे रहे हैं।

गिरिका भी पहली कतार में दिखाई दे रही है और वह राहू को अपनी ओर आकृष्ट करने की कोशिश कर रही है। शतभिष और रेवती दोनों शबरी के नज़दीक बैठे दिखाई दे रहे हैं। शबरों का वह बूढ़ा नायक एक बार चारों तरफ देखकर उन सबको वहां पर बुलाने का कारण समझा रहा है। उसने कहा, 'मेरे प्यारे भाइयो और बहनो! आप लोग जानते हैं कि मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं। आगे मैं इस नायक के पद को संभालने में असमर्थ हूं। मैंने जब से यह पद संभाला है, आप लोगों की भरसक सेवा करने की कोशिश की और उसमें मुझे आशातीत सफलता भी मिली। आप लोगों की मुहब्बत और सहयोग के कारण ही मैं अपने काम में सफल रहा। आप लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन कर मेरे प्रति जो आदर दिखाया है उसके लिए मैं आप सब लोगों को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

'आप लोग यह भी जानते हैं कि शबर जाति की परंपरा के अनुसार यदि उसका नायक बूढ़ा हो जाता है, या मर जाता है, अथवा किन्हीं कारणों से जनता का विश्वास खोकर उस पद से हटा दिया जाता है तो उस नायक की पहली संतान, चाहे वह पुत्र हो या पुत्री, नायक का पद स्वीकार करती है। मेरी एकमात्र संतान शबरी ही है। शबरी को मैंने एक नायक के लिए आवश्यक सभी विद्याएं सिखाकर उसे इस योग्य वना दिया है कि वह आप सबकी सहानुभूति प्राप्त कर शासन कर सके।

'मैं विश्वास करता हूं कि शबरी इस नायक-पद के लिए सब तरह से समर्थ है और वह आप लोगों को अच्छे रास्ते पर चलाकर आप लोगों के प्रति प्रेम का पात्र बन जाएगी। मुझे पूर्ण आशा है कि आप लोग अपने नायक के विचारों से सहमत होंगे, और शबरी को अपना नायक मानने में किसीको कोई ऐतराज़ न होगा।

'मेरे शासन-काल में आप सबने मेरी सभी आज्ञाओं का अच्छी तरह पालन किया और मुझे कभी दुःख नहीं पहुंचाया। इसका मैं आजीवन आप सबका आभार मानूंगा। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप लोग इसी प्रकार शबरी के प्रति भी आदर दिखाते रहेंगे। मेरा विश्वास है कि आप सब लोग मेरे इस निर्णय से सहमत हैं।'

उपस्थित लोगों में से बहुतों ने शबर नायक के निर्णय का समर्थन किया। लेकिन राहू और उसके अनुयायियों ने उस निर्णय का घोर विरोध किया।

राहू ने आगे बढ़कर कहा, 'हम किसी हालत में भी एक औरत को नायक का पद देने के लिए तैयार नहीं हैं।'

शबर नायक ने शांत स्वर में समझाने की कोशिश करते हुए कहा :

'राहू, आवेश में मत आओ। यह हमारी जाति की रीति है कि नायक के कार्यभार से निवृत्त होने के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र या पुत्री ही उस पद को ग्रहण कर सकती है। इस नियम का उल्लंघन करना उचित नहीं। शांतचित्त होकर सोचो।'

राहू ने हंसकर कहा, 'एक औरत हमपर हुकूमत करेगी? यह कभी नहीं हो सकता! यह तो हमारे लिए लज्जा की बात है। शबरी एक औरत है, अबला है। उसके सामने हम जैसे वीर और मर्द सिर झुकाएं?'

शबरी यह सुनकर फुर्ती से तीर की भांति उठ खड़ी हुई। उसका चेहरा तमतमा उठा। वह गरज उठी, और चुनौती दी, 'अगर तुम मर्द हो तो मुझसे लड़ो और अपनी ताकत का परिचय दो।'

राहू ने कहा, 'मुझे मंजूर है। मैं अभी साबित कर सकता हूं।'

शबरी ने झुककर अपने पिता के चरणों को चूम लिया और भाला लेकर राहू से लड़ने के लिए आगे बढ़ी। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। भाला, तलवार और धनुष-युद्ध बहुत देर तक होता रहा और दोनों एक-दूसरे के प्रहार से थककर चूर-चूर हो गए। समान योद्धाओं की वह भयंकर लड़ाई थी। दोनों में पल-पल पौरुष बढ़ता गया। रौद्र रूप धारण कर एक-दूसरे पर टूट पड़े।

ऐसा मालूम पड़ता था मानो वे दोनों मृत्यु से जूझ रहे हों !

अन्त में शबरी की तलवार का वार खाकर राहू की तलवार टुकड़े-टुकड़े हो गई और राहू धम्म से ज़मीन पर चित्त गिर पड़ा। शबरी उछलकर राहू के पास पहुंची और उसके कंठ पर तलवार की नोक रखते हुए कहा, 'अब तुम्हारे प्राण मेरे हाथों हैं लेकिन तुम निस्सहाय हो और निस्सहायों पर हथियार चलाना वीरों का लक्षण नहीं है। युद्ध-विद्या के सिद्धांतों का उल्लंघन करना मैं नहीं चाहती। अतः मैं तुम्हें क्षमा कर देती हूं।'

राहू एक औरत से हार खाकर बहुत लज्जित हो उठा और वहां से चला गया।

शबरी ने लोगों की तरफ मुड़कर कहा, 'आप लोग जिस व्यक्ति को अपने उपयुक्त नायक समझते हों उसीको चुन सकते हैं। नायक के चुनाव में किसी भी प्रकार की ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए। लेकिन मैं यही सलाह दूंगी कि जो व्यक्ति आप लोगों की रक्षा कर सकता हो और आपको अपनी संतान की तरह देखने वाला हो उसीको सोच-समझकर चुनना चाहिए ताकि बाद को पछताने की नौबत न आए।'

शबरी की बातें और उसके ऊंचे विचारों से प्रसन्न होकर भीड़ में से बहुत-से लोगों ने उसका जय-जयकार किया। कुछ लोगों ने आगे बढ़कर कहा, 'शबरी ही हमारी नायक होगी, शबरी ही हमारी नायक होगी।'

राहू के अनुयायियों को यह जले पर नमक की तरह साबित हुआ और वे उस सभा-स्थान को छोड़कर चले गए। बाकी लोगों में से कुछ लोगों ने शबरी की प्रशंसा करते हुए भाषण

दिए और शबरी को अपना बहुमत से नायक घोषित किया।

नायक के चुनाव के पश्चात् अपनी रीति के अनुसार शबर जाति के लोगों ने आनन्दोत्सव मनाया। नाच-गान हुए।

शबर जाति के स्त्री-पुरुष, बालक-वृद्ध सबने इस उत्सव में बड़े आनन्द के साथ भाग लिया। शतभिष अपनी औरत रेवती के साथ तन्मय हो नृत्य करने लगा। उसके विचित्र हाव-भाव और नाज़-नखरों को देखकर लोग इतने हंसते रहे कि उनके पेट में बल पड़ने लगे। शबरी अपने पिता के साथ कालीमाई के नज़दीक बैठे उत्सव का आनन्द लूटने लगी।

जब नाच-गाना पराकाष्ठा पर पहुंचा उस वक्त हठात् कहीं से एक भयंकर विषाण की ध्वनि सुनाई दी और नाच-गान बंद हो गया तथा लोग मूर्तिवत् जहां के तहां अवाक् खड़े रह गए। चारों तरफ निस्तब्धता छा गई। विषाण की ध्वनि बराबर आती रही और लोग चिल्लाते, तालियां पीटते उस दिशा की ओर भाग निकले जिस ओर से ध्वनि आ रही थी।

६

शबरों का दल एक जंगल के वृक्षों पर बैठे विषाण बजाते कोलाहल कर रहा है। थोड़ी दूर पर सार्थवाहों का एक दल जंगल से होते हुए जाते दिखाई दे रहा है। शबर लोग पेड़ों से उतरकर एक जगह पर चुपचाप इकट्ठे हो रहे हैं। नायक उस लुटेरों के दल को इशारे से आदेश देता है कि वे सब विभिन्न

रास्तों में जाकर झाड़ियों में छिप जावें।

सार्थवाहों का दल अपने माल के साथ आगे बढ़ता जा रहा है। शबर जाति के लोग, जो कि पेड़ों की शाखाओं पर तथा आस-पास के झुरमुटों में छिपे बैठे थे, सब उस सार्थवाही दल को चारों तरफ घेर लेते हैं। सार्थवाही दल के साथ जो सशस्त्र सेना थी वह उस लुटेरों के दल से भिड़ जाती है। लेकिन लुटेरों के अत्याचार और अचानक हमले से घबराकर वह तितर-बितर होकर अपना रास्ता नापने लगती है, फिर भी लुटेरों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। व्यापारी दल को आत्मसमर्पण के बाद भी सताते देख शबरी ने लुटेरों को रोका और कहा, 'ओह ! क्या तुम लोग मरे हुए सांप को भी मारना चाहते हो?'

लुटेरों ने अपनी भूल को जान लिया और वापस आ गए। सबने सार्थवाही दल का माल-असबाब लूटना प्रारम्भ किया। व्यापारी दल के कुछ लोगों ने अपने पास जो अमूल्य वस्तुएं थीं उन्हें देने से इनकार किया। इसपर क्रुद्ध हो लुटेरा दल उनके साथ अमानुषिक व्यवहार करने लगा। शबरी ने उस अत्याचार को देख लुटेरा दल को सचेत किया कि वह खून-खराबे को हरगिज़ सहन नहीं कर सकती है। शबरों ने सार्थवाहों का माल छीन लिया। वे उनकी जांच करने लगे कि कहीं इन लोगों ने अमूल्य वस्तुएं छिपा तो नहीं रखीं। शतभिष ने सोचा कि व्यापारी ने अपनी कमर में और पेट पर कीमती सोने की वस्तुएं तथा हीरे-जवाहरात बांध लिए हैं। आखिर जब उसने उस व्यापारी की जांच की तो पता चला कि उसने बहुत-सी अमूल्य चीज़ें पेट पर बांधी नहीं थीं बल्कि उसकी तोंद ही कुछ विचित्र प्रकार से बनी

हुई थी । सब लोग यह देख हंस पड़े । लुटेरे दल ने शांति के साथ सार्थवाही दल का सारा माल छीन लिया और उन्हें जान-बख्श दी । व्यापारी दल बहुत दु:खी हो वहां से चला गया ।

लुटेरों ने सारा माल लाकर शबरी के सामने ढेर लगा दिया । शतभिष ने उस ढेर में से मचलने वाले बच्चे की तरह झट एक विचित्र खिलौना उठा लिया और उसे अपने लिए रखना चाहा । शबरी ने उसके उस व्यवहार को देखा । उस खिलौने को लेने के बाद उसपर जो प्रतिक्रिया हुई शबरी ने उसका अनुमान किया और उसने जान लिया कि शतभिष ने अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए ही उस खिलौने को अपने पास रखना चाहा । लूटे हुए माल को शबरी ने सबमें समान रूप से बांट दिया और शतभिष को अपने पास बुलाकर वही विचित्र खिलौना दिया जिसे उसने झट उठा लिया था । शबरी की इस आश्चर्यजनक प्रथम सफलता पर प्रसन्न होकर सब उसकी प्रशंसा करते हुए वहां से चले गए थे ।

७

शबरी को नायक के पद पर देख रेवती मन ही मन जलने लगी । क्योंकि वह, उस पद पर अपने पति को विराजमान देखना चाहती थी । किन्तु अपने पति की असमर्थता पर उसे दु:ख हो रहा था । शतभिष उसे अनेक प्रकार से समझाने की कोशिश करता है कि शबरी और कोई नहीं है, वह हमारी निकट

सम्बन्धी है। इसपर हमें प्रसन्न होना चाहिए कि हमारे परिवार के ही लोगों में से एक को नायक का पद प्राप्त हो चुका है। यह हमारे लिए गौरव और गर्व की भी बात है। रेवती बड़ी स्वार्थिन है। वह अपने पति को ही उस पद पर देखना चाहती है। अपने असमर्थ पति पर व्यंग्य-बाण छोड़ती है। अपने पति से कहती है, 'शबरी को पद मिलने से क्या हुआ ? वह तो औरत है। तुम तो मर्द हो। तुम्हारी मर्दानगी कहां गई ? अब उसके सामने जाकर हाथ जोड़ो। उसके पैर पकड़ो। उसका हुक्म मानो। ऐसे मर्द से मैं बाज़ आई। तुम औरत होते तो अच्छा होता।' यह कहकर वह ठठाकर हंसने लगी। इतने में वृद्ध नायक का बुलावा पाकर वे दोनों उसके पास पहुंचे। बूढ़े नायक ने दोनों से शबरी के बारे में पूछा। रेवती ने शबरी को अयोग्य, असमर्थ एवं अबला बताया तो शतभिष ने शबरी को योग्य, समर्थ एवं सबला बताया। इन लोगों में वार्तालाप हो ही रहा था कि वहां पर शबरी आ पहुंची और अपने पिता के सामने खड़ी हो गई।

अपनी बेटी को सामने राजसी ठाठ में खड़ी देख वह फूले अंग न समाया।

८

सूर्य की अरुण किरणें पृथ्वी का चुम्बन कर रही हैं। कल-कल ध्वनि करते झरने उछल रहे हैं। पक्षी कलरव करते अपने

नीड़ों से झांक रहे हैं। जंगल के सभी जानवर शिकार की खोज में निकल रहे हैं। वृक्षों से उतरकर मयूर अपने पंख उठाए नृत्य कर रहे हैं। मंद पवन के झोंके खाकर हरी दूब अपनी नोकों से पृथ्वी माता को ऐसा चूम रही है मानो गुदगुदी पैदा कर रही हो। उस सुहावनी प्रकृति में शबरी प्रसन्नता के साथ गीत गाते उछलती-कूदती चली जा रही है। हठात् उसके कान में एक गाय के भय-कंपित स्वर में ज़ोर से रंभाने की ध्वनि सुनाई पड़ी। वह ठिठक गई। फिर जिस ओर से वह ध्वनि आ रही थी उसी तरफ उसके पैर आगे बढ़े। कुछ समय के बाद उसने अपने को एक झाड़ी के सामने पाया जहां कि एक शेर गाय पर हमला कर रहा था। शेर के पंजों से बचने के लिए गाय छटपटा रही थी, कभी गाय अपने सींगों को आगे कर शेर को खदेड़ने की कोशिश कर रही थी। परन्तु शेर के ज़बरदस्त हमले और उन पंजों की चोट से घायल हो निस्सहाय अवस्था में मानो वह सहायता के लिए प्रार्थना करती-सी प्रतीत हो रही थी। उसी समय एक मानवी को अपने सामने पाकर उसने करुणा भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखा।

शबरी को उसपर दया आ गई। वह अपने प्राणों का भी मोह छोड़ शेर से जूझ पड़ी। शेर ने अपने आहार को छीनने वाली अपनी शत्रु पर क्रुद्ध हो ऐसा पंजा मारा कि वह उसके पंजे की लपेट में आ गई। चोट खाकर शबरी मानवी से दानवी बन गई। उसकी लाल-लाल आंखें क्रोध के मारे अग्निवर्षा करने लगीं। संभलकर उसने अपनी कमर से कटार निकाली और शेर की छाती में ज़ोर से ऐसे भोंक दी कि शेर धक्का

खाकर उस चोट से छटपटाया और उसकी आंखों में अन्धेरा छा जाने के कारण वह पीछे की ओर लुढ़क पड़ा। शबरी को अपनी इस विजय पर बड़ा गर्व हुआ। उसने गौ माता की ओर बड़े प्रेम से देखा और उसके निकट पहुंचकर उसकी पीठ पर सहलाने लगी। गाय ने शबरी की ओर कृतज्ञता भरी दृष्टि दौड़ाई। इन आंखों में अपने रक्षक के प्रति कृतज्ञता से भरा सागर उमड़ उठा। शबरी ने तुरन्त उस जंगल में से कुछ जड़ी-बूटी लाकर गौ माता के घावों पर लेपन किया, उसे एक वृक्ष की छाया में पहुंचाकर अपने मार्ग पर आगे बढ़ी।

९

प्रातःकाल का समय है। मातंग मुनि और उनके शिष्य, कर्ता, कर्म और क्रिया स्नानादि काल-कृत्य समाप्त करके आश्रम की ओर जा रहे हैं। शबरी ने उस रास्ते से जाते हुए उन लोगों को देखा। हथिनी शांति ने शबरी को देखकर भी ऐसा व्यवहार किया मानो उसे देखा ही न हो। परन्तु उस ऋषि को देखते ही उसने बड़े अदब से अभिवादन किया। शबरी को शांति पर क्रोध आया और उसके व्यवहार से कुतूहल भी पैदा हुआ। वह आगे बढ़ी और मातंग मुनि जिस पथ से जा रहे थे उस पथ को रोके खड़ी हो गई। उसने मुनि को चिढ़ाने की कोशिश की। महर्षि ने शबरी की ओर ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते पर चलने लगे। इससे शबरी का अहं आक्रोश

कर उठा। उसने अपने बाणों से मातंग मुनि के रास्ते में एक दीवार-सी खड़ी कर दी तथा उनको आगे बढ़ने से रोक दिया। किन्तु आश्चर्य ! योगीन्द्र अपनी तपोबल से उस बाणों की दीवार को पारकर आगे बढ़े। शबरी आश्चर्य-चकित हो निर्निमेष इस विचित्र योगी को देखती ही रह गई।

मातंग महर्षि आश्रम पहुंचकर अपने पूजागृह में चले गए। शिष्यों को अब छुट्टी मिल गई। तीनों पास के एक कुटीर में चले गए और रास्ते पर जो घटना घटी थी उसपर वहस करने लगे। कर्ता ने चर्चा शुरू की।

'देखो भाई ! यह अपूर्व युवती कौन हो सकती है, बता सकते हो ?'

कर्म—यह भी नहीं जानते हो ? अरे वह तो एक सुन्दरी है।

क्रिया—अबे ! यह तो हम भी जानते हैं। लेकिन वह है कौन ? आई कहां से ?

कर्म—वह तो इन्द्रलोक की अप्सरा है !

क्रिया—क्या कहा ? इन्द्रलोक की अप्सरा ! तो फिर इस भूलोक में क्यों आई है ?

कर्म—बुद्धू कहीं का ! यह भी नहीं जानते कि औरत पुरुष के पास क्यों आती है ?

कर्ता—अबे ! यहां पर ऐसा रूपवान् कौन है जिसपर वह मुग्ध हो इन्द्रलोक से यहां आई हो ?

कर्म—कई कारण हो सकते हैं। तुम तो बच्चे हो, अभी ये बड़ी-बड़ी बातें नहीं समझ सकोगे।

क्रिया—अगर तुम समझते हो तो हमें क्यों नहीं समझाते ?

कर्मा—हो सकता है, हमारे गुरुदेव का तपोभंग करने के लिए आई हो।

क्रिया—इससे उसे क्या फायदा होगा ?

कर्ता—अब मैं समझ गया। एक बार हमने गुरुदेव के मुंह से सुना था, एक अप्सरा ने विश्वामित्र का तपोभंग किया था।

क्रिया—गुरुदेव ने इसका कारण भी बताया था क्या ?

कर्ता—अरे तुम भी तो थे। क्या तुम्हारी बुद्धि कहीं घास चरने गई थी ?

क्रिया—भाई ! मेरी बुद्धि घास चरने तो नहीं गई थी लेकिन दिक्कत यह है कि मैं अपने इस छोटे-से दिमाग में इन बड़ी-बड़ी बातों को बिठा नहीं पाता हूं।

कर्मा—गुरुदेव ने उसका कारण यह बताया था कि विश्वामित्र अपने तपोबल से इन्द्रासन पर अधिकार जमाने वाले थे। इसलिए देवेन्द्र ने भयभीत हो, पद के लोभ में पड़कर मेनका को उसके पास भेजा था।

क्रिया—तो गुरुदेव तप कहां कर रहे थे ? तड़ाग में स्नान कर लौट रहे थे। उस समय तपोभंग का प्रश्न ही नहीं उठता।

कर्मा—तपोभंग के माने केवल तपस्या में विघ्न डालना ही नहीं अपितु मन की चंचलता को जागरित कर कर्तव्य-पथ से विमुख करना भी तो तपोभंग कहलाता है।

क्रिया—तब तो उसने बाणों से रास्ता क्यों रोका ? रोक दिया तो गुरुदेव कैसे आगे बढ़े ?

कर्ता—गुरुदेव ने इतने दिनों तक तपस्या कर जो तपः-

शक्ति प्राप्त की है क्या वह व्यर्थ जाएगी ?

कर्मा—वे वास्तव में बाण भी तो हों !

क्रिया—अबे बाण नहीं तो फिर हैं क्या ?

कर्मा—वे तो मन्मथ के बाण हैं।

क्रिया—मन्मथ के बाणों का प्रयोग···

गुरुदेव की पुकार सुनकर तीनों शिष्य चौंक पड़े और बेतहाशा दौड़ते हुए गुरुदेव के पास पहुंचे।

१०

एक युवक बड़ी तेज़ी के साथ जंगल से होकर बड़े-बड़े कदम बढ़ाते चला जा रहा है। उसके हाथ में अपनी रोगग्रस्त माता के लिए दवा की शीशी है। विष्कंभ, चिक्कू और उसके साथी उस युवक का सामना करते हैं। इन लोगों को देखते ही उस युवक के होश-हवास उड़ गए। दल में से कुछ मूर्ख लोगों ने उस नौजवान के हाथ से शीशी खींच ली। और उसे तोड़ डाला। ठीक इसी समय शबरी घटनास्थल पर पहुंच जाती है। विष्कंभ और उसके अनुयायी भाग खड़े होते हैं।

शबरी उस युवक से उसकी वृद्ध माता की बीमारी की हालत सुनकर बहुत दुःखी होती है और उसे अपने घोड़े पर बिठाकर उसके गांव पहुंचाती है। उस युवक के मकान के पास पहुंचकर दोनों ने घोड़े पर से उतरकर कुटी के भीतर प्रवेश किया। उस घर के एक कोने में टूटी शय्या पर एक अन्धी वृद्धा

पड़ी कराह रही थी। वह जीवित कंकाल थी। आहट पाकर बोली, 'बेटा, आ गए ? बड़ी देर लगाई। बात क्या है ?'

युवक ने सारी कहानी सुनाई। बूढ़ी औरत ने आदरपूर्वक शबरी का स्वागत किया और अपने बेटे को बचाने के उपलक्ष्य में उसे धन्यवाद दिया; लेकिन जब उसको मालूम हुआ कि अपने बेटे को बचाने वाली औरत शबरी है तो वह कांप उठी। उसने कहा, 'ओह ! तुम ही वह शबरी हो जिसके बारे में यहां के लोग कहा करते हैं कि वह डकैती करती है, खून-खराबा करती है और अत्याचार करती है ? तुम डाइन हो न ? मेहरबानी करके गांव वालों को पता लगने से पहले ही चली जाओ यहां से। ये लोग तुम्हें जान से मार डालेंगे। यह मेरा कर्तव्य है कि मैं तुम्हें बचाऊं। क्योंकि तुमने मेरे बेटे को बचाया है। यहां से जल्दी· · ·'

शबरी स्तब्ध रह गई। उसके मुंह से बोल फूटते न थे। वृद्धा ने आवेश में आकर कहना शुरू किया--

'मेहरबानी करके चली जाओ यहां से। जाओ यहां से।'

शबरी आह भरकर वहां से जाने को घूम पड़ी। इतने में वृद्धा की आवाज़ सुन पड़ी, 'तुम मानवी नहीं हो, दानवी हो, जल्दी चली जाओ यहां से। वरना जान की खैर नहीं।'

शबरी का चित्त विकल हो उठा। उसके मन में तरह-तरह की बातें उठने लगीं। वह सोचने लगी—मैं शक्ति भर लोगों का उपकार करना चाहती हूं, करती भी हूं। लेकिन लोग इसपर विश्वास ही नहीं करते। आखिर विश्वास करेंगे भी कैसे ? जब तक हम लोग अपने पुरखों के पेशे को अपनाये रखते हैं,

तब तक लोग यही सोचते रहेंग। क्या इस पेशे के अतिरिक्त ऐसा कोई उपाय नहीं कि अहिंसा-मार्ग पर चलते जीवन-यापन कर सकें?—शबरी का मन उद्विग्न था। उसे कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। इसी समस्या का समाधान ढूंढते चली जा रही थी अपनी बस्ती की दिशा में।

११

राहू बचपन से ही शबरी की ओर आकृष्ट था और वह उससे शादी करना चाहता था। उसका विचार था कि शबरी नायक की एकमात्र पुत्री है और सुन्दरी भी। उसके साथ विवाह करने से वह शबर नायक बन सकता है और सारी शबर जाति उसकी इशारे पर चल सकती है। वह अपनी इस महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करने की बाट जोह रहा था। लेकिन शबरी के बड़े होने के बाद परिस्थिति उसके मनोरथ के अनुकूल नहीं बनी, बल्कि उसके प्रतिकूल बन गई। वह जानता था कि शबरी उसे नहीं चाहती और उन दोनों के बीच प्रेम-विवाह कभी हो ही नहीं सकता। लेकिन शबरी अपने पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकती। इसलिए उसके पिता को प्रसन्न करने के लिए राहू ने साम, दाम आदि उपायों को अमल करना चाहा। इस प्रयत्न में उसने रेवती को अपना साधन बनाया। रेवती और राहू परस्पर मिले हुए थे। शबरी से रेवती को ईर्ष्या थी। इसलिए वह समय पाकर जब-तब शबर नायक के सामने शबरी के विवाह

का प्रसंग लाती और उसको मनाने की कोशिश करती। किन्तु शवर नायक अपनी पुत्री के हृदय को भली भांति जानता था। वह शबरी की इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना नहीं चाहता था। ऐसी स्थिति में राहू ने रेवती को यह लालच दिखाया कि यदि वह वृद्ध नायक को मना देगी तो उसके उपलक्ष्य में रेवती के पति शतभिष को सेनापति का पद दिया जाएगा। इसलिए रेवती अपनी सारी शक्ति और युक्ति लगाकर शबरी का विवाह राहू से सम्पन्न कराने की बड़ी कोशिश करने लगी। इस प्रयत्न में उसे अनेकों बार हार माननी पड़ी; फिर भी वह हताश नहीं हुई बल्कि अपने प्रयत्न को चालू रखा।

शबरी बस्ती की झोंपड़ियों में बसने वाले लोगों के सुख-दुःख का पता लगा रही है। सब बच्चे उसका प्रसन्नता के साथ स्वागत कर रहे हैं। शबरी उन लोगों को अपने साथ ले प्रत्येक घर में जाती है और वहां की महिलाओं की, बच्चों की और बूढ़ों की कुशलता जान लेती है और उन्हें समझा देती है कि उन्हें क्या करना चाहिए और कैसे रहना चाहिए। कहीं सुन्दर बच्चे दिखाई देते हैं तो उन्हें अपने हाथों में लेकर चूमती है और खिलाती भी है। बच्चों को फिर एक जगह पर एकत्रित करके उनको सुन्दर गीत सुनाती है और उपदेश देती है। वह सोचती है—आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। बचपन में उन्हें जैसी शिक्षा दी जाती है उसीके अनुसार वे अच्छे या बुरे नागरिक बन जाते हैं। यही कारण है कि अनेक कार्यों के होते हुए भी बच्चों

की हित-चिंता वह भूलती नहीं। यही नहीं, वह युवकों, युवतियों और बूढ़ों के पास पहुंच जाती है और उनके कार्यों में हाथ बंटाती है। उन्हें प्रोत्साहन देती है। बच्चों में वह बच्ची बन जाती है तो बड़ों में बड़ी। जिसके पास झोंपड़ी नहीं है उसके लिए झोंपड़ी का प्रबन्ध करती है। धान कूटने वाली औरतों को देखती है तो वह भी उसमें शामिल हो जाती है। पानी ढोने वाली स्त्रियों को देखती है तो दो-चार घड़े पानी लाकर उन लोगों के काम को हलका करती है। कहीं बस्ती में कोई बीमार पड़ा हो तो पता लगते ही तुरन्त उस झोंपड़ी के पास पहुंच जाती है, उसकी सेवा-शुश्रूषा करती है और चिकित्सा का प्रबन्ध भी। कहीं पारस्परिक झगड़ा होता हो तो उस झगड़े का फैसला करती है और दोनों पक्ष वालों को समझाती है। इस तरह वह सभी वर्गों और श्रेणियों के लोगों की मदद करने में तथा उनकी भलाई करने में ही अपना सारा समय व्यतीत करती है।

शबरी नायक के पद को फूलों की शय्या नहीं बल्कि कांटों का मुकुट मानती है। नायक का कर्तव्य प्रजा की सेवा करना, उसके सुख-दुःखों का ख्याल रखना और उसकी रक्षा करना मानती है। केवल मानना ही नहीं बल्कि इस ज़िम्मेदारी का अक्षरशः हमेशा पालन भी करती है। कथनी की अपेक्षा करनी पर वह अधिक ज़ोर देती है। उसका विश्वास है, जैसे घर का मालिक अपने पूरे परिवार के सुख-दुःखों का ख्याल रखता है और उसकी भलाई के लिए सभी परिस्थितियों का सामना करने के लिए सदा तैयार रहता है, वैसे ही नायक को अपनी प्रजा का ख्याल रखना चाहिए। जिस नायक के हृदय में प्रजा

के प्रति प्रेम, सहानुभूति और दया नहीं है उसे कदापि नायक नहीं बनना चाहिए। इसलिए शबरी अपने सुख का भी ख्याल नहीं करती, दूसरों की सेवा में ही वह अपने को सुखी मानती है। वह यह भी मानती है कि मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।

१२

वृद्ध शबर नायक अपनी झोंपड़ी में खिन्न बैठा हुआ है। पहले उसके सिर पर एक ही चिन्ता सवार थी। लेकिन अब दूसरी चिंता उसे सताए जा रही है। उसे भय होने लगा है कि अब वह ज्यादा दिन जीने वाला नहीं है। वह कल्पना करता है कि अब मृत्यु की छाया उसके इर्द-गिर्द मंडरा रही है। कौन पिता ऐसा है जो कि अपनी मृत्यु के पहले अपनी पुत्री की शादी देखना न चाहता हो ? अब शबरी भी विवाह योग्य हो गई है। इस अवस्था में शादी करना हरएक व्यक्ति का कर्तव्य भी है। लेकिन उसे क्या पता था कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा हुआ है ? होनहार होकर ही रहेगा। उसने कई बार अपनी पुत्री के सामने विवाह का प्रसंग छेड़ा भी है। लेकिन वह हंसकर टाल देती थी या अनसुनी कर देती थी। शबर नायक कभी ममता के कारण अपनी पुत्री पर ज़ोर नहीं देता था। वह इसी दुविधा में बैठा ही था कि रेवती ने भीतर प्रवेश किया।

रेवती पहले से ही षड्यंत्र कर रही थी कि शबरी का विवाह राहू के साथ हो और अपने स्वार्थ की सिद्धि भी हो। राहू ने

रेवती को इस कार्य में नियुक्त तो किया था लेकिन उसे उसपर विश्वास नहीं था। इसलिए वह उस प्रसंग को सुनने के लिए रेवती के पीछे छिपे-छिपे पहुंचा और वह झोंपड़ी के बाहर ही एक पेड़ की छाया में बैठ गया। रेवती ने इधर-उधर की बातों के समाप्त होने पर अपना पांसा फेंका।

रेवती ने नायक के मर्म पर चालाकी के साथ प्रहार किया—'शबरी के अब तक अविवाहित रहने से बस्ती के लोग तरह-तरह की बातें करते हैं। इन बातों को सुनते-सुनते हमारे कान पक गए हैं। यह आपकी प्रतिष्ठा पर धब्बा लगने की बात है। अब तक किसीने आपके परिवार के प्रति उंगली नहीं उठाई। ऐसे दुर्दिन भी हमें देखने पड़े हैं, शबरी के कारण। अगर आप बुरा न मानें तो मैं एक बात आपके सामने रखना चाहती हूं। हमारी बस्ती में राहू सब तरह से शबरी के योग्य पति है। वीर है, पराक्रमी है। यदि उसके साथ शबरी का विवाह करेंगे तो इस बस्ती में फिर शबरी का विरोध करने वाला कोई रह भी नहीं जाएगा। हमारी बस्ती का भाग्य भी चमकेगा। राहू भी शबरी को हृदय से चाहता है। उसके लिए वह बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार है। शबरी को अपनी पत्नी के रूप में पाकर वह बहुत प्रसन्न होगा और फूलों से उसकी पूजा करेगा। वरना शबरी का जीवन चौपट हो जाएगा।'

शबर नायक ने रेवती की बातें सुनकर गहरी सांस ली और कहा, 'बेटी ! मैं भी तो चाहता हूं कि शबरी का विवाह हो जाए, लेकिन तुम्हीं बताओ, मैं उसकी इच्छा के विरुद्ध शादी कैसे कर सकूंगा ?'

रेवती ने बात काटते हुए कहा, 'हूं, इच्छा ! औरत में अक़्ल ही कहां होती है ? औरतें दूर की बात सोचती नहीं। औरत को आज़ादी दी जाती है तो सिर पर चढ़कर बोलने लगती है। आप तो इस बुढ़ापे में अपनी बेटी के प्रेम में पागल हैं। उसे भला-बुरा भी नहीं कहते। लेकिन लोग क्या सोचते हैं आपको क्या मालूम ? उन बातों को सुनते-सुनते मेरा कलेजा फटा जा रहा है। क्या कहूं दादा, मेरी इच्छा होती है कि कान में तेल डालूं, नहीं तो किसी कुएं में कूदकर जान दे दूं।' वह सिसक-सिसक रोने लगी।

नायक का हृदय भर आया। एक तरफ लोक-लाज और दूसरी तरफ बेटी का प्रेम ! उसके हृदय में विचारों की आंधी उठ खड़ी हुई और व्याकुल हृदय से उसने कहा, 'बेटी, रोओ मत। शबरी को आने दो। मैं समझाने की कोशिश करूंगा।' इतने में द्वार पर अचानक आहट हुई। शबरी ने अन्दर प्रवेश किया। उसने अन्दर प्रवेश करने के पहले ही रेवती की बातें सुन ली थीं। इसलिए उसे गुस्सा आया। उसने उस प्रस्ताव का घोर विरोध करते हुए कहा, 'तुम दूसरों की बातों में दखल मत दो। अपना काम देख लो। कम्बख्त कहीं की, जाओ यहां से !' शबरी गरज उठी।

रेवती ने सोचा तक नहीं था कि अचानक शबरी आ धमकेगी और उसे फटकार बताएगी। अब उसका पक्ष कमज़ोर था। वह अनधिकार-चेष्टा कर रही थी। फिर भी स्वार्थ-सिद्धि एवं

मिथ्याभिमान उसे जकड़े हुए थे। वृद्ध नायक की ओर मुखातिब हो बोली :

'क्यों दादा, यह हमारे खानदान और जाति की समस्या नहीं है ? तुम्हारे ज़माने में कोई उंगली उठा सकता था ?'

शबरी ने उसका प्रतिवाद करते हुए कहा, 'उंगली उठाने वाले हमेशा होते हैं और होंगे भी। औरत चाहे योग्य भी क्यों न हो, मर्द उसके काम से भले ही खुश हो जाए, लेकिन औरत कहां सहन कर सकती है ? तुम जाति की बात कहती हो, हमारी जाति के लोग पहले लुक-छिपकर काना-फूसी करते थे और आज भी कर रहे हैं। इसे कौन रोक सकता है ?'

रेवती नरम होकर बोली, 'सो तो ठीक है। मगर औरत की शादी होने पर लोग उसपर उंगली नहीं उठाते। वरना क्या-क्या बकते हैं, तुम क्या जानती हो ? तुम्हारे सामने लोग थोड़े ही कहेंगे ! तुम तो कोई परायी नहीं हो, हम चाहते हैं कि तुम भी शादी-ब्याह करके सुखी रहो।'

'शादी-ब्याह पर मुझे विश्वास नहीं है। गृहस्थ होने पर मनुष्य अपने परिवार मात्र से बंधा रहता है। वह दूसरों की सेवा नहीं कर पाता।'

'जो अपने परिवार का भार उठाने में डरते हैं वे सारी जाति का बोझ कैसे उठा सकते हैं।'

'यह तुम क्या जानोगी ? जाति के हित की बात सोचने वाली होती तो तुम कभी इस तरह कहने का साहस न करती ?'

रेवती निरुत्तर हो वृद्ध नायक के समर्थन की आशा से उससे विनम्र शब्दों में बोली, 'दादा, अब आप ही समझाइए।

हम तो तंग आ गईं। शबरी के मन में कोई बैठा है। इसलिए वह राहू का नाम सुनते ही जल-भुनकर रह जाती है। उससे शादी न करोगे तो बाद को पछताओगे।'

रेवती का अन्तिम वाक्य सुनकर शबरी के क्रोध का पारा चढ़ गया। नागिन की भांति फुफकारती हुई बोली, 'डायिन कहीं की ! तू मेरे पिता के दिल में ज़हर घोल रही है ! फिर कभी इस तरह की चर्चा चलाएगी तो तेरी जीभ पकड़कर निकाल दूंगी। चली जा, मेरे द्वार से !'

रेवती रोती, सिसकती अपमानित हो वहां से जाने लगी। वृद्ध की ओर एक बार याचना की दृष्टि से देखा। वृद्ध नायक का चेहरा गंभीर था। वह मानो इस समस्या का निदान ढूंढ़ने में तल्लीन हो।

१३

दंडकारण्य के एक कोने में शबर लोग आखेट खेल रहे हैं। उन लोगों की दृष्टि में जो भी जानवर दीख पड़ता, उसपर बाणों को वर्षा करके धराशायी बनाते जा रहे हैं। इस आखेट में लोग छोटे-छोटे दलों में बंटकर इधर-उधर झुरमुटों में शिकार की खोज कर रहे हैं। मरे हुए जानवरों का एक ढेर-सा लग गया है। शबर मन ही मन उसे देखकर प्रसन्न हो रहे हैं। अचानक उनमें से एक ने गर्भिन हिरणी पर तीर चलाया जिससे वह तुरन्त घायल हो छटपटाने लगी। उसके पेट से एक मृगशावक

निकल आया। उसी समय शबरी वहां आ पहुंची। उसे देखकर शबरी को बहुत दुःख हुआ और उसने आगे ऐसा कार्य करने से मना किया। जिसने उस हिरणी को मारा था उसे कड़ी सज़ा दी। भविष्य में ऐसी बातों को रोकने के लिए उसने शिकार संबंधी कुछ नियम बनाए। गिली को बुलाकर आदेश दिया कि वह ये सभी नियम लोगों को मालूम कराए और जो इन नियमों का उल्लंघन करेगा उसे सख्त सज़ा दी जाएगी। उसके नियम इस प्रकार थे :—

१. उम्र में छोटे तथा मादा जानवरों का शिकार न किया जाए।

२. पानी पीने वाले जानवरों पर तीर न चलाया जाए।

३. आवश्यकता-भर से अधिक जानवरों का वध न किया जाए।

४. सोते हुए प्राणियों पर वार न किया जाए।

५. मिथुन के समय अथवा जुगाली करते समय उनपर बाण न चलाया जाए।

६. घायल जानवरों पर हमला न किया जाए।

शबरी आदेश देकर आगे बढ़ी। जंगल की शोभा निहारते जा ही रही थी कि अचानक उसके कानों में किसीके रोने का क्रंदन सुनाई पड़ा। उसने एक झुरमुट की आड़ में से देखा : वहां से थोड़ी दूर पर राहू एक युवती को अपमानित कर रहा है। वह युवती रो रही है और उसकी मज़बूत बांहों से निकलने के लिए छटपटा रही है। शबरी को उस युवती पर दया आई और राहू के उस व्यवहार पर क्रोध आया। उसने उसी समय अपने

धनुष पर बाण का संधान कर ऐसा छोड़ा कि वह बाण सरसर ध्वनि करते राहू और उस युवती के बीच जो वृक्ष खड़ा था उसमें जा चुभा। राहू को यह बुरा लगा और उसका चेहरा तमतमा उठा। यह अवकाश पाकर वह युवती उसके पंजे से बच निकली और भाग खड़ी हुई। राहू उस युवती को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा तो शबरी ने दूसरा बाण चलाकर उसके रास्ते को रोक दिया।

राहू ने उस बाण को पकड़ लिया और ध्यान से देखने पर यह समझते उसे देर न लगी कि यह बाण शबरी का है। उसने चारों तरफ अपनी दृष्टि दौड़ाई लेकिन शबरी उसे कहीं दिखाई नहीं दी। झुरमुट के पीछे से धीरे से कोई ध्वनि निकल रही थी। उस दिशा की ओर राहू दबे पांव आगे बढ़ा। एक निश्चित स्थान पर पहुंचकर उसने उस प्राणी को फंसाने के विचार से अपना जाल फेंका। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि जाल में जो फंस गई, वह शबरी नहीं थी, वह तो गिरिका थी। इतने में शतभिष उधर से निकला। उसने देखा कि राहू के जाल में कोई युवती फंसी हुई है। हंसते और परिहास करते हुए उसने कहा, 'ओह, मेरे प्यारे योद्धा, आजकल तुम जंगली जानवरों के बजाय अपने जाल में औरतों को फंसा रहे हो? अह ह···ह···ह इसलिए तुम शबर जाति का नायक बनना चाहते हो? इही··· ही···ही···'

'अरे यार, तुम भी मुझे नहीं जानते? अफसोस की बात है! मित्र होकर भी गलत अर्थ लगाते हो?' राहू बोला।

'वाह, क्यों नहीं जानता? तुम्हारी नस-नस से मैं भली

भांति वाकिफ हूं। मैं तुमको नहीं जानता तो और बेचारा जानने वाला है ही कौन ?'

'दोस्त, मैं शिकार की खोज में जा रहा था। यहां आते ही एक खरगोश रास्ता काटकर झुरमुट में जा छिपा। मैंने तुरन्त उसे पकड़ने के लिए जाल फेंका। कोई चीज़ भारी लगी तो यह सोचकर मैं बहुत खुश हुआ कि शिकार फंस गया है। लेकिन जाल खींचकर देखता हूं तो मेरे होश उड़ गए। बेचारी कोई युवती उस जाल में फंस गई थी। उसने कुछ बुरा तो नहीं समझा होगा ?'

'क्यों नहीं ! तुझे कोई लंपट, बदमाश समझा होगा।'

'क्या कहा ? मैं लंपट हूं ? मैं अपने भुजबल से औरतों की और शबर जाति की रक्षा करना चाहता हूं। मैं न होता तो तुम सबकी क्या हालत होती !'

'तुम न होते तो हमारी हालत अच्छी होती।'

दोनों में वार्तालाप हो ही रहा था कि खरगोश उनके सामने से छलांग मारते, उछलते जा निकला। दोनों का ध्यान झट उस तरफ गया। परस्पर की कटुता को भूल वे उस खरगोश के पीछे दौड़ पड़े।

१४

प्रात:काल का समय था। समस्त प्रकृति शांत थी। मलय-मारुत बह रहा था। शबरी अपने पास के सरोवर में स्नान कर

रही थी। मुनिकुमार करुणा नदी के तट पर बैठे अपलक नेत्रों से शबरी की ओर देखने लगा। शबरी सरोवर में तैर रही थी। करुणकुमार उत्सुकता भरे नेत्रों से उसकी तरफ एकटक देखता रहा।

हठात् शबरी ने देखा कि कोई युवक उसकी तरफ एकटक देख रहा है। उसे बुरा लगा और क्रोध भी आया। तुरन्त प्रताड़ित नागिन की तरह पानी में से फुफकारती बाहर आई। पर उस नवयुवक के मुखमंडल पर निरीहता की झलक देख उसका सारा क्रोध ठंडा पड़ गया। इतने में कहीं से कोई आर्त-नाद सुनाई दिया कि 'बचाओ, बचाओ, मर गया!' शबरी फौरन उस दिशा की ओर दौड़ पड़ी। मुनिकुमार भी उसके पीछे-पीछे चला गया।

एक किशोर मानव-भक्षक वृक्ष के पंजे में फंसे छटपटा रहा है। सहायता के लिए वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है। लेकिन कोई आगे बढ़कर उसे बचाने का साहस नहीं कर पा रहा है। उस किशोर को वृक्ष में फंसे शबर जाति का एक दल देखकर भी चुप है। ऐसा लगता है, मानो ये सब तमाशा देखने के लिए एकत्र हुए हों। शबरी दौड़ती हुई घटनास्थल पर पहुंची। उपस्थित लोगों के मना करने पर भी अपनी जान की भी पर-वाह न करके उस किशोर को बचाने के लिए आगे बढ़ी। बड़ी कोशिश के बाद उस किशोर को बचाने में सफल हुई। करुण इस घटना को देख आश्चर्य-चकित हो गया। शबरी ने उस किशोर को अपने घर भेज दिया और शबर लोगों की तरफ मुड़कर आदेश दिया कि वे लोग ऐसे प्राणि-भक्षक वृक्षों का

समूल नाश करें। इससे करुणकुमार बहुत प्रभावित हुआ और शबरी का प्रशंसक बना। तबसे उन दोनों में मैत्री की भावना का उदय होने लगा।

दोनों वार्तालाप करते थोड़ी दूर आगे बढ़े ही थे कि उन्होंने देखा कि दो आदमी परस्पर झगड़ रहे हैं और मारपीट करने के लिए तैयार हो रहे हैं। वह झगड़ा एक जानवर को लेकर उठ खड़ा हुआ था। उनमें से एक आदमी कहता था कि इस जानवर को मैंने मारा। दूसरा कहता था कि इस जानवर को मैंने बचाया है। दोनों का तर्क यही था कि यह जानवर मुझे मिलना चाहिए। शबरी ने दोनों की बात को सुना। उसने थोड़ी देर सोचने के उपरांत उस जानवर को बचाने वाले के हाथ सौंप दिया। शबरी की न्यायबुद्धि को देख करुणकुमार अवाक् रह गया!

करुणकुमार ने शबरी से पूछा—

'जानवर को मारने वाले का उसपर अधिकार होता है। तुमने बचाने वाले को उसे क्यों दिलाया?' शबरी ने कहा, 'शबर जाति में तो जानवर को मारना मना नहीं है। वैसे तो जो जानवर को मारता है, उसीका उसपर हक हो जाता है। किन्तु नैतिक दृष्टि से एक प्राणी को मारने वाले की अपेक्षा बचाने वाला पक्ष मजबूत होता है।'

'सो कैसे?' मुनिकुमार ने उत्सुकता दिखाई।

'किसी भी प्राणी को कष्ट तो हर कोई दे सकता है। हिंसा करना राक्षस की वृत्ति है। हिंसा से दूर रहना तथा प्राणि-मात्र पर दया दिखाना मानव का धर्म है। अतः भक्षक से रक्षक बड़ा होता है। वही महान् है। हर कोई रक्षक नहीं बन

सकता। संयम, आत्म-निग्रह, तपस्या से ही किसीमें भूतदया का भाव उदित होता है। ये ही गुण मनुष्य को मानव से देवता के आसन पर बिठाने वाले होते हैं।' शबरी ने करुणकुमार को सविस्तार समझाया।

करुणकुमार ने कहा, 'इन्हीं गुणों को प्राप्त करने के लिए लोग एकांत में वन जाकर तपस्या करते हैं; महात्मा एवं ऋषियों की संगति में रहकर उपदेश ग्रहण करते हैं। लेकिन तुम इस असभ्य और जंगली जाति के बीच रहकर इन उदात्त गुणों को कार्यरूप देने की साधना कैसे कर सकी!'

'यह तो आत्मा की प्रेरणा से ही संभव है। मनुष्य जब कभी गलत रास्ते पर जाने लगता है तो उसकी आत्मा उसे धिक्कारती है। परन्तु मनुष्य आत्मा की पुकार को सुनकर उसके अनुकूल आचरण नहीं करता है। जो आत्मा की पुकार सुनता है, उसे एकांत में रहने की आवश्यकता क्या? एकांत में तपस्या करने वाले व्यक्ति भी यदि आत्मा की पुकार नहीं सुनते हैं तो उनकी साधना निष्फल है। मनुष्य प्रकृति द्वारा ही आत्मिक ज्ञान भी ग्रहण कर सकता है। चन्द्र, सूर्य, भूमाता, वृक्ष, नदी, झरने, समुद्र, पर्वत ये सभी मानव का उपकार करते हैं। वृक्ष मधुर फल के साथ शीतल छाया भी प्रदान कर प्राणि-मात्र की सेवा करते हैं तो समुद्र वर्षा के साथ अमूल्य मोती प्रदान करते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है कि जन्म से श्रेष्ठ होकर भी हृदय की पुकार नहीं सुनता; अपने कर्तव्य का ज्ञान रखते हुए भी उसका पालन नहीं करता। यही विडंबना है। मनुष्य को इस प्रवृत्ति से उत्तम शिक्षा ग्रहण करनी होगी। वह तो विवेक को

खो बैठा है। सदा ईर्ष्या, द्वेष, दंभ, हिंसा, क्रोध, वासना इत्यादि का गुलाम हो पतन की ओर वेग के साथ बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि वह शांति और सच्चे सुख से कोसों दूर है। उन्हें इन्हीं दुर्गुणों में ढूंढ़ने का असफल प्रयत्न करता है। जब उसकी विवेक की आंखें खुल जाएंगी तब यह धरती ही स्वर्ग बन जाएगी। काश, वह दिन शीघ्र देखने को मिलता!' शबरी ने गहरी सांस ली।

करुणकुमार ने ऐसी शिक्षा ऋषि-मुनियों की संगति में भी प्राप्त नहीं की थी। वह शबरी के व्यवहारों तथा विचारों से बहुत प्रभावित हुआ। उसका हृदय अपूर्व आनन्द से उछल पड़ा। मानो उसने कोई दीक्षा ग्रहण की हो अथवा तारक मंत्र का उपदेश प्राप्त किया हो। उसका कंठ गद्‌गद हो उठा। उसके नेत्रों से आनन्दवाष्प झलक उठे। वह मन ही मन शबरी की प्रशंसा करते उससे अनुज्ञा लेकर अपने रास्ते चला गया।

१५

शबर लोगों ने गिली के नेतृत्व में एक गांव पर धावा बोल दिया। और उस गांव को लूटा। इस लूट में गिली ने इस बात का ध्यान रखा कि शबरी के द्वारा लूट करने की जो नीति निर्धारित हो चुकी थी, उसके विरुद्ध कोई बात होने न पावे। उस दल के कुछ मूर्खों ने एक गरीब के घर में प्रवेश किया और लूटना चाहा। उन लोगों को सारा घर छान डालने पर

भी कुछ हाथ न लगा। लेकिन एक ने देखा कि उस घर की औरत के गले में कोई चीज़ चमक रही है। उसने ताड़ लिया कि वह चीज़ सोने की होगी। तुरन्त उसने उस औरत के पास पहुंचकर उसके चिल्लाते रहने पर भी ध्यान दिए बिना उसके गले से मंगलसूत्र को खींच लिया और चंपत हो गया।

शबर दल ने लूट का सारा माल लाकर शबरी के सामने रख दिया। शबरी उस समय कालीमाई के चरणों पर बैठी हुई थी। शबरी ने लूट के माल की जांच की तो उसमें से मंगल-सूत्र भी निकला। तुरन्त शबरी आगबबूला हो उठी और दांत पीसकर बोली 'कौन मूर्ख इसे लूट लाया है ? वह तुरन्त मेरे सामने आए।' मंगलसूत्र को चुराने वाला वह मूर्ख झिझकते, हिचकिचाते आखिर शबरी के सामने आकर खड़ा हो गया और थरथर कांपने लगा। शबरी ने उसे जी भरकर गालियां दीं और उसके गालों पर कई चपतें रसीद कीं। अन्त में गिली तथा उसके अनुयायियों को लेकर उस गांव जाने के लिए तैयार हो गई।

गिली ने मार्ग दिखाया। शबरी अपने दल के साथ उस गरीब के घर पहुंची। मंगलसूत्र को वापस कर दिया और उस औरत 'सुगुणा' से शबरी ने इस अपराध के लिए अपनी तथा अपने दल की ओर से क्षमा मांगी। इस अपराध के निवारणार्थ शबरी ने सुगुणा को एक स्वर्णमुद्राओं की थैली भेंट की। लेकिन सुगुणा ने उसे लेने से साफ इनकार कर दिया। उसने कहा, 'मैं किसी भी हालत में दूसरों की वस्तु को ग्रहण नहीं कर सकती हूं। मैं उसी चीज़ को ग्रहण कर सकती हूं जिसे

हमारे परिवार ने कड़ी मेहनत करके प्राप्त किया हो।

शबरी ने उसे मनाने की बहुत कोशिश की और कहा, 'ये तो उन हृदयहीन धनी लोगों से छीन ली हुई चीजें हैं जिन्हें उन लोगों ने ग़रीबों के शोषण से कमा लिया है। इसमें खून-खराबे और अत्याचार का माल नहीं है इसलिए इन्हें ग्रहण करने में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए।'

सुगुणा ने मंदहास करते हुए कहा, 'जन्मतः वे धनी नहीं हैं बल्कि बाद में वे धनी बन गए हैं। व्यक्तियों के बीच में जो विभिन्न प्रकार की अभिरुचि और मानसिक प्रवृत्तियां हैं वे ही अमीर और गरीब के बीच भेदभाव पैदा करती हैं। धन-सम्पत्ति के बढ़ने से व्यक्ति का अहं भी बढ़ता है। तब मनुष्य में लोभ, स्वार्थ, सुख-भोगों की लालसा तथा अशांति बढ़ने लगती है। इससे सच्चा सुख उसे नहीं मिलता है। प्रत्येक मनुष्य आत्म-संतोष और सच्चे सुख की ही खोज करता है। ऐसी हालत में मैं इस धन को ग्रहण कर अपनी शांति और संतोष को खोना नहीं चाहती हूं।

'धन के उपलब्ध होने से मनुष्य शारारिक परिश्रम करना हेय समझने लगता है, शारीरिक परिश्रम के अभाव में स्वास्थ्य की वृद्धि नहीं होती है। रोगी मनुष्य धरती माता के लिए भी भार-तुल्य है। उससे न कोई उपकार हो सकता है, न वह जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। इन कारणों से मैं धन को ग्रहण करने में असमर्थ हूं। आप मेरी धृष्टता को क्षमा करेंगी।

'रही मंगलसूत्र की बात। वह तो एक सुमंगली का चिह्न है। उसे खोकर जीवित रहना नारी के लिए दुर्लभ है। मैं

असहाय थी। आपके दल ने पाशविक शक्ति का प्रयोग कर मुझसे छीन लिया है, उसे वापस पाकर मैं जितना प्रसन्न हो सकती हूं, उतनी प्रसन्नता तो मुझे करोड़ों रुपयों की संपत्ति पाकर भी न होगी।'

अन्त में सुगुणा मंगलसूत्र की पवित्रता शबरी को समझाती है। और कहती है कि एक नारी के लिए मंगलसूत्र इस दुनिया की समस्त वस्तुओं में क्यों अधिक महत्त्व रखता है। यह सुनकर शबरी विवश हो वहां से चली जाती है।

१६

दण्डकारण्य से एक बरात जा रही है। दुलहिन एक पालकी पर बैठी हुई है और कहार उसे ढो रहे हैं। दूल्हा और कुछ पुरुष पालकी के पीछे पैदल चले जा रहे हैं। कुछ गाड़ियों में सामान लदा हुआ है और गाड़ियों के पीछे भी कुछ लोग दिखाई दे रहे हैं। तुरही, बैंड, बंसी इत्यादि बजाते हुए एक दल आनन्द के साथ आगे बढ़ा चला जा रहा है। वाद्यकार अपनी-अपनी कला की निपुणता की बड़ी शान के साथ परिचय दे रहे हैं।

शबर लोग घने जंगल के बीच में झाड़-झंखाड़ के पीछे और पेड़ों की ऊंची शाखाओं पर छिपे बैठे हुए हैं। आने-जाने वाले राहियों को लूटने की ताक में वे लोग बैठे हुए हैं। इतने में बरात वहां आ पहुंचती है। उन्हें निकट आया देख शतभिष ने मन ही मन कहा, 'बेचारे, ये शादी में क्या आए, मौत को

ही बुला लाए ।' सीध में आने पर शबरों ने अचानक बरात पर धावा बोल दिया। दूल्हे तथा अन्य पुरुषों ने जो बरात में पालकी के पीछे थे, शबरों का सामना किया। देखते-देखते दोनों दलों में लड़ाई छिड़ गई । इधर दोनों दलों के बीच घोर युद्ध हो रहा था, उधर शबरी गिली को साथ ले जंगल में आई। उसे लड़ाई छिड़ने की चिल्लाहट और कोलाहल सुनाई पड़ा।

युद्ध ज़ोर पकड़ने लगा। दूल्हा बड़े साहस और वीरता के साथ लड़ता रहा। उसने दो-तीन शबरों को मार गिराया। लेकिन शवर लोगों ने लूट और खड्ग-युद्ध के नियमों के विरुद्ध पीछे से दूल्हे पर वार किया और उसे मार डाला। दूल्हा पंख-कटे पक्षी की भांति तड़पने लगा। देखते-देखते उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। इतने में शबरी एक ओर से और दुलहिन दूसरी तरफ से यह सब देखकर घटनास्थल पर आ पहुंचीं।

शबरों ने शबरी की जयजयकार की। लेकिन शबरी में मानसिक संघर्ष होने लगा। दूल्हे की लाश को देखते ही शबरी मूर्छित-सी हो गई। दुलहिन अपने पति की लाश के निकट पहुंचकर क्रोध भरी आवाज़ में फुफकारने लगी। शबरी की तरफ मुड़कर उसने शाप दिया, 'तुम जन्म-जन्मान्तर दुर्भाग्य की मारी एवं कुंवारी ही रह जाओगी।' फौरन वह अपने पति की लाश पर धम्म से गिर पड़ी और यह कहते उसने प्राण त्याग दिए, 'भगवान् ने मुझे सुहाग का जो वरदान दिया था उसे तुमने लूट लिया! मेरे जीवन का एकमात्र आधार एवं सम्पत्ति को भी लूट लिया! तुमने मेरे सिन्दूर को लूटकर मेरे जीवन की अभिलाषाओं का अन्त कर दिया! मैं अपनी उज्ज्वल

आशाओं को खोकर इस भग्न हृदय को लेकर कैसे जीवित रह सकती हूं ? तुम लोग अपने पापी पेट भरने के लिए दूसरों की हत्या करते हो। मानवता को भी भूलकर तुम लोग अमानुष जीवन व्यतीत कर रहे हो। मानव होकर भी पशु से भी हीन हिंसाकाण्ड कर रहे हो। पशुओं में भी कभी दया देखी जा सकती है...।'

शबरी अवाक् रह गई। उसका मन विकल हो उठा और वह अपने अनुयायियों से भी कुछ कहे बिना वहां से चल दी।

१७

शबरी सरोवर के तट पर बैठी बीती हुई घटनाओं का स्मरण कर व्याकुल होने लगी। वह उस घटना को भुलाने की भरसक कोशिश करके भी भूल नहीं पा रही है : दुलहिन के वे शब्द बराबर उसके कानों में गूंजने लगे : 'तुम लोग अपने पापी पेट भरने के लिए एक कौर के वास्ते भी दूसरों की हत्या करते हो। तुम लोग मानवता को भी भूलकर अमानुष जीवन व्यतीत कर रहे हो। मानव होकर भी पशु से भी हीन हिंसाकांड कर रहे हो। पशुओं में भी कभी-कभी दया देखी जा सकती है पर तुम लोगों के हृदयों में दया नामक कोई चीज़ है ही नहीं। तुम लोगों में हृदय नहीं है। वह तो पाषाण है, नहीं, नहीं पाषाण से भी कठिन है।'

शबरी का शरीर कांपने लगा। उसके चेहरे से पसीने की धार छूटने लगी। उसका चित्त विकल होने लगा। उसी समय

कहीं से मुनिकुमार करुण आ निकला और उसने शबरी के कंधों पर धीरे से अपना हाथ रखा। शबरी ने शीतलता का अनुभव किया और उसकी तरफ देखा। उसको देखते ही मानो शबरी को कुछ बल मिला। करुण ऐसे मुस्कराने लगा मानो उसने शबरी की मानसिक व्यथा को पहचान लिया हो। मुस्कराने की कोशिश करते हुए शबरी ने कहा, 'क्या ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिसपर चलकर मेरी प्रजा बिना पाप, लूट और हिंसा-कांड किए शांति के साथ जीवन बिता सके ?'

करुण ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'क्यों नहीं ? पृथ्वी माता धनी है। वह हमारी मेहनत के अनुसार सब कुछ देने की क्षमता रखती है। हमें तो उसपर भरोसा रखकर कार्य करना चाहिए। वह हमारे अभ्युत्थान और सुख-शांति के वरदान देगी। धरती माता सबकी जन्मधात्री है। वह अन्नपूर्णा है। समस्त रत्नों का भण्डार है। उसे रत्नगर्भा वसुन्धरा आदि नामों से भी पुकारते हैं। उसपर संपूर्ण विश्वास रखकर जो अपने कर्तव्य का पालन करते हैं, उनके पालन का भार पृथ्वी अपने ऊपर लेती है। वह शांति, सहनशीलता, पवित्रता, दया, करुणा, स्नेह एवं प्रेम की पुजारिन है। इन गुणों के पोषण के लिए प्राणी को धरती माता से शिक्षा ग्रहण करनी होती है। वह मूक है, श्रद्धा की मूर्ति है, करुणामयी है। उसकी शरण में जाओ। वह तुम्हारा कल्याण करेगी।'

मुनिकुमार अपना संदेश दे आश्रम चला गया। लेकिन शबरी कब तक वहां एकाग्र चित्त से विचारमग्न रही, उसको नहीं मालूम। मुनिकुमार करुण के कृषि-कार्य तथा खेती-वाड़ी-संबंधी सुझाव ही उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे।

१८

'भाइयो और बहनो !

'हम लोग आज तक राहगीरों को लूटकर जीवन-यापन करते थे। अपनी ज़िन्दगी को सुखी बनाने के लिए और अपने प्राणों की रक्षा के लिए हम दूसरों के प्राण लेते थे और उनकी ज़िन्दगियों को बरबाद करते थे। वे भी आदमी हैं और हम भी। हमारी तरह उनको भी जीने का हक है। उनके प्राणों को लेने का हमें क्या अधिकार है? भगवान् की दृष्टि में सब मनुष्य बराबर हैं। लेकिन आज तक हम लोग पशुतुल्य जीवन बिता रहे थे। हमारी इन करतूतों को अगर कोई ईश्वर है तो वह कभी क्षमा नहीं कर सकेगा। इतने दिनों के बाद ही सही, हमारी आंखें खुल गई हैं। आगे हमें मनुष्य की तरह जीना है। इसलिए मैं आप लोगों से निवेदन करता हूं कि भविष्य में हमें कभी भी लूट-खसोट नहीं करनी चाहिए। यदि कोई भूल से भी किसी राहगीर को सताएगा और उनकी जान और माल को नुकसान पहुंचाएगा तो उसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाएगी। मैं उम्मीद करता हूं कि तुम लोग आगे इन बातों का पालन करोगे।'

—यह घोषणा करके शतभिष बठ गया।

वहां पर एक मंच बना हुआ था। मंच के सामने लोगों की भीड़ लहरा रही थी। उसमें शबर जाति के बूढ़े, बच्चे, जवान और औरतें सभी प्रकार के लोग उपस्थित थे। चौरास्ते पर मंच बना था। लोग चारों तरफ बैठे हुए थे।

इतने में भीड़ में हलचल मच गई। लोगों को अपने रास्ते

से हटाते हुए विष्कंभ मंच की ओर आगे बढ़ा और सीना तान के खड़ा हो गया। वह गंभीर आवाज़ में गरज उठा :

'क्या शबरी लोगों को जानवर बनाना चाहती है ?'

'ओह ! क्या तुम आदमी हो ? मुझे नहीं मालूम था। हा···हा···हा··· हा···' शतभिष ने व्यंग्य कसा।

शतभिष की बातें सुनकर विष्कंभ की भौंहें तन गईं। भृकुटियां चढ़ गईं। आंखें लाल हो गईं। उसकी नथुनें फूलने लगीं। क्रोध के मारे उसके शरीर का सारा खून खौल उठा। आक्रोश के मारे गरजते हुए बोला :

' मनुष्य हूं, तभी तो कहता हूं। भगवान् ने हमें जो शक्ति दी है, उसका हमें उपयोग करना चाहिए। बेवकूफ ! तुम जानते क्या हो ? अगर हममें ताकत नहीं है और हम राहगीरों को लूटकर अपने परिवार का पोषण नहीं करते हैं तो जिएंगे कैसे ? हमारे पास बाप-दादाओं की कमाई हुई लाखों की संपत्ति नहीं है कि हम लोग बैठे-बैठे गुलछर्रे उड़ाते फिरते रहें। इस दुनिया का कायदा यह है, जिसकी लाठी उसकी भैंस। जितने भी साम्राज्य खड़े हुए वे सब ताकत के बल पर ही। तुम्हें लूटने की शक्ति नहीं है तो कैसे ज़िन्दा रह सकते हो ? इसके बिना और चारा ही क्या है ?'

'सो तो ठीक मालूम होता है लेकिन हमारी नायक शबरी और गिली कहते हैं कि लूट-खसोट के बिना भी लोग जी सकते हैं।' शतभिष ने प्रतिवाद किया।

'शबरी और गिली कहने वाले और तुम सुनने वाले हो ! अब हो चुका। यदि यही रवैया रहा तो कुछ ही दिनों में हमें अपनी

जान से हाथ धोना पड़ेगा। अरे ये सब मरदों की बातें हैं, औरत क्या जाने! कहा भी है न, बंदर क्या जाने अदरख का स्वाद! औरत तो घर का काम जानती है, शिकार करना, लूटना ये सब मरदों के काम हैं। गिली तो नामर्द ठहरा! इसलिए वह शबरी का पुछल्ला बनकर फिरता रहा। वह क्या जाने? शबरी तो औरत ठहरी! वह उपदेश देना मात्र जानती है। तुम लोग तो बेवकूफ ठहरे! इसलिए उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ जाते हो। दुनिया में मरद ही सब कुछ कर सकता है। औरत ने आज तक कुछ नहीं किया और आगे भी कुछ नहीं कर सकती। शबरी तो...'

इतने में शबरी बिजली की तरह वहां आ पहुंची।

'विष्कंभ, बकवास बन्द करो। तुम तो लोगों को उत्तेजित करना जानते हो। हत्याएं करना जानते हो। मगर दुनिया हमारे बारे में क्या सोचती है, तुम क्या जानो? हमने अब तक अपनी ज़िन्दगी के कई साल लूट-खसोट, हत्याएं करते बिता दिए। हमारे बाप-दादाओं ने भी यही किया। उनके दादा-परदादाओं ने भी यही किया और परंपरा से यही प्रथा चली आ रही है। लेकिन हम इसी परिपाटी का पालन करके अपने सिर पर पाप क्यों मोल लें? हमारे इन नीच कामों के कारण हम लोग काफी बदनाम हैं। दुनिया सोचती है कि हम लोग बेवकूफ हैं, हत्यारे हैं, लूटकर जीने वाले लुटेरे हैं, चोर हैं, डाकू हैं तथा खून चूसने वाले हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि हम लोग यह सब करते हैं। दुनिया की ओर देखो, वे लोग कैसे सुखमय जीवन बिता रहे हैं। कैसे सुख और शांति का अनुभव कर रहे हैं, कैसे

भाईचारे का बर्ताव करते हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं। एक-दूसरे से प्रेम करते हे और एक-दूसरे के हित की बातें सोचते हैं। लेकिन हम ? ज़रा सोचो तो वे लोग हमसे भी बलवान हैं। अकलमंद हैं, धनी हैं। यदि हमारी वस्ती पर हमसे भी अधिक बलवानों का दल हमला करे, हमको लूटे, हमारा गला काटे, हमारी मां-बहनों का अपमान करे तो तुम्हारा मन कैसा होगा ? इसलिए हमको अपने पूर्वजों के धंधे को त्याग देना चाहिए। उससे हम ऊब उठे हैं। इसमें न सुख है और न शांति। मानवीयता से दूर हटे हम लोग जानवरों का सा जीवन बिता रहे हैं। इसलिए हमें भी आगे सभ्य जीवन बिताना चाहिए।'

शबरी के मुख-मंडल पर गंभीरता और दमक नाच रही थी। उसने एक बार श्रोताओं की तरफ देखा। लोग ध्यान-मग्न हो शबरी की बातें सुन रहे थे। उनके चेहरों पर अपार हर्ष का नृत्य हो रहा था। उसकी आंखों में श्रद्धा और स्नेह की भावनाएं झलक रही थीं। शबरी ने सोचा कि लोग उसकी बातों पर विश्वास करने लगे हैं और उनको उसका मार्ग पसन्द आ रहा है। तो उसने और भी उत्साह के साथ कहना प्रारंभ किया :

'हमें तो अपनी आत्मा का विकास करना चाहिए। अपने में मानवीय गुणों का पोषण करना चाहिए। आज से हमें मनुष्य की तरह जीना है। भाइयो और बहनो ! उठो, अपने कुदाल और फावड़े हाथ में लो। ज़मीन को समतल बनाओ, ज़मीन को जोतो, इससे हमारी जान का कोई खतरा नहीं। हमारी भूख और प्यास मिट जाएगी। धरती माता हमें आशीर्वाद देगी।'

इसके बाद शबरी ने आदेश दिया कि वे सब जंगल में जाकर

एक समतल प्रदेश को साफ करें और वहां के पेड़-पौधे काटकर ज़मीन को खेती के लायक बनाएं; वे बिना कुछ संकोच के अपने हाथों में कुदाल और फावड़े लिए जंगल की तरफ आगे बढ़े।

१९

शबर लोग बड़े उत्साह और स्फूर्ति के साथ जंगल के झाड़ और झंखाड़ों को काटते जा रहे हैं। इसमें बूढ़े, बच्चे और औरतें सभी भाग ले रहे हैं। जहां तक पेड़ काटे गए हैं वहां की ज़मीन साफ और समतल करते जा रहे हैं। जंगल के एक निश्चित प्रदेश के चारों तरफ के पेड़ों को काटते-काटते जब मध्य भाग में सब एकत्र हुए, वहां एक महान् वटवृक्ष खड़ा था। लोग उत्साह के साथ उसे काटने के लिए दौड़ पड़े। कुल्हाड़ियां लेकर उस पेड़ की जग पर लोगों ने वार किया ही था कि सारा वृक्ष हिलता-सा दिखाई दिया और पेड़ पर से एक ऐसी भयंकर आवाज़ निकली जिससे चतुर्दिक् गूंज उठे। शबर लोग भय और विस्मय के साथ चारों तरफ कातर नेत्रों से देखने लगे। उस बार वृक्ष पर से एक भयंकर गर्जन के साथ ऐसा झकोर आया कि आसपास का प्रदेश हिल उठा। लोगों ने चकित होकर वृक्ष की ओर दृष्टि दौड़ाई तो देखते क्या हैं, उनके सामने एक अति विशाल एवं भीमकाय अमानुष-रूप दिखाई दिया।

उसका चेहरा विकृत और भयंकर था। उसकी आंखें लाल

तथा आग बरसाने वाली थीं । उसके सिर पर काले बादल-सी लंबी जटाएं फैली थीं । उसका मुंह चौड़ा और खून से सना था । उसके लंबे एवं सफेद डाढ़ खून से रंगे थे । उसके सारे शरीर में रोम फैले हुए थे। उसके पैर इतने लंबे थे कि उस वट वृक्ष से भी बड़े लगते थे। उसके हाथ वट वृक्ष की शाखाओं की भांति दूर तक फैले हुए थे। उसके हाथों तथा पैरों के नाखून तेज़ छुरी के समान प्रतीत होते थे। इस भयंकर आकृति को देख शबर लोगों का साहस छूट गया। उनके शरीर से पसीने की धाराएं छूटने लगीं। उनके मुंह पीले पड़ गए। अब रास्ता नापने की सोचने लगे।कुछ तो भाग खड़े हुए। शबरी ने देखा कि लोग उस ब्रह्मराक्षस को देख भयभीत हो गए हैं तो उन्हें ढाढस बंधाने लगी। इसके बाद शबरी ने ब्रह्मराक्षस से निवेदन किया, 'हे ब्रह्मराक्षस ! हम लोग यहां पर अपनी आजीविका के लिए ज़मीन खेत के लायक बना रहे हैं। आज तक हमने भी पथिकों और यात्रियों के प्राणों के साथ खिलवाड़ किया है। बड़ी देर से ही सही, हमारी आंखें खुल गई हैं। हमने जान लिया है कि हम जो-कुछ कर रहे थे वह ठीक नहीं था। लेकिन कम से कम अपने शेष जीवन को अच्छे मार्ग में बिताना चाहते हैं। इसलिए हमने धरती माता की शरण ली है। कोई भी व्यक्ति अपनी मेहनत से ज़मीन जोत-बोकर उत्तम फसल पैदा कर सकता है। इससे न किसीको तकलीफ होती है और न हानि ही। इस वट वृक्ष के चारों तरफ की ज़मीन हमने साफ की है। यदि बीच में यह वृक्ष रहा तो इसकी छाया में पौधे बढ़ नहीं सकते और हमारी सारी मेहनत मिट्टी में मिल जाएगी। तुम्हारे लिए तो ऐसे अनेक महा-

वृक्ष हैं जहां तुम आश्रय ले सकते हो। इससे हमारा भी बड़ा उपकार होगा। मैं आशा करती हूं कि तुम हमारी भलाई के वास्ते कम से कम इतना त्याग तो कर सकते हो। हमने हिंसा-पूर्ण जीवन त्याग दिया। तुम से भी यही निवेदन करते हैं कि तुम भी भविष्य में प्राणि-मात्र का उपकार करो और अपने जीवन को सफल बनाओ।'

शबरी के निवेदन का प्रभाव ब्रह्मराक्षस पर पड़ा। उसमें विवेक का उदय हुआ। उसने बड़ी श्रद्धा और विनय के साथ शबरी के चरण छूकर कहा, 'हे माते! तुम्हारे उपदेश ने मुझ-पर ऐसा जादू-सा काम किया कि मुझमें ज्ञानोदय हुआ। मैं पूर्वजन्म में एक गंधर्व था। उस समय मैंने अनेक अपराध किए। उसके परिणाम-स्वरूप मैंने ब्रह्मराक्षस का जन्म पाया। आज तुम्हारे दर्शन और उपदेशों से मैं शाप-विमुक्त हो गया। तुम्हें मैं कभी भूल नहीं सकता। मैं अपना शेष जीवन तुम्हारी तरह उत्तम कार्य करते हुए बिताऊंगा।'

ब्रह्मराक्षस के मुंह से ये वाक्य निकले ही थे कि इतने में उसने गंधर्व का रूप प्राप्त किया और शबरी की अनुज्ञा लेकर उस वट वृक्ष को छोड़ अन्तर्धान हो गया।

शबर लोगों ने जब देखा कि ब्रह्मराक्षस जैसा क्रूर एवं हिंसक प्राणी भी शबरी के सामने नतमस्तक हो गया है तब वे शबरी से बहुत प्रभावित हुए और दुगुने उत्साह के साथ अपने कार्य में लग गए। शबरी भी उन लोगों के साथ ज़मीन साफ करने में निमग्न हो गई।

शबर लोगों ने ज़मीन को समतल बनाया, जोता, धान

रोपा और कुछ समय के बाद खेतों में धान लहराने लगा। उनका परिश्रम सफल हुआ। उन लोगों के चेहरों पर खुशी की रेखाएं छा गई। उनके हृदय अनिर्वचनीय आनन्द से भर उठे। धरती की इस विचित्र करामात पर वे चकित थे। उनके लिए यह नया अनुभव था। अपनी मेहनत का मूल्य उनको मालूम हुआ। यह सब मुनिकुमार करुण प्रफुल्लित वदन से देखता रहा। शबर लोगों में इस विचित्र परिवर्तन तथा अपने उपदेशों का परिणाम प्रत्यक्ष देख वह मन ही मन बहुत प्रसन्न था। स्वावलंबन पर शबरों का विश्वास एवं आस्था बढ़ गई। हिंसात्मक जीवन में उन्हें कभी प्राणों के खोने का भय बना रहता था। अब वे निश्चित हो गए। कार्य से निवृत्त होने पर आराम करने का अवसर प्राप्त होता था। तब वे अपने संबंध में अधिक सोचने लगे। धीरे-धीरे शबरी के अनुयायियों में इस पेशे के द्वारा उत्तम गुणों का विकास होने लगा।

२०

शबरी खेत का निरीक्षण करने जंगल से होकर जा रही है। रास्ते में अचानक करुणकुमार से उसकी मुलाकात हो गई। करुणकुमार शबरी की सफलता पर उसे धन्यवाद देता है। इस संबंध में दोनों में वार्तालाप चल ही रहा था कि दूसरे रास्ते से राहू और उसके साथी आ जाते हैं। ठीक उसी समय कर्ता, कर्मा और क्रिया भी उसी जंगल से गुज़रते हैं और सबका आमना-सामना

होता है। शबरी को मुनिकुमार के साथ एकांत में वार्तालाप करते देख सब ईर्ष्या से जल उठते हैं। अन्त में करुणकुमार उसी स्थान पर शबरी से मिलने का वचन देकर वहां से चल देता है। शबरी भी उस स्थान को छोड़ आगे बढ़ती है। लेकिन राहू तथा उसके मित्र और कर्ता, कर्म, क्रिया शबरी का परिहास करते हुए ज़ोर से हंस पड़ते हैं।

शबर नायक के दोनों तरफ राहू और रेवती बैठे हुए हैं। जंगल में राहू ने शबरी को मुनिकुमार के साथ एकांत में वार्तालाप करते देखा था, इसको अनुचित बताते हुए वह कह रहा है, 'शबरी के सिर पर जवानी चढ़कर बोल रही है। उसके चरित्रभ्रष्ट होने की संभावना है। वे लक्षण अभी दिखाई दे रहे हैं। वरना एक युवती को एकांत में एक युवक से बातें करने की आवश्यकता ही क्या थी? मुनिकुमार तो सुन्दर है और युवा भी। जवानी में दोनों तरफ पैर फिसलने की संभावना रहती है। इसलिए जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी शबरी की शादी कर देनी चाहिए। क्या, हमारी जाति में उससे भी स्वस्थ और प्रतापी युवक नहीं हैं? जो कि उस मुनिकुमार का पुछल्ला बनकर घूमती फिरती रहे। यह तो हमारी जाति और विशेषकर आपके लिए भी लज्जा की बात है। मैं तो अभी सावधान कर देता हूं। बाद को पछताने से कोई फायदा नहीं है। पौधा होकर न झुका तो पेड़ होकर क्या कभी झुक सकता है?'

रेवती को शबरी की निन्दा करने का अच्छा मौका मिला।

ईर्ष्या तो वह पहले से ही करती थी। एक औरत दूसरी औरत की उन्नति और प्रभुता को कभी स्वीकार नहीं करती। रेवती का इसमें स्वार्थ भी था। वह वृद्ध शबर को शबरी और राहू के विवाह के लिए मनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहती थी। इसलिए रेवती भी नमक-मिर्च लगाकर शबर नायक के दिल में ज़हर घोलने की कोशिश करती रही। वह वृद्ध नायक के कान भर रही थी कि इतने में चौखट के पास आहट पाकर चौंक पड़ी। सामने शबरी को खड़े और उन दोनों की तरफ घूरते देखकर दोनों के चेहरे सफेद पड़ गए। राहू ने चुपके से रास्ता नापा।

शबर नायक का चेहरा तमतमा उठा। क्रोधावेश में वह पागल था। उसके मुंह से बोल नहीं फूटे। बल्कि उसकी तीखी नज़र में सारा क्रोध एकत्रित हो झलक रहा था। शबरी उस दृष्टि को सहन नहीं कर सकी। वह अपने पिता के उस उग्र रूप को देख आपादमस्तक एक बार कांप उठी। फिर दूसरे ही क्षण उसका हृदय शीतल हो गया। उसे अपने पिता के अपार प्रेम का स्मरण हो आया। वह तुरन्त अपने पिता के निकट पहुंचकर बोली—

'पिताजी ! क्या आप भी इन लोगों की बातों पर यकीन करते हैं ?'

कड़कती आवाज़ में शबर नायक गरज उठा—

'मैंने नहीं सोचा था कि मेरी बेटी इतनी नीच होगी। और इस बुढ़ापे में मेरी इज़्ज़त में बट्टा लगाएगी। काश ! यह दिन मुझे देखने को न मिलता। और मैं भी तुम्हारी माता का साथ

देता तो कितना अच्छा होता !'

'पिताजी, आप कभी यह न सोचें कि आपकी बेटी इतनी नीच है। मैं मरना बेहतर समझूंगी लेकिन आपकी इज़्ज़त में दाग लगते मैं कभी सहन नहीं कर सकूंगी। मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मेरे ही पिताजी मेरे संबंध में गलत धारणा रखेंगे।'

'जिन लोगों ने अपनी आंखों से देखा था उनपर यकीन न करूं?'

'क्या, एक युवती का एक युवक के साथ बात करना पाप है? भाई बहन से बात करता है, क्या वह पाप है? दुनिया की आंखें यह सहन नहीं कर सकतीं कि एक-दूसरे के अनुभव और ज्ञान से लोग लाभ उठाएं। परस्पर पवित्र मिलन को भी अनुचित ठहराकर लोगों का अपमान करना लोगों को पसन्द है। राहू ने ईर्ष्यावश यह अफवाह फैलाई है। लेकिन मैं आपके चरण छूकर तथा अपने देवी-देवता और माता की शपथ लेकर कहती हूं कि मैं निर्दोष हूं। मैंने बुरी नज़र से न कभी किसीको देखा और न कभी देखूंगी। सार्वजनिक कार्य करते समय मनुष्य को अनेक लोगों से मिलना पड़ता है। उनकी सलाह लेनी पड़ती है। उनकी तकलीफों का ध्यान रखना पड़ता है। लेकिन मैं अन्त में यही कहूंगी कि मेरे हृदय को कम से कम वह परमात्मा तो जानता है। यही मेरे लिए खुशी की बात है। वह आपसे भी बड़ा है। वह मुझसे प्रसन्न है। उसको मैंने धोखा नहीं दिया और न अपनी आत्मा को। बस। मैं और कुछ कहना नहीं चाहती!'

'बेटी, मुझे माफ करो। मैं तुमसे बड़ा ज़रूर हूं लेकिन मेरी

अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे। इसीलिए उनकी बातों में आकर मैंने तुम्हें बुरा-भला कहा, भूल जाओ बेटी, उस सबको भूल जाओ। तुम्हारे दिल को मैंने यों ही दुखाया।'

बूढ़े की आंखों में आंसू छलछला आए। वह शबरी को गले लगाकर ज़ोर से रो पड़ा।

२१

मुनिवाटिका में मुनि विश्वंभर पूजा-पाठ से निवृत्त होकर एक आसन पर बैठे हुए हैं। उसी समय कर्त्ता और क्रिया वहां पहुंच जाते हैं और शबरी तथा मुनिकुमार के संबंध में अनुचित व्यवहार का दोषारोपण करते हैं। इसपर मुनि विश्वंभर क्रुद्ध हो जाते हैं और उसी समय करुणकुमार को बुलाकर आदेश देते हैं, 'आज से तुम इस वाटिका को छोड़कर नहीं जा सकते। तुमने जो पाप किया है, उसके प्रक्षालन एवं पश्चात्ताप के लिए तुम्हें उपवास करना होगा। तब तक करना होगा जब तक कि तुम्हारे पाप उसमें धुल न जाएं।'

मुनिकुमार को बोलने का अवसर तक नहीं दिया गया। उसने मुनि विश्वंभर की आज्ञा को सिर आंखों पर लिया। दुनिया की मूर्खता पर मन ही मन हंसते वह कुटी के भीतर चला गया।

शबरी नियत समय पर उस स्थान पर पहुंची जहां मिलने को मुनिकुमार ने बताया था। वह बड़ी देर तक प्रतीक्षा करती रही लेकिन मुनिकुमार नहीं आया। इस आशा से वह

बड़ी उद्विग्नता के साथ वहीं बैठी रही कि वह अब आएगा, अब आएगा। यहां तक कि दिन ढल गया। सूर्यास्त हुआ, किन्तु शबरी प्रतीक्षा करती रही। उसका सारा उत्साह मंद पड़ गया।

सूर्योदय का समय है। आकाश में चारों तरफ बादल छाए हुए हैं और गरज रहे हैं। फिर भी शबरी करुणकुमार की प्रतीक्षा में उदास बैठी उस तरफ देख रही है जिस ओर से करुणकुमार के आने का मार्ग है। इतने में उस मार्ग से कर्ता, कर्मा, क्रिया आ निकलते हैं। वह बड़ी उत्सुकता के साथ उनसे करुणकुमार के सम्बन्ध में दरियाफ्त करती है। लेकिन वे लोग सच्ची बात कहने में संकोच करते हैं और डरते भी हैं। इसलिए वास्तविकता को छिपाकर शबरी से कहते हैं, 'उफ ! क्या बताएं, करुण की तबियत बिलकुल खराब हो गई है। वह बड़ी बुरी हालत में है। चल-फिर नहीं सकता।'

शबरी यह समाचार सुनकर बहुत व्याकुल हो जाती है और बड़ी तेज़ी के साथ मुनि-वाटिका की ओर आगे बढ़ती है। उस समय आसपास का वातावरण बहुत भयंकर था और तूफान के होने के चिह्न नज़र आते थे।

थोड़ी देर में ज़ोरों की वर्षा होने लगी। बिजली कौंधने लगी। मेघ गर्जने लगे। वज्रपात से सारी धरती हिल उठी। ऐसा मालूम होने लगा, मानो प्रलय का उत्पात मचने जा रहा है। इस भयंकर वातावरण में शबरी भीत हरिणी की भांति एक-एक कदम आगे बढ़ाती जा रही है। घुटने तक जल आ गया है।

हरी दूब और घास डूब गई है। कहीं रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। रास्ते में कहीं खड्डे हैं तो कहीं खाइयां हैं। कहीं मेड़ें हैं तो कहीं कंटीले झाड़-झंखाड़ हैं। पैर घसीटती, हांफती, दांत कटकटाती और कांपती हुई शबरी आखिर मुनिवाटिका तक पहुंच जाती है। विश्वंभर को पहले से ही पता लग गया था कि शबरी करुणकुमार को चाहती है। अब उसे मिलने के लिए आते हुए देख उसके क्रोध का पारा चढ़ गया। उसे मुनिवाटिका में प्रवेश करने देना तो दूर रहा बल्कि उसकी गर्दन पकड़कर मुनिवाटिका से दूर ढकेल दिया। विश्वंभर शबरी की छाया मात्र से घृणा कर रहा था। उसके जीवन में यह पहला अनुभव था कि एक युवती ने मुनिवाटिका में ब्रह्मचारियों की खोज करते हुए प्रवेश करने का साहस किया हो।

विश्वंभर करुणकुमार को देखने भीतर चला गया। वैद्य करुणकुमार की जांच कर रहा था। देखते-देखते वैद्य के माथे पर बल पड़ गए। उसका चेहरा गंभीर हो उठा। वह कुछ चिंतित मालूम हुआ। मानो किसी जटिल समस्या का निदान ढूंढ़ रहा हो। आखिर गहरी सांस लेकर वैद्य ने विश्वंभर से कहा, 'मुनिवर ! अब करुणकुमार के बचने का मार्ग दिखाई नहीं देता, लेकिन एक ही उपाय है। वह यह कि यहां से बहुत दूर पर स्थित सह्याद्रि पर्वत पर एक जड़ी-बूटी मिलती है। उससे करुणकुमार की बीमारी दूर हो सकती है।'

विश्वंभर सोच में पड़ गया। लेकिन वैद्य की बातों की भनक शबरी के कानों में पड़ गई। क्षण भर तक वह सोचती रही। फिर यह निश्चय करके कि वह जड़ी-बूटी लाएगी और

करुणकुमार को बचाएगी, बड़ी तेज़ी के साथ जंगल की ओर आगे बढ़ी। कुछ ही क्षणों में वह आंखों से ओझल हो गई।

शबरी अपने इस दृढ़ निश्चय को लेकर आगे बढ़ती ही गई। उसे अपने इस रास्ते में अनेक जंगल, पहाड़, नदी-नालों को पार करना पड़ा। कभी-कभी जंगल के हिंस्र पशुओं से बचकर चलती रही तो कभी नदी-नालों में घड़ियालों के मुंह में जाने से अपनी रक्षा करती हुई आगे बढ़ी। जंगल से होकर जाते समय ठोकरें खाने से पैरों में चोट आ गई और खून बहने लगा। छुरी जैसे कांटे पैरों में चुभ जाते थे और असीम पीड़ा होती थी। पैरों में छाले पड़ जाने के कारण असहनीय वेदना से वह तड़प उठी। इस प्रकार तरह-तरह की यातनाएं झेलते हुए आखिर वह उस पहाड़ पर पहुंची और उस बूटी को लेकर वापस लौटी।

शबरी के मन में इस बात का बड़ा संतोष था कि वह इस जड़ी-बूटी से मुनिकुमार को बचाएगी, लेकिन तभी वह मुनि-वाटिका के निकट पहुंचकर देखती है कि विश्वंभर तथा अन्य मुनि करुणकुमार के शव को लेकर बाहर आ रहे हैं। सबके चेहरों पर विषाद की छाया झलक रही है। आश्रम का वातावरण नीरव और करुणापूर्ण प्रतीत हो रहा है। इससे शबरी को यह समझते देर न लगी कि उसका अत्यंत प्रियतम मित्र तथा स्नेही करुणकुमार दूसरी दुनिया का यात्री बन चुका है और उसकी सारी मेहनत तथा आशा-अभिलाषाओं पर पानी फिर चुका है। इस दृश्य को देख शबरी का दिल बैठ गया। उसकी आंखों के सामने शोक का समुद्र उमड़ने लगा। वह अपने स्नेही करुण-कुमार को अन्तिम समय में भी देख न सकी। थोड़ी देर के

पश्चात् करुणकुमार की अर्थी उठी और श्मशान-भूमि की ओर आगे बढ़ी।

२२

शबरों की बस्ती में हलचल मची हुई है। हर कहीं ज़ोरों पर कोलाहल हो रहा है। राहू शबरी के शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए लोगों में उत्तेजना भरने की कोशिश कर रहा है। राहू के चारों तरफ एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई है। वह घोषणा कर रहा है—

'यदि हम लोग शबरी के विचारों का समर्थन करते हैं तो हमें भूख और प्यास से तड़प-तड़पकर मरना होगा। हमारी हालत पहले अच्छी थी जब कि हम राहगीरों को लूटते थे, उनके माल-असबाब लूटकर आराम से अपने दिन काटते थे। वह तो अपने पुरखों का पेशा है। हमारे पुरखे वीर, प्रतापी और शक्तिशाली थे। वे अपनी ताकत के बल पर शेर और हाथियों से लड़ते थे। उनका पेशा तो मर्दों का पेशा था। यह तो औरत ठहरी, आखिर अबला है न? वह लड़ना क्या जाने? इसलिए वह चाहती है कि हम सब लोग जानवरों की तरह घास-फूस खाया करें और कमज़ोर बनें। हमारे कुल की यह रीति रही है कि या तो जान लो या दो। शत्रु से समझौते का सवाल ही नहीं उठता है। यही मर्द का कर्तव्य है। तुम लोग आगे बढ़ो। फिर से हम अपने पुरखों की रीति को चालू रखेंगे।'

लोग उत्तेजित हो जाते हैं और बिना कुछ सोचे-विचारे शबरी से प्रतिशोध लेने के लिए शोरगुल मचाते, चिल्लाते दौड़ पड़ते हैं।

विद्रोही दल हठात् शबर नायक के झोंपड़े पर हमला कर बैठता है। दरवाज़े पर पहुंचकर पहले शबरी का नाम लेकर लोग गालियां देते हैं, चिल्लाते हैं और तालियां पीटते हैं। परिस्थिति को भांपकर वृद्ध शबर नायक भूखे शेर की भांति आग उगलते बाहर आ जाता है। राहू तुरन्त उसके केश पकड़कर धरती पर गिरा देता है और उस वृद्ध की छाती पर सवार होकर बिना किसी प्रकार की दया के उसकी छाती में छुरी भोंक देता है। राहू के शबर नायक को मारते देख गिली बीच में आ जाता है पर राहू भूखे शेर की भांति छलांग मारकर गिली की गरदन पकड़ लेता है और अपने मज़बूत हाथों से उसका गला घोंट देता है। गिली उसी समय ठंडा हो जाता है। उसी समय शबरी के कुछ अनुयायी उस विद्रोही दल का सामना करते हैं। जब दोनों दलों के बीच लड़ाई ठन जाती है और क्षण-प्रतिक्षण ज़ोर पकड़ने लगती है तो शबरी वहां पहुंचकर गरज उठती है, 'इन हत्याकांडों को समाप्त करो।' सब लोग जहां-तहां अपने हथियार फेंककर खड़े हो जाते हैं। शबरी उस भीड़ को संबोधित कर कहती है, 'यदि आप लोग सचमुच शासन-सूत्र को लेना चाहते हैं तो उसे आप लोगों के हाथों में सौंपने के लिए मुझे कोई एतराज नहीं है। लेकिन मैं

यह चाहती हूं कि आप लोग अपने स्वार्थ के वास्ते यह हत्या-कांड न करें। आप लोग स्वार्थ में अन्धे होकर अपने पड़ोसियों का खून पीने के लिए तैयार हो गए हैं। इससे तो पशु ही अच्छे हैं। लेकिन पशु भी तब तक दूसरों की हानि नहीं करते जब तक कि उन्हें हम हानि नहीं पहुंचाते हैं और उन्हें छेड़ा नहीं जाता।' वह यह कह ही रही थी, इतने में उसे अपने पिता का शव पृथ्वी पर लोटते हुए दिखाई दिया। वह शोकातुर हो उस शव पर गिर जाती है। उस समय राहू अपने साथियों को आदेश देता है कि वे शबरी को गिरफ्तार करें और उसे ले जाकर गुफा में डाल दें। रेवती यह देख बहुत प्रसन्न हो जाती है लेकिन शतभिष बहुत व्याकुल हो उठता है।

बहुत समय के बाद ही सही, अपने हाथ में शासन-सूत्र को पाकर राहू बहुत खुश हो जाता है। अब वह अपने बहुत दिनों के अरमान को पूरा करने के विचार से गुफा के निकट पहुंचकर शबरी से मिलता है और उसके सामने अपनी इच्छा प्रकट करता है, 'यदि तुम मुझसे शादी करने के लिए तैयार हो तो मैं तुम्हें वह स्वतंत्रता देने के लिए तैयार हूं जो तुम चाहती हो।' राहू की बातें सुनकर शबरी नागिन की भांति फुफकार उठती है। उसकी इच्छा का विरोध करती हुई वह कहती है, 'यह कभी नहीं हो सकता। तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करने की अपेक्षा मैं मृत्यु को अधिक पसन्द करती हूं। उस स्वतंत्रता से मुझे तथा मेरी प्रजा को भी कोई प्रयोजन नहीं

है जो कि तुम देना चाहते हो ।'

शबरी जो कि आज तक शबर जाति की नायक व रानी थी, अब वह अपनी प्रजा के द्वारा कैदी बनाई गई । राहू अनेक प्रकार से शबरी को समझाता है कि वह उसकी इच्छा की पूर्ति करे, लेकिन शबरी एकदम तिरस्कार करती है । अन्त में विवश हो वह विष्कंभ को बुलाता है और उसे आज्ञा देता है कि वह शबरी को मानव-भक्षक गुफा में डाल दे । यह समाचार गिरिका आड़ में से सुन लेती है ।

२३

विष्कंभ और उसके कुछ साथी शबरी को ले जाकर उस मानव-भक्षक गुफा में डाल देते हैं और उसे एक बहुत बड़ी शिला से मज़बूत रस्सियों से बांधकर चल देते हैं । गिरिका अकेली उस गुफा में प्रवेश करती है । इतने में दूसरे रास्ते से गरज़ते हुए बाघ आता है । उसे देख गिरिका मूर्तिवत् वहीं पर खड़ी हो जाती है । बाघ शबरी के निकट पहुंच जाता है । लेकिन शबरी बिना किसी भय के हिम्मत के साथ खड़ी हो जाती है । बाघ ज़मीन को सूंघता है और शबरी के पास पहुंचकर उसके पैर चाटता है । थोड़ी देर तक शबरी को निर्निमेष देखता है और बिना कुछ हानि किए बाहर चला जाता है । गिरिका एक शिला पर खड़ी दूर से यह सब देखती है । बाघ के गुफा से बाहर जाते ही वह दौड़कर शबरी के पास पहुंच जाती है और उसे बंधन-मुक्त

कर देती है ।

शबरी गिरिका को बहुत-बहुत धन्यवाद देती है । शबरी को वहां से जाते देख गिरिका भी उसका अनुसरण करना चाहती है ; लेकिन इतने में बाघ अपने मुंह में फलों से लदी टहनी लेकर प्रवेश करता है । गिरिका डर के मारे एक शिला की आड़ में कांपती हुई खड़ी हो जाती है । बाघ सीधे वहां पर पहुंच जाता है जहां पर पहले शबरी शिला से बंधी थी । लेकिन शबरी को वहां पर न पाकर वह गरजते हुए बाहर चला जाता है । गिरिका भी शबरी की खोज में दौड़ पड़ती है ; लेकिन तब तक शबरी आंखों से ओझल हो चुकी होती है ।

शबरी बड़ी चिन्ता के साथ चलते-चलते एक गांव में पहुंच जाती है । वहां पर वह शांति के साथ अपना शेष जीवन बिताना चाहती है । उस गांव के लोग शबरी को देखते ही डर के मारे अपने घरों के दरवाज़े बंद कर लेते हैं । उस गांव की एक युवती सुगुणा को यह मालूम हो जाता है कि शबरी गांव में आई हुई है । इसलिए वह शबरी का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ती है । लेकिन उसका पति उसे मना करता है और मजबूरन उसकी बांह पकड़कर घर के भीतर खींच ले जाता है और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करता है । शबरी असहाय हो जन-विहीन उस गली में खड़ी हो जाती है । लोग अपने घरों के झरोखों से बाहर झांक-झांककर देखते हैं । उनमें से एक-दो आदमियों ने बड़ी घृणा के साथ शबरी का परिहास करते हुए कहा :

'यहां से चली जाओ, राक्षसी कहीं की ! डाइन! तुम तो नरभक्षकी हो ! खून चूसने वाली हो! चली जाओ यहां से !

हमें शांति के साथ जीने दो। वरना जान की खैर·····'

शबरी बहुत व्याकुल हो जाती है। बड़ी मूक व्यथा के साथ वहां से चली जाती है।

शबरी धीरे-धीरे चलकर एक तालाब के पास पहुंच जाती है। वह उस तड़ाग के किनारे बैठ जाती है। उसका प्रतिबिंब जल में हंसते हुए दिखाई देता है, मानो वह भी उसका परिहास कर रहा हो। वह अतीतकालीन घटनाओं का स्मरण करती है। उसका मन खिन्न हो उठता है। इतने में उसे कहीं से कर्ण-मधुर आवाज़ सुनाई देती है। वह बहुत ध्यान से उस ध्वनि को सुनती है। कोई गा रहा है। शबरी को उस गीत से कुछ तसल्ली मिलती है। वह तुरन्त उठ खड़ी होती है और उस दिशा की ओर आगे बढ़ती है जिस दिशा से वह ध्वनि आ रही थी।

एक महर्षि अपने आश्रम में एक उच्च आसन पर बैठे बड़ी गंभीरता के साथ अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे हैं। उनके मुख-मंडल पर एक अपूर्व तेज दमक रहा है। देखने में वे कोई दिव्य पुरुष-से लग रहे हैं। उनके सामने कई मुनि और उनके शिष्य बैठे हुए बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। आश्रम का वातावरण बहुत ही शांत और सुहाना प्रतीत होता है। शबरी अपने पैर घसीटते हुए आश्रम के पास पहुंच जाती है। आश्रम के शांत वातावरण को देख उसके पैर ठिठक जाते हैं। इतने में उसकी दृष्टि उस दिव्य पुरुष पर पड़ जाती है, जो कि नेत्र मूंदे गंभीरता के साथ शिष्यों को जन्म-धारण, जीवन और मृत्यु के परम रहस्यों का

परिचय कराते हुए पद्मासन लगाकर बैठे हुए हैं। शबरी का हृदय अनायास ही उस ओर खिंच जाता है। उसके हृदय में कोई एक दिव्य प्रेरणा जगती है। महर्षि अपने शिष्यों को मानव-जीवन का लक्ष्य बताते हुए समझाते हैं, 'वास्तव में मनुष्य की सेवा ही परमात्मा की सेवा है। मानव-जीवन लोगों को बड़े भाग्य से प्राप्त होता है। हमें जीवन-काल में पवित्र आचरण द्वारा परमात्मा को प्राप्त करने की साधना करनी है। मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य मुक्ति है। आत्मा और परमात्मा का मिलन ही मुक्ति है। इन बातों का प्रभाव शबरी पर ऐसा पड़ता है कि वह भी मुनियों का सा जीवन बिताने की मन ही मन प्रेरणा पाती है। वह अपनी सारी कठिनाइयों को भूल जाती है। उसका हृदय अनिर्वचनीय आनन्द से भर उठता है। वह सोचती है कि मुनि के चरणों के निकट पहुंचकर उनसे प्रार्थना करे कि वे उसे एक दासी के रूप में ही सही, स्वीकार करके आश्रम में रहने की अनुमति प्रदान करें। लेकिन उसकी अन्तरात्मा यह स्वीकार करने से धिक्कारती है कि वह पापात्मा है और नीच जाति की है। आखिर वह निराश हो दुविधा में पड़ जाती है तथा जंगल की ओर चली जाती है। धीरे-धीरे एक तालाब के पास पहुंचकर बैठ जाती है और पूर्ण चन्द्रमा को देखती उसमें खो जाती है।

२४

गिरिका मानव-भक्षक गुफा में एक शिला पर पागल-सी बैठी हुई कुछ सोच रही है। राहू डकार लेते शराब के नशे में डगमगाते, बकते हाथ में मशाल लिए गुफा के पास पहुंच जाता है। वह शराब के नशे में मदहोश है। सामने गिरिका को बैठे देख उसे शबरी समझता है। गिरिका भयभीत हो उसकी ओर देखती है। इतने में राहू गिरिका के पास पहुंच जाता है और उसे मज़बूती के साथ अपने आलिंगन में कस लेता है। शराब के नशे में मदहोश राहू प्रलाप करते हुए अपने हृदय के अरमान उसके सामने खोल देता है।

ठीक इसी समय शतभिप और कुछ शबर लोग मशाल लिए हुए गिरिका की खोज में वहां पर पहुंच जाते हैं। राहू के आलिंगन में गिरिका को देखते हैं। राहू उन लोगों के पास पहुंचकर कहता है कि वह सुन्दरता की रानी के साथ विवाह करने जा रहा है। शबर लोग राहू से कहते हैं, 'तुम्हें तो अपने कुल के रिवाज के अनुसार इस गिरिका के साथ शादी करनी होगी।' राहू का सारा होश उड़ जाता है। उसको यह समझते देर न लगी कि उसने शराब के नशे में बड़ी बेवकूफी की है। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि उसपर कुछ ध्यान दिए बिना शबर लोगों ने कहा, 'तुमने गिरिका के शरीर का प्रथम बार स्पर्श किया। इसलिए हमारे कुल की रीति के अनुसार उसके साथ शादी करनी ही होगी।'

राहू की आंखें खुल गई। वह पश्चात्ताप की अग्नि में झुलस उठा।

२५

शबरी तड़ाग के किनारे लेटी हुई है। उसका हृदय अत्यंत व्याकुल है। आसपास का वातावरण शांत है। शीतल समीर वह रहा है। उज्ज्वल ज्योत्स्ना का प्रकाश क्रमशः मन्द पड़ता जा रहा है। आकाश में नक्षत्र दीपशिखाओं की भांति टिमटिमा रहे हैं। चन्द्रमा धीरे-धीरे अस्त होता जा रहा है। समस्त प्रकृति में कलरव होने लगता है। सारा जगत् सुषुप्तावस्था से जागृति की करवटें ले रहा है। कहीं से मुर्गी की बांग की ध्वनि शबरी के कानों में गूंज उठती है। शबरी की आंखें खुल जाती हैं। वह चौंककर इधर-उधर देखती है। उस विशाल प्रकृति के बीच वही, सृष्टि का एकमात्र प्राणी, एकांत अस्तित्व का अनुभव कर रही है। ऊपर विनील आकाश दिगंत तक फैला हुआ ईश्वर की महानता एवं विचित्रता का परिचय दे रहा है तो नीचे धरती माता समस्त संसार का भार अपनी छाती पर लिए मानो ऐसे दिखाई दे रही है कि अपने सेवाव्रत रूपी महान् कर्तव्य के पालन में निरत हो। शबरी का हृदय अनिर्वचनीय आनन्द से नाच उठता है। प्रकृति, गगनमंडल, ईश्वर तथा प्राणी इनके बीच कौन ऐसा गुरुत्व-आकर्षण है जो कि इनकी स्थिति. अस्तित्व तथा मिलन को बनाए रखने में सफल होता

हो। इस विशाल विश्व में प्राणी का अस्तित्व एक बिन्दु के समान है। ईश्वर अनंत सागर है। अनेक बिन्दुओं के संयोग से सागर वनता है अथवा स्वत:सिद्ध जलराशि से भाप्पपूरित हो उड़कर वर्षा के रूप में परिवर्तित हो बिन्दु का रूप धारण करता हो। परन्तु इन दोनों का संयोग-वियोग अवश्यंभावी है। बिन्दु का अस्तित्व नहीं के बराबर है। एक हवा के झोंके मात्र से बिन्दु का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। बिन्दु की चरमावस्था समुद्र में आश्रय पाने में ही है। वही उसके लिए आदि और अन्त है। तो प्राणी के जीवन का अन्तिम लक्ष्य या केन्द्रबिन्दु वही ब्रह्म है जिसने प्राणी में चेतना फूंक दी है। क्या मैं आश्रय के बिना रह सकती हूं? वृक्ष के बिना जैसे छाया का अस्तित्व नहीं है वैसे ही ब्रह्म के बिना जीवन का अस्तित्व भी नहीं है। इस ज्ञानोदय के उपरांत शबरी दैवी भावनाओं से प्रेरित हो आगे बढ़ी। उसका मुखमंडल दिव्य ज्ञान से दमक रहा था। वह संसार की माया, ममता के बंधनों को तोड़ चुकी थी। उसमें ब्रह्म-ज्ञान-संबंधी जिज्ञासा हिलोरें मार रही थी।

उसी समय वहां एक दिव्य पुरुष आ निकले। उनके मुखमंडल पर ब्रह्मज्ञान का तेज दमक रहा था। शबरी का हृदय भक्ति-भाव और श्रद्धा से अनायास ही उनकी ओर झुक गया। शबरी के मन में एक ऐसी प्रेरणा जगी कि वह तत्काल ही वृक्ष की आड़ में बैठी यह देखने लगी कि वे महात्मा कहां से आए हैं और जा कहां रहे हैं। वे दिव्य पुरुष नेत्र मूंदे हाथ में कमंडल लिए और गेरुए वस्त्र धारण किए हुए थे। उनका शरीर बलिष्ठ तथा तेजोमय था। उनके मखमंडल पर मंदहास फट रहा था। वे

बड़ी धीमी गति से सरोवर की ओर आगे बढ़े । सरोवर में स्नानादि कर्मों से निवृत्त हो उसी मार्ग से चले जिस मार्ग से वे आए थे । शबरी ने उनका पीछा किया। शबरी का आना उस योग-पुरुष को ज्ञात नहीं था। अन्त में वे महात्मा प्रकृति का निलय कहे जा सकने वाले तथा शांति के आवास एक आश्रम में पहुंचे जहां सुन्दर पुष्प खिले हुए थे। उनकी सुगंधि चतुर्दिक् फैले महक रही थी । उसपर भ्रमर गुंजार कर रहे थे। हरी दूब उगी हुई थी । हिरण और मृगशावक एक-दूसरे का चुंबन करते छलांगें मार रहे थे। देखने में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो या तो वह नंदनवन ह अथवा स्वर्ग का एक टुकड़ा !

शबरी ने अनुभव किया कि इस पथरीले मार्ग पर पैदल चलने से ऐसे महात्मा के कोमल चरणों में छाले पड़ते होंगे । इसलिए उसका हृदय बहुत दुःखी हुआ । उसने सोचा कि उनको इस कठिनाई से मुक्त कैसे करे। चारों तरफ जब उसने अपनी दृष्टि दौड़ाई तो जंगल में खिले हुए कोमल फूलों पर उसकी दृष्टि जा अटकी । मानो वे उस दिव्य पुरुष के पद-रज से पवित्र होने की लालसा से खिलखिलाते उसका स्वागत कर रहे हों । फूल से कोमल वस्तु प्रकृति में और संभव नहीं है। इसलिए दूसरे दिन प्रातःकाल ही शबरी ने कानन में जाकर फूल तोड़े और उन्हें आश्रम से लेकर तड़ाग तक के मार्ग में बिछा दिया । वह एक शिला की आड़ में खड़ी बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रही थी कि वे महात्मा उस मार्ग से गुज़रेंगे तथा वे बड़ी प्रसन्नता का अनुभव करेंगे । अप्रयत्न ही शबरी का मन उस महात्मा के प्रसन्न वदन को देखने को व्याकुल हुआ । शबरी उसी उधेड़-

बुन में खड़ी थी कि कहीं से हुंकार की कर्णमधुर ध्वनि उसके कान के पर्दों में गूंज उठी। शबरी का हृदय अत्यन्त सुख का अनुभव करने लगा। तन्मय हो वह प्रतिमा-सी खड़ी रही। इतने में शबरी ने अनुभव किया कि किसी छाया का स्पर्श उसके शरीर पर हो रहा है। नेत्र खोलकर देखती है कि वह दिव्य पुरुष अपने शिष्यों को साथ लिए हुए सरोवर की ओर पग बढ़ाते चले जा रहे हैं। शरीर का शरीर गद्गद हो उठा। उसके नेत्रों में आनन्द के वाष्प छलक आए मानो उसकी अनेक वर्षों की साध पूरी हो गई हो।

प्रतिदिन वह महर्षि उसी पथ से प्रातःकाल सरोवर में स्नान और प्रार्थना आदि के लिए जाते, अपने कृत्यों से निवृत्त होकर वापस लौटते। इधर कुछ दिनों से उस मार्ग पर मुलायम फूल बिछे वे देख रहे थे। परन्तु उन्होंने कभी उस ओर ध्यान नहीं दिया। एक दिन उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा, 'इस पथ पर प्रतिदिन कौन फूल बिछा जाता है? तुम लोगों को कुछ पता है?' शिष्यों ने तुरन्त उत्तर दिया, 'गुरुदेव! हम ही लोग यह सब करते हैं ताकि आपके कोमल चरणों को कोई तकलीफ न हो।' महर्षि मुस्करा दिए।

एक दिन प्रातःकाल शबरी के उठने में ज़रा विलंब हुआ। जल्दी-जल्दी फूल की खोज में वह इधर-उधर दौड़ी। लेकिन कहीं उसे फूल उस दिन नहीं मिले। आखिर वह चिंता-मग्न हो सोच ही रही थी कि इतने में उसकी दृष्टि सरोवर पर पड़ी। सरोवर में यत्र-तत्र लाल-लाल फूल खिले सुन्दर लग रहे थे। तुरन्त वह सरोवर में उतर पड़ी और फूल चुनकर

अपनी साड़ी में लिए हुए जल्दी-जल्दी वह आश्रम के निकट पहुंची। आश्रम के सिंहद्वार से लेकर तड़ाग तक को जाने वाले पथ पर फूल बिछाते हुए द्रुतगति के साथ आगे बढ़ी जा रही थी।

चारों तरफ कुहरा छाया हुआ था। अभी तक आश्रम के लोग सो रहे थे। आज महर्षि की आंखें भी बड़ी देर से खुलीं। तुरन्त उन्होंने अपने शिष्यों को जगाया और उन्हें साथ लेकर सरोवर की ओर चल पड़े। उस कुहरे में उन्होंने देखा कि कोई प्राणी पथ पर कमल के फूल तथा पत्ते बिछाते चला जा रहा है। महर्षि ने तो उसे देखा, लेकिन शिष्यों का ध्यान उस ओर नहीं गया। महर्षि ने अपने शिष्यों से पूछा, 'तुम लोगों ने आज फूल क्यों बदल दिए हैं ?'

कर्ता ने कहा, 'गुरुदेव! आपके पवित्र चरणों के लिए ये फूल अधिक मुलायम मालूम होते हैं। इसीलिए हमने सोचा कि आज से हम कमल के फूल ही बिछाया करें!'

झट क्रिया ने कहा, 'गुरुदेव! हम लोग बड़ी कठिनाई के साथ इन फूलों का संग्रह कर सके······'

महर्षि के अधरों पर मंदहास नाच उठा।

सरोवर में से फूल चुनते समय शबरी भीग गई थी। वह कांपती, दांत कटकटाती पथ पर फूल बिछाकर, देरी के लिए पछताते हुए अपने मार्ग पर चली गई। उसे मालूम नहीं था कि महर्षि उसी समय उस मार्ग से आ रहे हैं और उन्होंने उसे देख लिया है।

शबरी पथ पर फूल बिछाते आखिर सरोवर के निकट पहुंची। वह थक गई थी। इसलिए सरोवर के किनारे बैठकर

सुस्ताने लगी । इतने में उसने देखा, दो चरण उसकी तरफ आगे बढ़े चले आ रहे हैं और कुछ ही क्षणों में उसके सामने रुक गए। वह चकित रह गई। उसने अपना सिर उठाकर देखा, उसके सामने मातंग महर्षि खड़े मुस्करा रहे हैं। उस मुस्कराहट में विश्वव्यापी पवित्र प्रेम, दया, सहानुभूति, स्नेह, और करुणा आदि उत्तम गुणों का आभास हो रहा है। महर्षि के तीनों शिष्यों के चेहरे पीले पड़ गए थे। शबरी ने ऐसा अनुभव किया मानो उससे कोई गलती हो गई हो। और वह भागने की कोशिश करने लगी। परन्तु महर्षि ने उसे रोका। उसे अपने पास बुलाया और कहा, 'बेटी, डरो मत। तुम्हारे सभी पाप धुल गए हैं। तुम उस सर्वशक्तिमान् ईश्वर की अब दुलारी पुत्री हो गई हो। मेरे साथ आश्रम में चलो। आज से तुम मेरी शिष्या हो...... ।'

शबरी अपार हर्ष और अनिर्वचनीय सुख का अनुभव करते महर्षि के चरणों पर गिर पड़ी। उस वृद्ध तपस्वी ने शबरी की बांह पकड़कर ऊपर उठाया और उसके आंसू पोंछे।

२६

मातंग महर्षि अपने साथ शबरी को आश्रम में ले आते हैं और शांति के साथ आश्रम में रहते हुए आध्यात्मिक साधना करने की आवश्यकता समझाते हैं। उसे विधिवत् एक शुभ मुहूर्त में दीक्षित कर अपनी शिष्या बनाते हैं। उसे निर्भय हो वहां पवित्र जीवन बिताते हुए आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का सुझाव

देते हैं। तदुपरान्त आश्रमवासिनी बाल-विधवा सुभाषिणी का परिचय कराते हैं। आश्रम में उन दोनों को अपने-अपने कार्यक्रम का बोध कराते हैं। वे दोनों आश्रम में अपने कर्तव्यों के पालन में निमग्न हो जाती हैं।

दूसरे दिन प्रातःकाल के समय मुनिवाटिका में मुनियों का समावेश प्रारंभ हुआ। उसमें शबरी के आगमन पर चर्चा करने का निर्णय हुआ। कुछ मुनियों ने कहा कि बुढ़ापे में ज्ञानी महात्मा मातंग का दिमाग उलटता जा रहा है। यह सब वृद्धावस्था के कारण ही है। कुछ लोगों का कथन था कि शबरी मुनि-समाज को विनष्ट करने के लिए यहां आई है। उसने पहले से ही अपनी दुःख-गाथा का परिचय देकर चालाकी से ऐसी योजना बनाई जिससे मातंग महर्षि को उसपर दया आई और उन्होंने उसे आश्रय दिया। इसपर विश्वम्भर ने कहा, 'निम्न-जाति की स्त्री के आगमन से हमारी पवित्र मुनिवाटिका अपवित्र हो गई है। इसे हमें कदापि सहन नहीं करना चाहिए।' अन्त में सभी मुनि यह निश्चय करते हैं कि वे सब मातंग मुनि से इस संबंध में मिलेंगे तथा उन्हें अपने-अपने सन्देहों का परिचय देकर किसी न किसी तरह शबरी को आश्रम से भगा देने का प्रयत्न करेंगे। लेकिन प्रश्न यह उठा कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे ? इस कार्य के लिए विश्वम्भर नियुक्त हुए। इसपर कर्ता कर्मा और क्रिया बहुत प्रसन्न हुए।

विश्वम्भर मुनि समाज को साथ लिए हुए मातंग मुनि के पास पहुंच जाते हैं। मातंग महर्षि अपनी पूजा समाप्त करके बाहर आते हैं और अपने निवास के भीतर सबका स्वागत करते

हैं। परन्तु विश्वंभर मातंग महर्षि का निमंत्रण अस्वीकार करते हुए कहते हैं, 'आपने शबरी को आश्रम में आश्रय देने में दूर-दर्शिता का परिचय नहीं दिया है। इसलिए शबरी को तुरन्त आश्रम से निकाल दीजिए, तभी हम आपकी आज्ञा का पालन कर सकते हैं।'

मातंग महर्षि बड़े विनय के साथ बोले, 'क्यों ? उसे तो आश्रय दिया गया है। आश्रय देकर अपने वचन का भंग करना धर्म के विरुद्ध है। फिर से एक असहाय प्राणी को निराश्रय और असहाय बनाना मैं कभी स्वीकार नहीं कर सकता।'

'मुनिवाटिका में शबरी के आगमन से उसकी पवित्रता नष्ट हो गई है।' यह इलज़ाम लगाते हुए अन्त में विश्वम्भर कहते हैं, 'आखिर शबरी का सारा जीवन पाप-पंक में बीता है, इसलिए उसके प्रवेश-मात्र से ही आश्रम का सारा वातावरण कलुषित हो सकता है।'

मातंग महर्षि ने मंदहास करते हुए कहा, 'वह कभी पापिनी हुई होगी लेकिन उस समय वह यह नहीं जानती कि पाप क्या चीज़ है। उसने अपने दोषों के लिए पश्चात्ताप किया। इसलिए उसके पाप इस प्रकार धुल गए जैसे कि सूर्य-किरणों के आगमन से कुहासा नष्ट हो जाता है। अब तो वह पापिनी नहीं हो सकती। सच कहना हो तो वह इस समय हम सबसे भी कहीं पवित्र है . . .'

विश्वंभर के क्रोध का पारा चढ़ गया। वे गरजकर बोले, 'तो आप चाहते हैं कि हम लोग निम्न जाति की एक चंडालिनी के साथ रहें ?'

मातंग महर्षि ने बड़ी ही सहनशीलता और शांति के साथ कहा, 'विश्वंभर, सबर करो। पहले यह तो बताओ कि निम्न जाति से तुम्हारा क्या मतलब है ? निम्न जाति शब्द का जन्म कैसे हुआ ? सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने हम सबको पवित्र उद्देश्य से ही जन्म दिया है। हम सब उनकी संतान हैं। ऐसी हालत में उच्च और नीच का प्रश्न ही कहां उठता है ? यदि निम्न जाति शब्द को हम अधिक प्रधानता देना चाहते हैं तो यह भी सत्य है कि हम सब निम्न जाति के हैं···हमारे दिल व दिमाग निम्न जाति के हैं। हमारे शरीर भी निम्न जाति के हैं। सुन्दर कमल जो कि कीचड़ से निकलता है, पवित्र माना जाता है क्योंकि उसमें देवी लक्ष्मी का निवास होता है। हम जो धान और कंदमूल फल इत्यादि खाते हैं वे सब कीचड़ में से पैदा हुए हैं। हम लोग इस धरती में माता के गर्भ से पैदा होकर आते हैं। वह आखिर क्या है ? रक्त, मांस और कीचड़ ही तो···विश्वंभर। इस विश्व में निम्न जाति कहीं नहीं है। यदि तुम्हारा दिमाग पवित्र है तो समस्त प्राणी भी तुम्हें पवित्र ही प्रतीत होंगे।···'

विश्वंभर निरुत्तर हो गए। बाकी मुनियों ने भी यह अनुभव किया कि मातंग महर्षि से चर्चा चलाना व्यर्थ है। वे सब अपमान का अनुभव करते हुए वहां से चले गए।

शबरी ने यह सब सुन लिया था। उसे बड़ी व्यथा हुई। उसने सोचा कि उसके आने से आश्रम की शांति भंग हो गई है। शबरी ने मातंग महर्षि से अनुमति मांगी कि उसे इस पवित्र आश्रम को छोड़कर कहीं जाने की अनुमति प्रदान करें। मातंग महर्षि ने शबरी को धीरज बंधाते हुए कहा, 'तुम व्याकुल

मत होओ। जब तक तुम्हारा दिल पवित्र है और जब तक परमात्मा पर तुम्हारा विश्वास है तब तक तुम्हें चिंतित होने की कोई ज़रूरत नहीं।'

कर्ता, कर्मा और क्रिया इस अवांछित परिणाम पर दुविधा में पड़ गए। उन लोगों ने सोचा था कि मुनि विश्वंभर शबरी को आश्रम से निकालने में सफल होंगे। परन्तु परिस्थिति ने दूसरा ही रूप धारण किया। थोड़ी देर तक वे यह सोचते रहे कि वे मातंग महर्षि का साथ दें अथवा विश्वंभर के साथ चले जाएं। वे आखिर कुछ निर्णय करने में असमर्थ हो वहीं रह गए।

आश्रम का कार्यक्रम पूर्ववत् शांति के साथ चल रहा है। मातंग महर्षि शबरी को तारक नाम की अद्भुत शक्ति का परिचय कराते हैं। इसके पश्चात् वे रामावतार का रहस्य और उनके जन्म का विस्तृत परिचय कराते हैं। यह श्लोक समझाते हैं—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

शबरी रामकथा बड़े ध्यान से सुनती है। अप्रत्यक्ष रूप से वह अपने हृदय में रामचन्द्र की पवित्र मूर्ति को बसा लेती है।

एक दिन की घटना है कि हठात् कर्ता, कर्मा और क्रिया विश्वंभर के पास पहुंच जाते हैं और उन्हें सूचित करते हैं कि शबर लोग एक मुनिबालक को उठा ले गए हैं। विश्वंभर के

---

१. भगवान् ने कहा है: साधुओं की रक्षा, दुष्टों के संहार तथा धर्म की स्थापना के लिए मैं युग-युग में जन्म धारण करता हूं।

क्रोध की सीमा न रही। वे यह कहते हुए मातंग महर्षि के कुटीर की ओर आगे बढ़े कि यह सब शबरी की ही करतूत है। आखिर मातंग मुनि से मिले और उन्हें यह सूचित किया कि शबर लोगों के द्वारा आश्रम का एक मुनिबालक उठा लिया गया है। उसका मूल कारण शबरी ही है। वरना ऐसा साहस-कार्य वे कदापि नहीं कर सकते।'

यह सुनकर शबरी बहुत दुःखी होती है और यह शपथ लेती है कि चाहे अपनी जान पर खेलना पड़े पर वे मुनि के बालक को वापस ले आएगी। तुरन्त वह शबर बस्ती की तरफ तेज़ी के साथ चल देती है।

२७

शबर बस्ती में कालीमाई की मूर्ति के समक्ष शबर लोग एकत्र हुए हैं। उनमें से अधिकांश लोग मधूक-मधु का सेवन कर लोट-पोट रहे हैं। कुछ लोग चिल्ला रहे हैं। कुछ लोग गाजे-बाजे के साथ उछलते-कूदते कोलाहल कर रहे हैं। देखने में ऐसा लगता है मानो वहां पर कोई उत्सव हो रहा है। बूढ़े, बालक और जवान सबके चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही है। काली माता की मूर्ति के सामने एक वृत्ताकार में कुछ लोग खड़े हैं, बीच में कुछ जवान नाच रहे हैं। मूर्ति के सामने वध्य-शिला से एक बालक बंधा हुआ है। उसके भाल पर कुंकुम की बिन्दी लगी हुई है। उसके गले में नीम के पत्तों की माला पहनाई

गई है। इसके बाद धूपदीप तथा नैवेद्य चढ़ाकर बालक को मूर्ति के सामने लाया गया। बधिक को राहू आदेश देता है कि वह उस बालक की बलि चढ़ाए। बधिक ने तलवार ऊपर उठाई थी कि इतने में 'ठहरो, ठहरो' चिल्लाती हुई शबरी ने वहां प्रवेश किया। और राहू की तरफ मुड़कर उसने निवेदन किया कि उस बालक के स्थान पर उसका वध किया जाए और उस बालक को सकुशल मुनिवाटिका में भेज दिया जाए। परन्तु राहू ने इसे स्वीकार नहीं किया। बल्कि अपने कार्य को भंग करते देख वह क्रोध से पागल हो उठा। उसने अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि वे लोग शबरी को वध्य-शिला से बांध दें। लोगों ने शबरी को वध्य-शिला से बांध दिया। शबरी ने तारक नाम का उच्चारण करते हुए वध्य-शिला पर अपना सिर झुकाया। वधिक ने अपनी तलवार ऊपर उठाई। पल भर में वह शबरी के कंठ को पार करने ही वाली थी कि इतने में हथिनी 'शांति' जंगल के विभिन्न प्रकार के जानवरों का दल अपने साथ लिए हुए शबर लोगों पर धावा बोल उठी। शबर लोग अपनी जान लेकर इधर-उधर भाग गए। इस तरह शबरी और मुनिबालक दोनों बाल-बाल बच गए। शतभिष जो कि अब तक कालीमाता की मूर्ति के पीछे छिपा था वह बाहर आया और शबरी को बंधन-मुक्त किया। शबरी ने शतभिष को धन्यवाद दिया। वह मुनिबालक को अपने साथ लिए मुनिवाटिका पहुंची।

शबरी ने आश्रम पहुंचकर विश्वम्भर तथा अन्य मुनियों के हाथों में उस मुनिबालक को सौंप दिया। वे सब लोग आश्रम

में बड़ी उत्सुकता से शबरी और उस मुनिबालक की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन उन्हें विश्वास नहीं था कि शबरी उस मुनि-बालक को साथ लाएगी । क्योंकि अब तक बालक का वध हो हो चुका होगा। अब सहसा मुनिबालक को अपने सामने देख वे विश्वास नहीं कर सके। वे कहने लगे कि यह तो जादूगरनी शबरी की करामात है। इसने वैसे ही एक बालक की अपने जादू से सृष्टि की होगी। अन्त में उस बालक को लेकर वे लोग चले गए। शबरी का हृदय घायल हो जाता है क्योंकि उन लोगों ने शबरी की अच्छाई को भी सन्देह की दृष्टि से देखा था। लेकिन महर्षि मातंग तसल्ली देते हुए कहते हैं, 'हमेशा अन्त में अच्छाई की ही जीत होती है। हो सकता है कि दुनिया के लोगों को समझाने के लिए देवता अच्छाई की एक बार कठिन परीक्षा लें।'

शबरी मातंग महर्षि की बातें सुनकर सब कुछ भूल जाती है। इतने में महर्षि की पूजा का समय हो जाता है। शबरी पूजा का सारा प्रबन्ध कर देती है । हथिनी 'शांति' फूलदान आदि लाकर दे देती है। महर्षि पूजा में निमग्न हो जाते हैं।

२८

आश्रम के एक कोने में कर्ता, कर्म और क्रिया एक स्थान पर बैठे आपस में शबरी के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे हैं। वे यह अनुभव करते हैं कि उनके गुरुदेव सभी रहस्यपूर्ण शक्तियों का

परिचय केवल शबरी को ही कराते हैं। उन्हें उचित आध्यात्मिक शिक्षा न देकर केवल शबरी के प्रति ही पक्षपात दिखा रहे हैं। आखिर उसका कारण क्या है ? वे तो बहुत पहले से ही उनके आश्रम में रह रहे हैं। शबरी तो हाल ही में आई है। इसपर बहुत देर तक चर्चा होती है। अन्त में कर्मा कह उठता है, 'अरे भाई ! आखिर में उसका रहस्य समझ गया।'

कर्ता और क्रिया बड़ी उत्सुकता से पूछने लगते हैं, 'क्या है ? हम भी तो जानें।'

कर्म कहता है, 'ओह ! तुम लोगों की तो मिट्टी की खोपड़ियां हैं। कुछ दिमाग में आए भी तो ! शबरी अत्यन्त रूपवती है···उसपर जवानी का रंग चढ़ रहा है। उसके अंग-प्रत्यंग पुष्ट हैं, वह स्वस्थ है। यही कारण है कि हमारे गुरुदेव उसको बहुत चाहते हैं। आदमी जिसको दिल से चाहता है, उसे सारे रहस्य बताने में संकोच नहीं करता। इसपर अपना प्रभाव डालकर अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता है। ही ही ही···'

मातंग महर्षि पुन्नाग वृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं और कुछ सोचते हुए मंदहास कर रहे हैं। इतने में वहां पर शबरी पहुंच जाती है। उसके हाथ में एक गगरी है। अपने गुरुदेव को हंसते हुए देख वह पूछ बैठती है, 'गुरुदेव ! क्या बात है।'

मातंग महर्षि उत्तर देते हैं, 'जल्दी आओ। हम लोग आज रामायण का गान शुरू करेंगे।' शबरी बहुत प्रसन्न हो वहां से पानी लाने चल देती है।

कर्ता, कर्मा और क्रिया ताड़पत्र-ग्रन्थों को अपने साथ लिए हुए वहां पर आते हैं। वे सब महर्षि के सामने बैठकर निवेदन करते हैं, 'गुरुजी! क्या हम लोग रामायण का गान शुरू करें...'

मातंग मुनि कहते हैं, 'शबरी के सरोवर से लौटने तक प्रतीक्षा करो...'

वे तीनों शिष्य एक-दूसरे की तरफ प्रश्नार्थक दृष्टि से देख लेते हैं।

शबरी सरोवर के पास अपने हाथ में गगरी लिए खड़ी हुई है। वहां पर मुनिपत्नियां सरोवर से पानी भर रही हैं। और अप्रत्यक्ष रूप से शबरी का उपहास कर रही हैं। शबरी उन सब बातों पर ध्यान दिए बिना शांति के साथ प्रतीक्षा कर रही है।

इतने में मुनिपत्नियों का दूसरा दल वहां पर पानी भरने आता है। पहला दल सरोवर से निकलने की तैयारी में था। शबरी सरोवर में उतर जाती है और अपनी गगरी भरने लगती है। मुनिपत्नियों ने गुस्से में आकर उसपर हमला किया तथा उसकी गगरी को फोड़ दिया।

आश्रम में ध्यानमग्न बैठे मातंग महर्षि अपनी दिव्य दृष्टि से यह सब देख रहे हैं।

इधर शबरी की गगरी के टुकड़े अपने-आप जुड़ जाते हैं। मुनिपत्नियां यह देख आश्चर्य-चकित हो जाती हैं। वे शिला

प्रतिमाओं की भांति खड़ी रह जाती हैं। समय पाकर शबरी पानी भरती है और वहां से चल देती है।

शबरी आश्रम लौटकर भीतर चली जाती है। मातंग महर्षि शबरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उसके आते ही रामायण का गान प्रारंभ किया जाए। कर्ता, कर्मा और क्रिया प्रतीक्षा करते ऊब उठते हैं। उनके कलुषित मन ईर्ष्या और द्वेष से भर जाते हैं। शबरी बाहर आती है और मातंग मुनि के पास पहुंचकर कुछ दूर पर बैठ जाती है। महर्षि उसे अपने पास बुलाते हैं। शबरी भी उनके निकट बैठ जाती है। कर्ता, कर्मा और क्रिया एक-दूसरे की तरफ देखते हैं। महर्षि मुस्करा उठते हैं और रामायण का गान प्रारंभ करते हैं।

(बाल्मीकि रामायण से एक गीत)

शबरी उस गान-माधुर्य में तन्मय हो जाती है। गान के समाप्त होते ही सब लोग उच्च स्वर में शान्ति के साथ तारक नाम का उच्चारण करते हैं।

कर्ता, कर्मा और क्रिया गान और तारक नाम के उच्चारण तो करते हैं लेकिन उनके चित्त चंचल हैं। उनके हृदय में तरह-तरह की बातें उठ-उठकर विलीन होती जा रही हैं। हठात् वे यह अनुभव करते हैं कि आश्रम में आग लग गई है। इसलिए वे उस कुटीर की ओर यह चिल्लाते हुए दौड़ पड़ते हैं।

कोई कहता है, 'मेरी पुस्तकें जल गईं। मेरी चीज़े राख हो गईं।' इत्यादि। परन्तु शबरी वहीं पर स्थिरचित्त हो बैठी

रहती है। वह परिपूर्ण हृदय तथा शुद्ध मन से तारक नाम का उच्चारण करती जा रही है। बाह्य जगत् की चिंता को वह भूल बैठी है।

तीनों शिष्य उस कुटीर के पास पहुंच जाते हैं। लेकिन वे इसलिए आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि वहां पर न तो आग लगी हुई थी और न ज्वालाएं ही उठ रही थीं। वे यह अनुभव करते हैं कि यह सब उनका भ्रम था। लज्जित हो वे वहां से बाहर चल देते हैं।

तीनों शिष्य अपने गुरुदेव के निकट पहुंच जाते हैं। मातंग मुनि अपना ध्यान समाप्त कर नेत्र खोलते हैं। शबरी को अपने सामने स्थिर दृष्टि से ध्यानमग्न बैठी देख उससे पूछते हैं, 'तुम अपनी चीज़ों को लाने के लिए क्यों दौड़ नहीं पड़ी ?'

शबरी उत्तर देती है, 'भगवान्, मेरे पास जो कुछ संपत्ति है वह सब या तो मेरे दिल में है या मेरे दिमाग में। उसमें न तो आग लग सकती है और न ज्वालाएं उसे जला सकती हैं।...'

तीनों शिष्यों के सिर झुक जाते हैं। इधर-उधर की चर्चा के बाद मातंग महर्षि अपने शिष्यों को संबोधित कर यह सूचित करते हैं, 'मुझे हिमालय के ऋषि-मुनियों से एक यज्ञ में सम्मिलित होने का निमंत्रण प्राप्त हुआ है। मैं कल प्रातःकाल इस आश्रम को छोड़ उस यज्ञ में भाग लेने के लिए हिमालय के लिए प्रस्थान करने वाला हूं।'

मातंग महर्षि का हिमालय जाने का समय हो गया है। वे

शबरी को अपने पास बुलाकर आदेश देते हैं कि उनकी अनुपस्थिति में वह सुभाषिणी की सहायता से सारे आश्रम की देखभाल किया करें। जाते वक्त हथिनी 'शांति' की पीठ प्रेम से निहारते हैं और उसकी आंखों में वात्सल्य भरी एक दृष्टि दौड़ाकर वहां से प्रस्थान करते हैं।

२९

रात का समय है। समस्त प्रकृति शांत है। शुभ्र ज्योत्स्ना की किरणें चारों तरफ छिटक रही हैं। सुभाषिणी और आश्रम का एक युवा विद्यार्थी चन्द्रा एक पुन्नाग वृक्ष के नीचे बैठे वार्तालाप कर रहे हैं। शबरी वहां पर आ जाती है। उस युवा जोड़ी को एकांत में एक वृक्ष के नीचे बैठे बात करते देख वह ठिठक जाती है। वहीं मूर्तिवत् खड़ी वह उनका वार्तालाप ध्यान से सुनती है।

चन्दा सुभाषिणी के हाथ को अपने हाथ में लिए हुए कह रहा है, 'मैं उन मानव-निर्मित धर्मों का उल्लंघन कर सकता हूं। प्रिये, तुम दुःखी मत होओ। तुमसे मैं अवश्य विवाह करूंगा।' सुभाषिणी उत्तर देती है, 'लेकिन हमारा भविष्य क्या होगा? तुम्हारे माता-पिता क्या हम लोगों को अपने घर में आने देंगे? हम लोग उस समाज में विवाह-सूत्र में बंधकर नहीं रह सकते हैं...'

'क्यों नहीं, यदि हम दृढ़ चित्त से निश्चय करते हैं तो ऐसी

कोई शक्ति नहीं जो कि हमारे दिलों को अलग कर सके।'

'परन्तु हमारे इस प्रयत्न में विघ्न तो उपस्थित कर सकते हैं न ?'

दोनों अचानक शबरी को कुछ दूर खड़ी इस वार्तालाप को सुनते देख सहम जाते हैं। चन्द्रा उठ खड़ा हो जाता है और वहां से खिसक जाता है। शबरी सुभाषिणी से मिलती है और उससे पूछती है, 'चन्द्रा यहां से क्यों चला गया ?'

सुभाषिणी की आंखें छलछला उठीं। शबरी उससे गाढ़ालिंगन कर कहती है, 'बहिन, रोती क्यों हो ? सच बताओ। मैं तुम्हारी मदद करूंगी...'

सुभाषिणी शबरी के मुखमंडल की ओर देखकर कहती है, 'मेरा दुर्भाग्य...मैं एक विधवा हूं...'

शबरी समझने भी नहीं पाती है कि वह क्या कह रही है। वह चकित होकर पूछ बैठती है—'इस छोटी-सी अवस्था में ?'

सुभाषिणी ने ठंडी सांस लेकर कहा, 'यह सब विधि की विडंबना है।'

'बहन ! छिपाओ मत। मुझसे सारी बातें कहो। मैं कोई पराई नहीं हूं। तुम कैसे विधवा बन गई ?' —शबरी ने पूछा।

'मैं जब आठ साल की बालिका थी उस समय मेरे पिताजी ने एक अस्सी साल के बूढ़े के साथ मेरा विवाह किया। मेरे पिताजी एक गरीब ब्राह्मण थे। वे धर्म पर अधिक विश्वास रखते थे। उन्हें इस बात का बड़ा डर था कि यदि मैं नौ साल की हो जाऊंगी तो वे कन्यादान-फल से वंचित रह जाएंगे। उन

दिनों सामाजिक परिस्थितियां बहुत खराब थीं। उस समाज में अन्तर्वर्ण-विवाह नहीं होते थे। उनके सामने कोई दूसरा मार्ग नहीं था इसलिए विवश हो मेरे पिताजी ने उस वृद्ध के साथ मेरा विवाह किया। मेरे विवाह के पांच दिन बाद ही मेरे पतिदेव का देहांत हो गया और मैं विधवा बन वैठी। यह मेरी विषादपूर्ण कहानी है। इस घटना पर दुःखी हो मेरे माता-पिता भी कुछ ही दिनों में माया की काया को छोड़कर संसार से उठ गए।' ठंडी सांस लेकर सुभाषिणी ने अपनी करुण कहानी समाप्त की।

सुभाषिणी की करुण कहानी को सुन शबरी के नेत्र सजल हो उठे। शबरी ने सुभाषिणी के साथ गाढ़ालिंगन किया और उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, 'तुम व्याकुल मत होओ। चन्द्रा के साथ मैं तुम्हारा विवाह करा दूंगी। तुम उससे प्रेम करती हो न?' शबरी ने उसे वचन दिया।

सुभाषिणी लजा गई।

एक शुभ मुहूर्त में शवरी ने सुभाषिणी और चन्द्रा का विवाह सरल ढंग से आश्रम के भीतर संपन्न किया। उसमें कर्ता, कर्मा और क्रिया तथा आश्रम के कुछ अन्य विद्यार्थियों ने भाग लिया।

विधवा सुभाषिणी और चन्द्रा के विवाह का समाचार कर्ता, कर्मा और क्रिया के द्वारा पाकर विश्वम्भर आग-बबूला हो उठा। वह क्रोध में पागल था। उच्च स्वर में गरजते हुए उसने कहा, 'ओह! पागलपन की भी कोई सीमा होती है। डाइन शबरी ने कितने साहस के साथ धर्म को अपने हाथों में

ले रखा है। हम लोग चुप हैं। इसलिए उसका हौसला बढ़ता जा रहा है। मैं उसे ठीक किए देता हूं।' यह कहते विश्वम्भर मातंग आश्रम की ओर आगे बढ़ा। उसके साथ कुछ मुनि भी हो लिए। कर्ता, कर्म और क्रिया चुपके से खिसक गए।

३०

विश्वम्भर कुछ मुनियों को साथ लिए मातंग महर्षि के कुटीर के पास पहुंच जाते हैं। लेकिन वहां पर उसे मालूम हो जाता है कि शबरी सरोवर के पास गई हुई है, तो ये सब सरोवर की तरफ आगे बढ़ते हैं। आखिर शबरी से विश्वम्भर की मुलाकात सरोवर के पास होती है। विश्वम्भर को क्रोध में देख शबरी सहम जाती है और एक तरफ खिसकने की कोशिश करती है। इतने में शबरी की छाया विश्वम्भर पर पड़ जाती है। विश्वम्भर आपे से बाहर हो जाता है और शबरी की निंदा करते हुए ज़ोर से अपना योगदंड उसपर पटक देता है। वह योगदंड शबरी के माथे से जा लगता है। खून की कुछ बूंदें उछलकर सरोवर में जा गिरती हैं। सरोवर का सारा जल रक्तमय हो जाता है।

सरोवर के जल को रक्तमय देख विश्वम्भर क्रोध में उन्मत्त हो जाता है और शबरी की निंदा करने लगता है, 'तुमने अपने खून से सरोवर के जल को अपवित्र किया है। तुम्हारे कारण सारी मुनिवाटिका को तरह-तरह की यातनाएं भोगनी पड़ रही

हैं । तुमसे हम लोग तंग आ गए हैं । तुम्हारी छाया से भी हम लोग घृणा करते हैं । आश्रम के शांतिमय जीवन को तुमने अपनी करतूतों से नष्ट कर दिया है । चुड़ैल कहीं की ! हमारी आंखों से कहीं दूर चली जाओ।'

शबरी ने नम्रता के साथ निवेदन किया, 'मुनिवर, यह तो मेरा दोष नहीं है ।'

विश्वम्भर आग-बबूला हो गरज उठा, 'तो क्या मेरा दोष है ? हां···यह तुम्हारा दोष नहीं है···यह तो उस वृद्ध मातंग महर्षि का दोष है जिसने तुम्हारी सुन्दरता पर रीझकर तुम्हें आश्रम में स्थान दिया है···'

उपस्थित मुनियों में से कुछ इसका समर्थन करते हुए कहते हैं, 'हां, विश्वम्भर का कथन सत्य है । मातंग महर्षि तुम्हारे रूप के मोहजाल में पड़कर तुम्हें यहां से निकालने में अपने को असमर्थ पाते हैं···ओह ! तुम कैसी औरत हो ? तुमने मानो धर्म का अपने हाथों में ठेका ले रखा हो । इसीलिए तो तुमने एक विधवा-विवाह कराने का दुस्साहस किया है···'

शबरी अपने हाथों से कान बन्द करते हुए कहती है, 'मुनिवर ! कृपया उस दिव्य पुरुष मातंग महर्षि पर दोषारोपण मत कीजिए । वे अमृत-स्वरूप हैं···यदि आप यह अनुभव करते हैं कि मेरे कारण आपके मार्ग में बाधा उपस्थित हो रही है और आपकी शांति में विघ्न हो रहा है तो मैं यहां से फौरन चली जाऊंगी···आप शांति के साथ यहीं पर रहिए···'

यह कहते हुए शबरी फौरन घूम पड़ती है और वहां से चल देती है ।

मुनियों में से एक कहता है, 'ओह ! यह डाइन चली गई। अब हमारी पांचों उंगलियां घी में हैं।'

शबरी मुनियों से तिरस्कृत हो सीधे जंगल में चली जाती है। वहां पर अपने लिए एक छोटा-सा निवासस्थान बनाकर आध्यात्मिक चिंतन करते अपना समय काटती रहती है। मानव-मात्र की सेवा करना, प्रकृति के समस्त प्राणियों के प्रति भूत-दया दिखाना अपने जीवन का लक्ष्य बना लेती है। जंगल से गुज़रने वाले यात्रियों की मदद करना, उनकी सेवा-शुश्रूषा और आतिथ्य को वह अपना दैनिक कार्यक्रम बना लेती है।

एक दिन भूखे-प्यासे एक दंपति शबरी के कुटीर में आए। शबरी ने बड़े प्रेम से उनका हार्दिक स्वागत किया। उन्हें अपने कुटीर में आश्रय देकर फल और शहद द्वारा उनका सत्कार किया। उस दंपति ने शबरी के आतिथ्य से प्रसन्न हो उसे आशीर्वाद और धन्यवाद दिया तथा दो-तीन दिन विश्राम कर वहां से चल दिए। शबरी ने बड़े सुख का अनुभव किया। अब उसे किसी प्रकार की चिंता नहीं थी। यदि उसे कोई चिन्ता थी तो केवल सुभाषिणी, आश्रम और हथिनी शांति की थी।

३१

गिरिका राहू के व्यवहारों से असंतुष्ट है। वह जितना अधिक उसे प्रेम करती है उतना हो अधिक उससे तिरस्कृत होती जा रही है। आखिर तंग आकर वह अपनी सारी कठिनाइयां

शतभिष को बताती है। शतभिष उसकी कठिनाइयों को भरसक दूर करने का वचन देता है।

एक दिन की रात्रि को राहू शराब के नशे में उन्मत्त हो लड़खड़ाते घर लौटा। उसका चेहरा लाल था। आते ही उसने गिरिका को पीटना शुरू किया। शतभिष ने भूत का वेष धारण कर राहू के कुटीर में प्रवेश किया। अपने मुंह से आग की ज्वालाएं निकालते दरवाज़े पर खड़ा हो गया। अपने सामने एक विकराल रूप वाले भूत को खड़ा देख राहू कांप उठा। और उसके होश उड़ गए। शतभिष जो कि भूत के वेष में था, गरज़ उठा, 'मैं ही शबरी हूं जो कि मरने के बाद भूत बन करके तुमसे बदला लेने के लिए आई हूं। सावधान हो जाओ।'

यह सुनते ही राहू पर मानो बिजली गिर गई। इतने में वह होश में आया। भूत-वेषधारी शतभिष उसे पीटने लगा। खूब मरम्मत करने के बाद उसे सावधान किया, 'तुम यह वचन दो कि अपनी पत्नी के साथ आगे अच्छा व्यवहार करोगे। वरना तुम्हारी जान की खैर नहीं।'

गिरिका अपने पति को बुरी तरह पिटते देख सहन न कर सकी। वह बीच में दखल देने की कोशिश करने लगी। लेकिन शतभिष ने उसे सावधान कर दिया कि वह भूल से भी इस रहस्य का उद्घाटन न करे।

आखिर राहू थककर चकनाचूर हो जाता है। अन्त में बड़े विनय के साथ वायदा करता है कि वह आगे गिरिका के साथ अच्छा व्यवहार करेगा और उसे किसी प्रकार का दुःख न देगा। इसके बाद वह भूतवेषधारी शतभिष के चरणों पर गिरकर

साष्टांग दण्डवत् करता है। गिरिका और शतभिष अपने प्रयत्न को सफल देख खुश नज़र आते हैं।

ठीक इसी समय विष्कंभ बाहर से राहू को बुलाता है। शतभिष वहां से चुपके से खिसक जाता है। विष्कंभ राहू के कुटीर में आता है। राहू अपने को संभालने की कोशिश करता है। विष्कंभ बातों के सिलसिले में राहू को यह सूचित करता है कि आजकल शबरी जंगल में रहने लगी है।

राहू ज़ोर से चिल्लाता है, 'नहीं, कभी नहीं··· वह शबरी नहीं···वह तो शैतान है···यह मैं खूब जानता हूं, वह शै··ता··न है।'

शबरी अपने निवास पर तारक नाम का उच्चारण करते हुए भोजन करने जा रही है। इतने में बाहर से किसीके बुलाने की आवाज़ उसके कानों में पड़ती है। वह जल्दी जाकर दरवाज़ा खोलती है। दरवाज़े के पास एक गरीब ब्राह्मण अपनी पत्नी तथा सात बच्चों के साथ खड़े हैं। ब्राह्मण शबरी को देख आशापूर्ण नेत्रों से कहता है, 'बहन ! हम लोग मार्ग भूल गए हैं। जंगल में अपना मार्ग ढूंढने में बड़ी तकलीफ हो रही है। हम काफी थके-मांदे हैं। इसलिए अपनी थकावट दूर करने के लिए हम थोड़ी देर तक विश्राम करना चाहते हैं। कृपया हमें आश्रय दीजिए।'

शबरी बड़े प्रेम से उनका स्वागत करती है। भीतर पहुंचने पर गरीब ब्राह्मण देखता है कि एक टोकरी में फल भरे हुए

हैं। वह अपने एक लड़के को पास खींचकर चिकोटी मारता है। वह लड़का ज़ोर से रोने लगता है। शबरी पूछती है, 'बात क्या है ? लड़का क्यों रोता है ?'

ब्राह्मण जवाब देता है, 'ये बच्चे बहुत भूखे हैं।'

छोटा लड़का यह कहने ही जा रहा था कि यह सब झूठ है। मेरे पिताजी ने चिकोटी मारी है। लेकिन उस ब्राह्मण ने लड़के का मुंह बंद कर दिया। इतने में शबरी ने फल लाकर उन्हें दे दिया। लड़के उनपर झपट पड़े और आपस में फल के वास्ते लड़ने लगे। शबरी ने कुछ और फल लाकर दिए। उन लोगों ने उन्हें भी खा लिया और फिर फलों की मांग की। शबरी ने बिना झुंझलाए फिर फल लाकर उनके सामने रखे। ब्राह्मण ने उन फलों की टोकरी को देख फिर अपनी पत्नी से कहा, 'ये फल तो बहुत मीठे हैं। इनमें से कुछ फल क्यों नहीं रास्ते के लिए रखती ?'

यह कहते हुए उस ब्राह्मण ने कुछ फल अपनी थैली में छिपाए और अपने एक लड़के को बुलाकर कहा, 'बेटा! तुम खूब रोओ, चिल्लाओ। तुम्हें और भी फल मिलेंगे। समझे न ?'

लड़के ने रोने से इनकार कर दिया। इससे गुस्से में आकर लड़के का कान ऐंठा···वह लड़का रोने लगा। शबरी ने उस ब्राह्मण के निकट पहुंचकर पूछा, 'तुम लड़के को क्यों पीटते हो ?' ब्राह्मण ने जवाब दिया, 'कहावत है, दरिद्र को भूख ज़्यादा लगती है······इसे देखिए न। इसने खूब फल खाए लेकिन फिर भूख का बहाना करता है······'

ब्राह्मण ने क्रोध का अभिनय करते हुए लड़के को पीटने

के लिए हाथ ऊपर उठाया। शबरी ने यह कहते हुए उसे टोका, 'बालक तो अबोध होते हैं। उन्हें पीटना नहीं चाहिए।'

शबरी भीतर गई और अपने लिए उसने जो फल रखे थे उन्हें लाकर बच्चे को दे दिया। इसके बाद उसने ब्राह्मण से कहा, 'मैं और भी फल लाने जंगल में जा रही हूं। मेरे लौटने तक आप लोग यहीं रहिए।'

शबरी फल लाने जंगल की तरफ चली गई।

विष्कंभ जो कि अब तक एक झाड़ी में छिपे यह सब देख रहा था, शबरी के जाते ही बड़े धैर्य के साथ उसके कुटीर में आ गया। वहां पर ब्राह्मण और उसके परिवार को देख उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, 'ओह! तुम लोग भी कैसे आदमी हो? क्या तुम्हें अपने प्राणों का मोह नहीं है? वरना तुम इस शैतान के अतिथि क्यों बनते?'

ब्राह्मण अवाक् रह गया। विष्कंभ ने फिर कहा, 'यह शैतान तो इस रास्ते से आने-जाने वालों का स्वागत करती है, उनका अतिथि-सत्कार करती है। अन्त में सबको स्वाहा कर डालती है।'

इससे ब्राह्मण घबरा जाता है और अपने परिवार को लेकर भाग खड़ा होता है।

विष्कंभ फिर झुरमुट की तरफ दौड़ पड़ता है। इतने में शबरी फल लेकर वहां पहुंचती है। उस ब्राह्मण-परिवार की अनुपस्थिति पर विचार प्रकट करती है। लेकिन इतने में वह देखती है कि वे लोग कुछ दूर पर दौड़े हुए चले जा रहे हैं। शबरी यह चिल्लाते हुए उनके पीछे दौड़ती है--

'ज़रा रुको। ये फल लेते जाओ।'

ब्राह्मण भागते-भागते ठोकर खाकर मुंह के बल गिर पड़ता है। फिर उठकर भाग खड़ा होता है। वह दूर से चिल्ला उठता है, 'ओह...तुम तो शैतान हो...मेहरबानी करके हमें तो छोड़ दो...'

ब्राह्मण की पत्नी अपने पति से थैली में छिपाए हुए फलों को फेंक देने के लिए कह देती है। ब्राह्मण फेंक देता है और कहता है, 'शैतान। हमपर कृपा करो। हमने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा। ज़िन्दगी भर तुम्हारा नाम जपेंगे। ए शैतान...।'

यह कहते हुए ब्राह्मण अपने परिवार के साथ भाग गया। दूर, बहुत दूर...।

शबरी ने यह सुनकर ऐसा अनुभव किया कि उसे शैतान कहा जा रहा है, मानो उसपर वज्रपात हुआ। वह ज़मीन में गड़ी जाने लगी। उसका चित्त विकल हो गया। बार-बार उसके कानों में ब्राह्मण के ये शब्द गूंजने लगे, 'हे शैतान हमपर कृपा करो। हे शैतान...'

शबरी उस ब्राह्मण के पीछे थोड़ी दूर तक दौड़ती गई। मौका पाकर इधर विष्कंभ ने शबरी के कुटीर में प्रवेश किया और उस झोंपड़ी में आग लगा दी। आग की लपटें लपलपाती आकाश की ओर बढ़ने लगीं। शबरी ने उस ब्राह्मण को रुकते न देख अपने कुटीर की तरफ लौटकर देखा, उसका कुटीर जल रहा था। उसका एकमात्र आश्रय जो था उससे भी वह वंचित हो गई। उसके कानों में बार-बार ब्राह्मण के वाक्य प्रतिध्वनित होने लगे।

३२

शबरी अब सब तरह से जीवन से ऊब उठी। लोग उससे घृणा कर रहे थे। वह निरुद्देश्य जंगल में आगे बढ़ती चली जा रही थी। उसे मालूम नहीं था कि वह कहां पर जा रही है लेकिन उसके पैर आगे बढ़ते गए। रास्ता उसे कहीं ले जा रहा था। वह अपने मार्ग में अनेक तरह के झाड़-झंखाड़ों को पार करती जा रही थी। एक घनी झाड़ी के पास पहुंचते ही उसमें से एक काला नाग निकला और वह शबरी के मार्ग में खड़ा हो गया। शबरी ने उसे पकड़कर कहा, 'मैं शैतान हूं। डाइन हूं। मुझे डस दो, मुझे मार दो।'

शबरी ने उसे अपनी छाती से दबाया। लेकिन सांप ने शबरी की कोई हानि नहीं की। वह शबरी के हाथ से चुपके से निकल गया। थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर एक बाघ से उसकी मुलाकात हो गई। उसने बाघ की ओर आगे बढ़कर उसके रास्ते को रोका। उन्मत्त हो वह चिल्लाने लगी।

'मैं पापिनी हूं। मैं राक्षसिनी हूं। मुझे मार डालो।'

शार्दूल ने शबरी के मुखमंडल की तरफ देखा। उसके चेहरे पर असीम व्यथा झलक रही थी। फिर भी उसके नेत्रों में अपूर्व कांति जाज्वल्यमान थी। बाघ ने भी शबरी को कोई हानि नहीं पहुंचाई। वह रास्ते की एक ओर खिसक गया। थोड़ी दूर और आगे बढ़ने पर एक मयूर मिला। शबरी ने उससे प्रार्थना की कि वह उसकी आंखें फोड़ दे। लेकिन वह उड़ते हुए जाकर एक पेड़ पर चढ़ बैठा। शबरी ने मन ही मन कहा, 'तो मृत्यु

मुझे नहीं चाहती है । हे राम...राम...'

इतने में पास के वृक्ष पर बैठा एक तोता मधुर स्वर में वोल उठा, 'राम ! राम !!' शवरी ने बड़ी उत्सुकता और विचित्रता के साथ तोते की तरफ देखकर कहा, 'हे राम... राम...' तोते ने उसका पुनरुच्चारण किया । शबरी ने फिर से राम-राम कहा । उसी क्षण उसके पीछे कोई आवाज़ हुई । शबरी ने मुड़कर देखा कि बाघ, चीते, मयूर, नाग, अजगर इत्यादि जंगली पशु और जानवर अपनी परस्पर की शत्रुता को भूलकर राम-राम कहते उसके पीछे-पीछे चले आ रहे हैं । इस विचित्रता को देखकर वह चकित रह गई । शबरी ने परमानन्द में आकर राम नाम का उच्चारण किया । पीछे चलने वाले सभी पशु-पक्षियों ने भी शबरी के स्वर में स्वर मिलाकर मधुर गान किया । शबरी पगली की भांति तारक नाम का उच्चारण करते मुस्कराते अपने पथ पर चली जा रही थी । पशु-पक्षी भी शवरी का अनुगमन करने लगे । शवरी अपना रास्ता तय करते-करते कुछ समय के बाद एक भयंकर घाटी के निकट पहुंची । जंगल के हाथियों के एक बहुत बड़े झुंड ने, जो कि उसके रास्ते को रोककर खड़ा था, शवरी को देखते ही अपनी सूंड उठाकर अभिवादन किया । शबरी उनका अभिवादन लेकर आगे बढ़ी । गजसमूह भी उसके पीछे चलने लगा ।

शबरी कुछ दिन के उपरांत पंपा सरोवर के निकट पहुंची । पीछे घूमकर देखा तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ । अब तक उसने तारक नाम का जप करते पीछे की तरफ मुड़कर ध्यान से नहीं देखा था । उसके साथ चलने वाले पशु-पक्षियों के

समुदाय में और भी तरह-तरह के पशु और पक्षी आ मिले थे। उनमें हिरण, भेड़िये, शेर, खरगोश, कबूतर, गिलहरियां और बिलखे आदि थे। वहां पहुंचकर सबने यह अनुभव किया कि ईर्ष्या, घृणा, द्वेष इत्यादि दुर्गुणों से पूर्ण मानव-समुदाय से दूर रहकर शांतिमय जीवन बिताने के लिए यही स्थान उचित है।

शबरी ने वहां पर सबके रहने के लिए एक निवासस्थान का निर्माण करना चाहा। तुरन्त हाथी आदि जानवर और पक्षियों ने कुटीर के निर्माण में आवश्यक सामग्री इकट्ठा कर शक्ति भर मदद दी।

शबरी ने अपने इस नये आश्रम में बड़े सुख और शांति के साथ जीवन बिताना प्रारंभ किया। वह जंगल के विविध प्रकार के पशु तथा पक्षिगण को तारक नाम की शिक्षा देते अपना समय काटने लगी। उस मानव-समाज की अपेक्षा यहां पर उसका मन अत्यन्त प्रफुल्लित था। वह चिन्ता-विहीन हो ईश्वर-भजन करते अपार हर्ष का अनुभव करने लगी। पशु-पक्षियों का व्यवहार उसे बहुत पसन्द आया क्योंकि इनमें परस्पर न ईर्ष्या थी और न जलन ही, परस्पर शत्रुता होने पर भी वे सब उन गुणों को भूल गए थे। हिंस्र पशु जब हिंसा को त्याग देते हैं तब वे मानव से भी उत्तम कोटि के प्राणी गिने जाते हैं। मनुष्य सृष्टि का श्रेष्ठ प्राणी होने पर भी हृदय की पुकार को परवाह किए बिना हमेशा दूसरों को नीचा देखने की सोचता है। इसीलिए वह मानव से दानव बन जाता है, जब कि पशु-पक्षी भी देवत्व की ओर उन्मुख हैं। भला ऐसी स्थिति में वह वातावरण शबरी को आनन्दमय'एवं सुखमय क्यों प्रतीत न होगा?

३३

चन्द्रा और सुभाषिणी सुखपूर्वक अपना जीवन मातंग आश्रम में बिता रहे हैं। उन दोनों के विचार परस्पर मिल गए थे। इसलिए उन्हें दाम्पत्य जीवन में असीम सुख का अनुभव होने लगा। उनका प्रणय शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की भांति दिन-ब-दिन बढ़ता गया। दाम्पत्य जीवन का सच्चा सुख लूटते हुए भी वे आश्रम-जीवन के कर्तव्यों के निर्वहण में भी सजग रहे। उन दोनों पति-पत्नियों को तोता-मैना का सा जीवन व्यतीत करते देख कुछ लोगों के मन ईर्ष्या से जल उठे। आश्रम के सभी निवासी उन दोनों को आश्रम से भगा देने का षड्यंत्र करने लगे। लेकिन उनमें कोई दोष न देख वे उन्हें निकाल न सके। इससे ईर्ष्या और भी बढ़ती गई।

एक दिन की संध्या में सुभाषिणी और चन्द्रा भावी जीवन की मधुमय कल्पनाएं करते हुए परस्पर वार्तालाप कर रहे थे। सुभाषिणी चन्द्रा की जांघ पर अपना सिर रखे अपने कमल-नालों-सी बांहों को चन्द्रा के गले में डाले जब उसकी पुतलियों में अपना प्रतिबिंब देख रही थी तो हठात् कुटीर के बाहर कोई गंभीर घोष और कोलाहल होते देख वह चकित होकर भीत हरिणी की भांति उठ बैठी। उस समय उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त थे।

कुटीर के बाहर आश्रम के मुनियों ने सुभाषिणी और चन्द्रा को बुलाने के विचार से तालियां पीटी थीं। जब वे दोनों बाहर नहीं आए तो मुनियों ने क्रुद्ध होकर ज़ोर से पुकारा कि

तुरन्त वे दोनों बाहर आएं । जब डर के मारे वे दोनों नहीं आए तो पापी, नीच, द्रोही इत्यादि तरह-तरह के निन्दा-वाक्यों से उनपर दोषारोपण करते हुए मुनियों ने बाहर आने का आदेश दिया । उन लोगों ने उस दम्पति पर यह भी दोषारोपण किया कि उनके कारण आश्रम अपवित्र हो गया है और उसकी शांति भंग हो गई है ।

वे इस प्रकार उस नव दम्पति को गालियां दे रहे थे। संयोग-वश उसी वक्त मातंग महर्षि वहां आ पहुंचे। तुरन्त सुभाषिणी और चन्द्रा आकर महर्षि के चरणों पर गिर पड़े। मातंग महर्षि ने सारी स्थिति समझ ली। इस दम्पति को सांत्वना देते देख मातंग महर्षि पर आश्रम के सभी मुनि कुपित हुए। सबने एक स्वर में महर्षि से निवेदन किया, वे तुरन्त इस पापी दम्पति को आश्रम से निकाल बाहर कर दें । महर्षि ने थोड़ी देर तक मुनियों की ओर गंभीरता के साथ देखा और पूछा––

'क्या, हम लोगों में ऐसा कोई आदमी है जो कि पवित्र है और परिपूर्ण है तथा जिसने कभी पाप न किया हो ? दोषा-रोपण करना आसान है । अपने हृदय पर हाथ रखकर कहो ।'

सब लोग मौन रहे । मुनि ने फिर शांति के साथ उनकी ओर देखते हुए कहा, 'यदि ऐसा कोई आदमी है तो वह मेरे सामने आए । मैं उसे उत्तर देने के लिए तैयार हूं ।'

भीड़ में से किसीने कोई उत्तर नहीं दिया। निरुत्तर हो सब वहां से अपना-सा मुंह लेकर चले गए ।

तत्पश्चात् चन्द्रा और सुभाषिणी ने मातंग से निवेदन किया कि उन्हें तीर्थयात्रा पर जाने की अनुमति प्रदान करें।

महर्षि ने सहर्ष अपनी स्वीकृति दी। इनमें वार्तालाप होते समय महर्षि की दृष्टि दूर पर लेटी चिंतित हथिनी शांति पर पड़ी। वह अत्यन्त उदास और कमज़ोर दिखाई दे रही थी। चन्द्रा और सुभाषिणी के द्वारा महर्षि ने शबरी के आश्रम त्याग देने तथा शांति का उस दिन से अन्न-जल छोड़ने का सारा वृत्तान्त जान लिया।

महर्षि ने शांति की स्थिति पर दुःखित हो उसके निकट पहुंचकर बड़े प्रेम से पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, 'शांति, यह स्थान हम लोगों के योग्य नहीं है। हम भी इस स्थान को छोड़ शबरी के पास चले जाएंगे।...'

यह समाचार सुनते ही शांति के चेहरे पर आनन्द की रेखाएं प्रस्फुटित हो गईं। थोड़ी देर में वे दोनों शबरी की खोज करने चल पड़े।

हठात् मातंग महर्षि को अपने कुटीर के सामने देख शबरी के आनन्द की सीमा न रही। उसने महर्षि के चरण छुए। तदुपरांत साष्टांग दंडवत् किया। फिर शांति के निकट पहुंचकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा। पहले शांति ने शबरी की तरफ देखे बिना अपना मुंह दूसरी तरफ कर लिया। मातंग महर्षि ने शबरी को सूचित किया कि शांति तुमसे नाराज़ है क्योंकि तुमने आश्रम को छोड़ते समय शांति को नहीं बताया। तब से वह अन्न-जल को छोड़ उपवास कर रही है। शबरी ने शांति को गले लगाया और थोड़ी देर तक दोनों आंसू बहाती रहीं। शबरी ने बड़े प्रेम से शांति के आंसू पोंछे। जब शांति प्रसन्न हुई तब

शबरी ने खुद अपने हाथों से उसे खाना खिलाया । उसके बाद शबरी ने मातंग महर्षि तथा शांति को अपने यहां के हिरण 'माधवी', तोता 'रघू', शार्दूल-शावक 'बालू', मैना 'माधुरी', सर्प 'नागमणी' इत्यादि विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों का परिचय कराया ।

परिचय के बाद शबरी मातंग महर्षि को अपने कुटीर के अन्दर ले गई । कुटीर का भीतरी भाग सुन्दर ढंग से अलंकृत किया गया था । मातंग महर्षि ने बहुत प्रसन्न होकर उसे धन्यवाद दिया और कहा, 'यह भविष्य में शबरी आश्रम नाम से विख्यात होगा……'

शबरी ने भक्तिपूर्वक अपना मस्तक नत करते हुए कहा, 'नहीं, गुरुदेव ! यह तो आपका आश्रम है । आपने ही मुझे प्राकृतिक स्वर्ग कहला सकने वाले इस प्रकार के आश्रम के निर्माण की प्रेरणा दी है । अतः यह आश्रम आप ही के नाम से पुकारा जाएगा ।'

मातंग महर्षि ने कहा, 'यदि तुम मानती नहीं हो तो वैसा ही हो……'

शबरी ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ महर्षि के चरणों की पूजा की ।

शबरी 'शांति' तथा अन्य पशु-पक्षियों को साथ ले पंपा सरोवर के तट पर पहुंचे और अपने साथ सात सागर के जो जल लाए थे उन्हें पंपा सरोवर के बीच निमज्जन कर दिया ।

इस प्रकार महर्षि ने विधिवत् सप्त-सागर-प्रतिष्ठा तथा पूजा समाप्त की । सातों समुद्रों के जल सात रंगों के थे । पंपा

सरोवर अपूर्व शोभा से लहरा उठा।

३४

मातंग महर्षि रामायण का गान करते हुए उसका मर्म शबरी को समझा रहे हैं। पशु-पक्षी भी निर्निमेष महर्षि को देखते शांति के साथ सुन रहे हैं। रामायण का वह प्रसंग परशुराम और श्री रामचन्द्रजी के मिलने का है।

महर्षि सबको वह प्रसंग सुना रहे हैं :

जनकपुर में राजा जनक के दरबार में देश-विदेश के राजा एकत्र हुए हैं। धरतीपुत्री जानकी के स्वयंवर का स्वागत पाकर सब बड़ी प्रसन्नता के साथ आए। जनक महाराज ने सब राजाओं की ओर स्नेहपूर्ण दृष्टि दौड़ाकर घोषणा की।

'जो राजा या चक्रवर्ती इस शिवधनुष को तोड़ेगा, सीता उसीके गले में जयमाला पहनाएगी।' सब राजाओं ने एक-एक करके धनुष तोड़ने का प्रयत्न किया और हार मानकर नतमस्तक हो वे अपने-अपने स्थान पर जा बैठे। विश्वामित्र ने शुभ समय जानकर बड़े स्नेह से राम से कहा, 'हे राम! उठो! शिवजी का धनुष तोड़ो।' गुरु की आज्ञा पाकर रामचन्द्रजी ने उनके चरणों में सिर नवाया और सभा-मंडप में धनुष के पास जाकर खड़े हो गए। रामचन्द्रजी को धनुष के पास खड़े देख लक्ष्मण पुलकित हो उठा। रामचन्द्रजी ने धनुष को अपने हाथ में लिया। वह पल भर में बिजली की तरह चमका। फिर आकाश में

मंडलाकार हो गया। उसी क्षण राम ने धनुष को बीच से तोड़ दिया। उसकी आवाज़ से चौदहों भुवन प्रतिध्वनित हो उठे। यह देखकर सब लोग रामचन्द्रजी की जय-जयकार करने लगे। सीताजी रामचन्द्रजी की शोभा को देखती ही रह गईं। इतने में कोई गरजता-चिल्लाता उस सभा-भवन में पहुंचा। 'सीताजी को छीन लो' 'दोनों राजकुमारों को पकड़कर बांध लो।' सारी सभा भयभीत हो उठी। लक्ष्मण की आंखें लाल और भौंहें टेढ़ी हो गईं। इसी समय भृगुवंशी परशुराम वहां आ पहुंचे। परशुराम को देख सभी राजा थरथर कांपने लगे। उनका मुख क्रोध के कारण लाल हो गया था। उनके हाथ में धनुष-बाण तथा कंधे पर फरसा सुशोभित थे। परशुराम को देखते ही विश्वामित्र ने उन्हें राम-लक्ष्मण का परिचय कराया। उन दोनों भाइयों को परशुराम ने आशीर्वाद भी दिया।

परशुराम ने जनक महाराजा से उस सभा के संबंध में पूछा। जनक महाराज ने सारी कथा कह सुनाई। उसी समय उन्होंने ज़मीन पर फेंके हुए शिवधनुष को देखा। वे क्रोध में गरज उठे, 'रे मूर्ख जनक, बता, धनुष किसने तोड़ा ? उसे जल्दी दिखा। नहीं तो तेरा राज्य ही उलट दूंगा।' सब लोग इस दृश्य को देख भयभीत हुए। रामचन्द्रजी ने बड़े विनय के साथ परशु-रामजी से कहा, 'हे नाथ ! शिवजी के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही होगा। कहिए क्या आज्ञा है ?'

परशुरामजी ने कहा, 'दास तो वह होता है जो कि सेवा करता है। लेकिन जिसने शिवजी के धनुष को तोड़ा है वह मेरा वैरी है। वह इस राज-सभा से अलग हो जाए, वरना सभी राजा

मारे जाएंगे ।'

मुनि की बातें सुनकर लक्ष्मणजी मुस्कराए और परशुराम का अपमान करते हुए बोले, 'हमने तो बचपन में अनेक धनुष तोड़े लेकिन आपने कभी हमपर क्रोध नहीं किया । कहिए, इस धनुष पर आपकी इतनी ममता क्यों है ? रामचन्द्रजी के छूते ही यह धनुष टूट गया । इसमें उनका कोई दोष नहीं । आप क्रोध क्यों करते हैं ?'

इसपर परशुरामजी ने अपना फरसा दिखाते हुए कहा, 'रे दुष्ट ! तुझे बालक समझकर तेरा वध नहीं कर रहा हूं । तू नहीं जानता कि मैं क्षत्रिय-कुल का शत्रु हूं। मैंने कई बार अपने भुजबल से इस पृथ्वी को राज-विहीन कर दिया और उनके राज्यों को ब्राह्मणों को दे दिया । मेरा फरसा गर्भ के बच्चे को भी नाश करने वाला है ।'

लक्ष्मण ने परिहास करते हुए कहा, 'बार-बार मुझे कुल्हाड़ी क्यों दिखा रहे हैं । यहां पर कोई कुम्हड़े की बत्तियां नहीं कि तेरी तर्जनी देखकर मर जाएं। मैं तुमको ब्राह्मण समझकर छोड़ देता हूं ।'

इस प्रकार लक्ष्मण और परशुराम के बीच का संवाद उग्र रूप धारण करने लगा। सब लोग भयभीत हो उठे। लक्ष्मण अपने क्रोध को रोक नहीं पाता था । रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण को चुप रहने का संकेत किया । इसके बाद अपने शीतल वचनों से परशुराम जी को शांत करने का रामचन्द्रजी ने प्रयत्न किया । रामचन्द्र और परशुराम के बीच जो संवाद हुआ उससे परशुराम-जी ने यह जान लिया कि रामचन्द्रजी साधारण मनुष्य नहीं हैं।

बल्कि साक्षात् अवतार-पुरुष हैं। उनका शरीर और चित्त रोमांचित हो उठा। वे अपने दोनों हाथ जोड़कर उनका गुणगान करने लगे। देवताओं ने भी रामचन्द्रजी पर पुष्पवृष्टि की। नगर के सब स्त्री-पुरुष प्रसन्न हो गए।।

——महर्षि ने रामचन्द्रजी की कथा समाप्त की। सब ध्यानावस्था से जागरित हुए। अवतार-पुरुष की कथा सुनने के कारण सबके मुख-मंडल अपूर्व तेज से प्रदीप्त थे। सभी रामचन्द्रजी का स्मरण करते आश्रम के भीतर चले गए।

एक दिन की शाम को शबरी पंपा सरोवर के तट पर घूम रही थी। मंद पवन चल रहा था। पक्षियों का कलरव गूंज रहा था। शबरी ध्यानमग्न हो भगवान् का स्मरण करते इधर-उधर टहल रही थी। एकाएक किसीका करुण क्रंदन उसके कानों में पड़ा। शबरी ने उस दिशा की ओर देखा जहां से वह ध्वनि आ रही थी। पंपा सरोवर में कोई राजकुमार पानी के भीतर किसीसे लड़ते हुए छटपटा रहा था। शबरी ने भांप लिया कि किसी जलचर ने राजकुमार पर हमला बोल दिया है। उसने तुरन्त उस राजकुमार के निकट पहुंचकर उसे अपने हाथ का सहारा दिया और राजकुमार को जल के बाहर खींच लिया। राजकुमार के साथ-साथ मगर भी बाहर आया, जिसने उसके पैरों को ग्रस लिया था। मगर ने राजकुमार को बचाने वाली की तरफ देखा। उसके नेत्रों में उसे अपार भूत-दया तथा स्नेह की ज्योति के दर्शन हुए। उन्हें देखते ही मगर की सारी हिंसात्मक

प्रवृत्ति जाती रही। उसने राजकुमार के पांव छोड़ दिए और जल से बाहर आकर शबरी के चरणों का स्पर्श किया। दूसरे ही क्षण वह पानी के भीतर चला गया।

राजकुमार यह सब देख दंग रह गया। लेकिन उसकी राजसी वृत्ति भीतर ही भीतर प्रज्वलित हुई। शबरी की अनुपम सुन्दरता को देख वह उसपर मुग्ध हुआ। उसने उस सौंदर्य पर अपना अधिकार जताना चाहा। उसने शबरी से निवेदन किया कि उसका हृदय शबरी पर आसक्त है, इसलिए वह उसके साथ शादी कर ले। यहां तक उसे प्रलोभन दिया कि उससे शादी करने पर वह एक बहुत बड़े साम्राज्य की पट्टमहिषी होगी। शबरी ने अनेक प्रकार से उसे समझाया, लेकिन फायदा न रहा। अन्त में उससे पिंड छुड़ाने के लिए उसकी इच्छाओं को साफ ठुकराकर वह आश्रम की तरफ तेज़ी से चली गई। लेकिन राजकुमार भी उसके पीछे चलने लगा।

शबरी ने आश्रम पहुंचकर मातंग महर्षि को सारा समाचार सुनाया और उससे निवेदन किया, 'गुरुदेव, इस यौवन के प्राप्त होने के कारण ही मुझे यह दिन देखना पड़ा है। इसलिए मुझे वृद्धा और कुरूपिणी बना दें।'

मातंग महर्षि ने अपनी तप:शक्तियों से शबरी को वृद्धा बना दिया। तदुपरांत राजकुमार को युवावस्था का मर्म समझा दिया :

'राजन्! यौवन, धन, सौन्दर्य ये सब क्षणिक हैं। धरा, धन, पत्नी, पुत्र भी माया-ममता से पूर्ण हैं। अपनी आत्मा के उद्धार में, इनमें से कोई भी साथ नहीं दे सकता है। इसलिए इस स्थायी

संपत्तिको प्राप्त करने का प्रयत्न करो जिससे तुम्हारा जीवन धन्य हो सकता है ।'

उसी समय महर्षि ने शबरी की इच्छा पूर्ण की ।

राजकुमार ने शबरी को वृद्धावस्था में देख उससे घृणा प्रकट की और वहां से भागा । शबरी ने मातंग महर्षि से प्रार्थना की कि उसे पुनः यौवन न प्रदान किया जाए। क्योंकि यौवन और सुन्दरता ही उसे भयंकर उलझनों में डाल रही है । महर्षि ने शबरी की इच्छा को खुशी से स्वीकार किया ।

आश्रम के सामने शार्दूल-शावक, 'शांति', तोता, मृग-शावक, मयूर इत्यादि सब एक फल को फुटबाल बनाकर खेल रहे थे । शबरी उन सबका भोजन लेकर वहां पर पहुंची । शबरी को देख वे सब उसके पास दौड़ आए । शबरी ने उन सबको खाना खिलाते-खिलाते देखा—सभी बहुत प्रसन्न हो रहे थे ।

महर्षि सब को रामायण-गान के लिए बुलाते हैं ।

वे सब आकर महर्षि के चारों तरफ बैठ जाते हैं । महर्षि दशरथ के द्वारा श्री रामचन्द्रजी के पट्टाभिषेक-महोत्सव मनाने के निश्चय को गान कर सुनाते हैं :

अथ राजा दशरथः कदाचिद्रहसि स्थितः ।
वसिष्ठं स्वकुलाचार्यमाहूयेदमभाषत ।।
भगवन् ! राममखिलाः प्रशंसन्ति मुहुर्मुहुः ।
पौराश्च निगमा वृद्धा मन्त्रिणश्च विशेषतः ।।[1]

---

१. भगवान् ! सभी पुरवासी, वेदार्थाभिज्ञ, बड़े-बूढ़े और विशेषतया

यह समाचार परिचारिका मंथरा के द्वारा कैकेयी के कानों में पड़ा। वह बहुत प्रसन्न हुई। लेकिन कुबड़ी मंथरा ने उसके दोनों वर याद दिलाकर भरत को राज्य दिलाने की सलाह दी। मंथरा के बहुत समझाने पर कैकेयी का हृदय-परिवर्तन हुआ। उसका पुत्र-प्रेम जाग उठा। वह अपने सब अलंकार त्यागकर कोप-भवन में जा लेटी। थोड़ी देर बाद दशरथ वहां पहुंचा। कैकेयी ने दशरथ को अपने वरों की याद दिलाकर कहा :

तद्‌द्वयं न्यासभूतं मे स्थापितं त्वयि सुव्रत !
तत्रैकेन वरेणाशु भरतं मे प्रियं सुतम् ॥
एभिः संभृतसंभारैर्यौवराज्येऽभिषेचय।
अपरेण वरेणाशु रामो गच्छतु दण्डकान् ॥[1]

कैकेयी के ऐसे रोमांचकारी कठोर वचन सुनकर महाराज दशरथ वज्रपतित के समान नीचे गिर पड़े। तत्पश्चात् धीरे-धीरे नेत्र खोलकर उन्होंने अतिभयपूर्वक आंसू पोंछे। इसी समय अपने सामने सिंहिनी के समान बैठी हुई रानी कैकेयी को देखकर कहने लगे, 'हे भद्रे ! मेरे प्राणों को हरने वाले तुम ये क्या वचन

मन्त्रिजन राम की बारंबार प्रशंसा किया करते हैं।

इसलिए हे मुनिश्रेष्ठ ! मेरा विचार है कि मैं अपने सर्वगुणसंपन्न ज्येष्ठपुत्र कमलनयन राम को राज्यपद पर अभिषिक्त कर दूं। क्योंकि मैं अब वृद्ध हो गया हूं।

१. हे सुव्रत ! मैंने दोनों वर आपके पास धरोहर के रूप में रख दिए थे। अब इनमें से एक वर से तो तुरन्त ही मेरे प्रिय पुत्र भरत को इस एकत्रित की हुई सामग्री से युवराज पद पर अभिषिक्त कीजिए और दूसरे से तुरंत ही राम दण्डक वन को चले जाएं।

बोल रही हो ? कमलनयन राम ने तुम्हारा क्या अपराध किया है ? तुम तो अहर्निश मेरे सामने राम के शुभगुण गाया करती थी। तुम तो पहले कहा करती थी कि राम मुझे और कौशल्या को समान जानकर सदा ही मेरी सेवा किया करते हैं। फिर इस समय तुम यह उल्टी बात कैसे कह रही हो ? तुम अपने पुत्र के लिए राज्य ले लो, किन्तु राम को घर ही रहने दो। तुम मुझपर कृपा करो, राम से तुम्हें कोई भय नहीं है।'

कौशल्या को जब राम के वनवास का समाचार मिला तो वह एकदम मूच्छित हो गई। इतने में सुमित्रा ने आकर उसे बताया कि राम इधर ही आ रहे हैं। यह सुनते ही वह चेत गई। इतने में राम को अपने सामने पाकर उसे गले लगाया। फिर उनका सिर सूंघकर कहा, 'बेटा, भूख लगी होगी। कुछ मिष्ठान्न खा लो।'

रामचन्द्रजी बोले, 'माता! मुझे भोजन करने का समय नहीं है, क्योंकि आज मेरे लिए यह समय शीघ्र ही दण्डकारण्य जाने के लिए निश्चित किया गया है। मेरे सत्यप्रतिज्ञ पिताजी ने माता कैकेयी को वर देकर भरत को राज्य और मुझे अतीव उत्तम वनवास दिया है। वहां मुनि-वेष से चौदह वर्ष रहकर मैं शीघ्र ही लौट आऊंगा। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें।'

तब लक्ष्मण ने भी राम की ओर देखकर रोष से त्रिलोकी को दग्ध करते हुए कहा, 'मैं उन्मत्त, भ्रान्तचित्त और कैकेयी के वशवर्ती राजा दशरथ को बांधकर, भरत को उनके सहायक मामा आदि के सहित मार डालूंगा। आज संपूर्ण लोकों को दग्ध करने वाले कालानल के समान मेरे पौरुष को पहले वे

सब लोग देख लें। हे शत्रुदमन राम! आप अभिषेक की तैयारी कीजिए। इसमें विघ्न उपस्थित करने वालों को मैं हाथ में धनुष-बाण लेकर मार डालूंगा।'

रामचन्द्रजी लक्ष्मण को शांत करते हैं। तदुपरान्त रामचन्द्रजी लक्ष्मण तथा सीता को साथ लिए आदर के साथ सबसे विदा लेते हैं। वल्कल पहन राजकुमारों को देख अन्तःपुरवासी तथा नगरवासी भी रो पड़ते हैं। इस प्रकार रामचन्द्रजी अपने चौदह साल का वनवास पूरा करने निकल पड़े।

इधर दशरथ जी राम के वियोग का समाचार सुनकर :

हा राम पुत्र हा सीते, हा लक्ष्मण गुणाकर !
त्वद्वियोगादहं प्राप्तो मृत्युं कैकेयिसम्भवम् ।।[1]

यह कहते दशरथ प्राण त्यागकर स्वर्ग को चले गए।

रामचन्द्रजी अयोध्या से निकलकर नदी-नाले, पर्वत अरण्य इत्यादि पार करते, अपने भक्तों को दर्शन देकर कृतकृत्य करते तथा राक्षसों का संहार करते आखिर गौतमी नदी के किनारे पहुंचे। और वहां पंचवटी में एक पर्णशाला बनाकर रहने लगे। वह प्रदेश नानाविध फल-वृक्षों से परिपूर्ण था। विविध प्रकार के पशु-पक्षी वहां पर संचार करते थे। फूलों की सुगन्ध से वहां का वातावरण महक रहा था। वहां के ताड़ वृक्ष, खजूर, आम, जलकदंब, पुन्नाग, कटहल, कदम्ब, अशोक, इत्यादि वृक्षराज तथा चमेली इत्यादि फूल के पौधे, लता-गुल्म अत्यन्त शोभायमान थे।

---

१. हा पुत्र राम! हा सीते! हा गुणाकर लक्ष्मण! तुम्हारे वियोग से मैं कैकेयी द्वारा उपस्थित की हुई मृत्यु को प्राप्त हो रहा हूं।

वे प्रतिदिन पुण्यसलिला गोदावरी में स्नान करते और आसपास में प्राप्त होने वाले कन्दमूल और फल का सेवन करते अपने दिन आनन्दपूर्वक बिताने लगे।

एक दिन श्री रामचन्द्रजी स्नान, संध्या-वन्दन इत्यादि से निवृत्त हो पंचवटी में सीताजी तथा लक्ष्मण के साथ वार्तालाप कर रहे थे। उस समय वहां पर एक राक्षसांगना आ पहुंची। वह दुष्टमुखी थी, उसका स्वर भैरव था। उसका रूप विकृत और भयंकर था। वह वृद्धा और कुरूपिनी थी लेकिन वह अपने को त्रिलोकसुन्दरी मानती थी। उसे अपने वंश पर अभिमान था; अपनी शक्ति पर घमण्ड था। वह और कोई नहीं, 'शूर्पणखा' थी—लंकापुरी के राजा रावण की बहिन। उसका वृत्तान्त यों है—मातंग महर्षि ने प्रारम्भ किया—

दैत्य वंश का प्रतापी राजा रावण लंकापुरी पर राज्य करता है। वह बहुत बड़ा शिव-भक्त है। उसे अपनी वीरता पर अभिमान है। असंख्य सुन्दर नारियों को उसने कैद कर अपने महल में रख लिया है। उसमें गुण भी हैं और दोष भी। उसकी पत्नी मन्दोदरी और उसकी बहू सुलोचना बड़ी पतिव्रता हैं।

रावण की बहिन शूर्पणखा का विवाह विद्युज्जिह्व नामक एक राक्षस के साथ सम्पन्न हुआ था। उनके जम्बुमाली नामक एक प्रतापी पुत्र था।

एक बार किसी कारणवश रावण ने अपने बहनोई विद्युज्जिह्व का अपमान किया। उन दोनों में वैरभाव बढ़ता गया। आखिर एक दिन क्रोध में आकर रावण ने विद्युज्जिह्व का अन्त कर दिया। शूर्पणखा विधवा हो गई।

शूर्पणखा के पुत्र जंबुमाली को रावण पर क्रोध आया। अपने पितृ-हंतक रावण से प्रतिशोध लेने के लिए उसने दूर-स्थित दण्डकारण्य में जाकर सूर्य भगवान् की घोर तपस्या की। अन्न-जल त्याग दिया। एकनिष्ठ हो बहुत समय तक तपस्या में लीन रहा। वह जहां पर बैठे तप कर रहा था, उसके चारों तरफ बांस और झुरमुट उग आए। वे सब इस तरह फैल गए कि देखने में वह एक छोटा-सा घना जंगल मालूम होने लगा। जंबुमाली उसमें छिप गया। शूर्पणखा कभी-कभी वहां पर जाती और अपने पुत्र को तपस्या में निमग्न देख लौट आती थी।

जम्बुमाली की कठिन तपस्या पर प्रसन्न हो भगवान् भास्कर ने उसके पास एक महिमासंपन्न तेज़ खड्ग भेजा। गगनमण्डल से चमकता वह जम्बुमाली के निकट पहुंचा। उसकी तेज़ दमक के कारण जम्बुमाली के नयन अपने-आप खुल गए। खड्ग के साथ सूर्यदेव को न देख उसे क्रोध आया, उसने वह खड्ग वापस लौटा दिया।

वीरवर लक्ष्मण प्रतिदिन की भांति कंद-मूल और फल लाने पंचवटी से निकले। हठात् उन्होंने देखा कि कोई तेज़ धार वाला खड्ग गगनमण्डल की ओर चला जा रहा है। लक्ष्मण ने झट उछलकर उसे अपने हाथ में लिया। देखा, वह असाधारण खड्ग था। उसकी पैनी धार की परीक्षा करने के विचार से पास में स्थित झुरमुट पर वार किया।

किन्तु आश्चर्य! झुरमुट के साथ किसी मुनिवेषधारी का सिर कटकर नीचे आ गिरा। लक्ष्मण भयभीत हो उठे। उनके

मन में तरह-तरह की आशंकाएं होने लगीं। मुनि की हत्या का पाप उनके सिर लगने वाला है—तुरन्त वे अपने भाई को यह समाचार देने पंचवटी की तरफ चले गए।

लक्ष्मण के जाने के थोड़ी देर बाद शूर्पणखा अपने पुत्र को देखने वहां आ पहुंची। अपने पुत्र के कटे शरीर को देख वह चीख उठी। उसी क्षण वह अपने पुत्र के शव पर गिर पड़ी और रोने-कलपने लगी। जब वह कुछ स्वस्थ हुई तो उसमें प्रतिहिंसा की भावना जाग उठी। पास के ऋषि-मुनियों से सारा वृत्तांत जानकर वह उस मुनि-वेषधारी राजकुमार की खोज में निकल पड़ी।

शूर्पणखा धीरे-धीरे पंचवटी के निकट पहुंची। वहां की सुरम्य प्रकृति तथा शांत वातावरण को देख पहले उसने समझा कि यह तपस्वियों की तपोभूमि होगी। जब उसने इधर-उधर झांककर देखा तो एक पर्णकुटी के सामने एक सुन्दर युवा खड़ा हुआ था। उस पुरुष के अलौकिक सौन्दर्य को देख मायावी शूर्पणखा की वासना जागरित हुई। उसकी प्रतिहिंसा की भावना जाती रही। वह जिस कार्य के निमित्त आई थी, उसे बिलकुल भूल गई। अब वह उस युवक से प्रेम-याचना करने लगी।

वह युवा और कोई न थे, मुनिवेषधारी रामचन्द्र ही थे। रामचन्द्रजी ने शीतल शब्दों में उसे समझाया, 'हम रघुवंशी एक पत्नीव्रत होते हैं। पर-नारी को बुरी नज़र से देखना पाप समझते हैं। तुम मेरी भगिनी के समान हो।'

'हे राम ! तुम तो पुरुष हो, अनेक स्त्रियों के साथ तुम

सुख भोग सकते हो। सभी राजा ऐसा ही करते हैं। जिस पुरुष की जितनी अधिक पत्नियां होती हैं, वह उतना पराक्रमी समझा जाता है। मैं कामरूपिणी हूं। मेरे नाम से ही सभी प्राणी कांप उठते हैं। मेरे भाई बड़े बलशाली हैं। मुझसे शादी करोगे तो तुम्हें उन सबकी मदद मिलेगी। मैं तुम्हें अपना पति बनाना चाहती हूं। मैंने मन में तुम्हें वर लिया है। सीता तो विकृत है, मानवी है, कुरूपिणी है। वह तुम्हारे योग्य पत्नी नहीं है। मैं इस लम्बी और झुकी कमर वाली सीता और तुम्हारे भाई लक्ष्मण को अभी खा डालती हूं।' और उसने फिर कहा, 'हे मेरे हृदय को चुराने वाले राम ! हम दोनों इन पर्वत-शिखरों, वनों, गुफाओं में विहार करते युग-युगों तक सुख भोगते रहेंगे। चलो, मेरे साथ। चलो न !'

'देवी, मैंने सीताजी से शादी कर ली है। इससे मुझे काफी सुख मिल रहा है। तुम सौत की यातनाएं भोग नहीं सकोगी। मेरे भाई लक्ष्मण सुन्दर और युवा हैं। उनकी पत्नी यहां नहीं है। तुम्हारे विशाल नेत्र तुम्हारा सारा सौन्दर्य सर्वथा उसके योग्य है। तुम उससे शादी कर लो।' राम ने कह दिया।

ये वचन सुनकर काममोहिता शूर्पणखा लक्ष्मण के पास गई और उनसे कहा, 'हे प्रियतम, मेरी देह ग्रीष्म में शीतल तथा जाड़े में ताप प्रदान करने वाली है। मुझसे शादी करके सुख भोगो। मैं तुम्हारे सौन्दर्य के लिए योग्य पत्नी हूं।'

लक्ष्मण ने कहा, 'हे कमलकर्णिनी ! मैं तो अपने भाई श्रीरामचन्द्र का दास हूं। तुम मेरी भार्या होकर दासी बनना चाहती हो ! इसलिए तुम उन्हींसे शादी कर सभी प्रकार के सुख

भोगो। तुम्हारे सुन्दर रूप पर वे मुग्ध हो जाएंगे।'

लक्ष्मण की ये बातें सुनकर शूर्पणखा बड़ी आशा से पुनः राम के पास पहुंची। लेकिन रामचन्द्रजी की बातों का उसपर कोई प्रभाव न पड़ा। आखिर उन्होंने शूर्पणखा को लक्ष्मण के पास भेज दिया। लक्ष्मण ने भी अनेक प्रकार से समझाया परन्तु वह कभी सीताजी को निगलने की बात करती और कभी डराती तथा धमकाती थी। लक्ष्मण ने गुस्से में आकर उसके कान और नाक काट दिए। शूर्पणखा रोती-कलपती वहां से दक्षिण की ओर चली गई।

रामचन्द्र, सीताजी तथा लक्ष्मण ने सोचा कि इस मायाविनी द्वारा कोई अनिष्ट-कार्य ज़रूर होगा। शूर्पणखा ने लंका में प्रवेश कर सीताजी के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया और उसे उठा लाने की सलाह दी। मूर्ख रावण ने छल-कपट तथा वेष बदलकर भिक्षुक के रूप में पंचवटी में प्रवेश किया तथा वह सीताजी को उठा ले गया।

सीताजी को कुटी में न पाकर श्री रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण उनकी खोज में निकले।

—इस प्रकार महर्षि ने रामायण की कथा समाप्त की।

३५

आश्रम के सामने सभी पशु और पक्षी इकट्ठे हुए हैं। वे सब बहुत खिन्न मालूम हो रहे हैं। मातंग महर्षि कुटीर से बाहर

आते हैं और सबसे अपने समाधिस्थ हो जाने का समाचार सुनाकर विदाई लेते हैं। इसके वाद वे शवरी को अपने निकट बुलाते हैं। शबरी को वहुत ही व्याकुल देख उसे सांत्वना देते हैं और समझा देते हैं, 'हम दोनों एक-दूसरे से अलग हो रहे हैं। इसकी चिन्ता तुम्हें नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जो कोई इस पृथ्वी पर जन्म लेता है उसे एक न एक दिन वियोग का अनुभव करना ही पड़ेगा। इस प्राकृतिक सत्य का अपवाद नहीं है।'

इसपर शबरी मातंग महर्षि से प्रार्थना करती है कि वे उसे भी अपने साथ ले जाएं। तब मातंग महर्षि उसके जीवन के परम लक्ष्य की ओर संकेत करते हुए कहते हैं :

'तुमने एक अद्‌भुत कार्य-साधना के लिए इस धरती पर जन्म धारण किया है। तुम्हारे जन्म से भगवान् और मानव-समाज की भी भलाई होने वाली है। उस दिन की तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी...'

इसके उपरांत मातंग महर्षि शबरी के कानों में कोई अद्‌भुत रहस्य फूंक देते हैं। शबरी उसे हृदयंगम करके असीम हर्ष का अनुभव करती है। उसका मुखमंडल प्रदीप्त हो उठता है। महर्षि शवरी के तेजोमय बदन को देख एवं राम-विलाप का स्मरण कर पुलकित हो उठते हैं। उनके पैर अप्रयत्न ही कुटीर के भीतर उन्हें ले जाते हैं। शबरी भी उनका अनुगमन करती है।

मातंग महर्षि जीव-समाधिस्थ हो जाते हैं। उस समय निसर्ग के चतुर्दिक् एक अपूर्व कांति व्याप्त हो जाती है। समस्त प्रकृति अपार आनंद के मारे पुलकित हो उठती है। समाधि से कोई दिव्य सुगंधि उठकर आसपास के वातावरण को महका देती है।

वृक्ष और पौधों पर फूल खिल उठते हैं। पक्षी मधुमय कंठ से गान करते हैं।

शबरी महर्षि की समाधि पर चौकोरा पत्थर डालकर उसे ढक देती है। समाधि से दिव्य ज्योतियां निकलकर वायुमंडल के बीच प्रदीप्त होने लगती हैं। चारों तरफ निस्तब्धता छा जाती है। शबरी तीन बार समाधि की प्रदक्षिणा करती है और उसके सामने मस्तक झुकाकर बाहर चली जाती है।

ठीक समाधि के सामने बाहर शबरी तथा पशु-पक्षी ध्यान-मग्न हो शांति के साथ तारक नाम जपते हैं:

रघुपति राघव राजा राम
पतित - पावन सीता - राम
सुन्दरविग्रह मेघश्याम
सीतारमण शोभित राम
दीनोद्धारक दशरथपुत्र
जगदुद्धारक श्यामलगात्र
अनाथ-रक्षक अवतार-पुरुष
भक्त-जन-रक्षक परम पुरुष !

हनुमान् बड़े अभिमान के साथ इधर-उधर टहल रहे हैं। इतने में तारक नाम के उच्चारण की मधुर ध्वनि उसे सुनाई देती है। वे धीरे-धीरे उस दिशा की ओर आगे बढ़ते हुए चलते हैं। कुछ समय के उपरांत वे एक आश्रम के सामने पहुंच जाते हैं। वहां एक वृक्ष के नीचे शबरी ध्यानमग्न बैठी है। और तारक

मंत्र का जाप कर रही है। हनुमान् उसका ध्यान भंग करने की कई प्रकार से चेष्टा करते हैं। लेकिन शबरी अपनी ध्यानावस्था से विचलित नहीं होती। आखिर वे ऊबकर उस वृक्ष पर चढ़ जाते हैं। वृक्ष की शाखाओं को पकड़कर वे पहले ज़ोर से हिला देते हैं। लेकिन कोई फायदा न होते देख वे फल तोड़ते हैं और उसे अपने हाथ में लेकर शबरी के ऊपर गिरा देते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि शबरी पर एक भी फल नहीं गिरता। आखिर वे एक ऐसी शाखा को तोड़कर शबरी के ऊपर गिरा देते हैं जिसमें दर्जनों पके हुए फल भरे थे। पर वे फल भी शबरी से स्पर्श किए बिना उछलकर चारों तरफ गिर जाते हैं। शाखा भी दूर उड़ जाती है। हनुमान् देखते हैं तो उन्हें ऐसा मालूम होने लगता है मानो उस शाखा का प्रत्येक फल रामनाम का स्मरण कर रहा है। वे विकल हो जाते हैं। इतने में शबरी अपना ध्यान समाप्त कर उठ खड़ी होती है। वृक्ष पर आवाज़ होते देख शबरी अपना सिर उठाकर इधर-उधर देखती है तो हंसते हुए हनुमान् उसे दीख पड़ते हैं।

शबरी को खड़ा देख हनुमान् बहुत खुश होते हैं। तदुपरांत शबरी के निकट पहुंचकर श्री रामचन्द्र के बारे में उससे कई तरह के प्रश्न पूछते हैं। शबरी रामावतार के परम रहस्य का उद्घाटन करते हुए उन्हें समझा देती है कि श्री रामचन्द्र साधारण मानव नहीं बल्कि वे अवतार-पुरुष हैं। वे संसार के सभी प्राणियों के उद्धार के लिए इस पृथ्वी पर मानव के रूप में अवतरित हुए हैं। इसके बाद वह रामचन्द्रजी के विशिष्ट गुणों का हनुमान् को परिचय कराती है। हनुमान् अनायास ही श्री रामचन्द्र के प्रति

आकर्षित हो जाते हैं। इसके बाद वे भी इस भवसागर को पार करने का मार्ग बताने की प्रार्थना करते हैं। शबरी उनकी भक्ति और श्रद्धा को देख तारक मंत्र का उपदेश देती है। हनुमान् बहुत प्रसन्न हो उस आनन्द में श्री रामचन्द्र का नाम जपते-जपते तन्मय हो नाचने लगते हैं। हनुमान् को देख वहां के सभी पशु-पक्षी भी नाचने लगते हैं।

हनुमान् पंपा सरोवर के तट पर बैठे तारक नाम का जप कर रहे हैं। वे अपने ध्यान में इस प्रकार तन्मय हो गए हैं कि अन्य विषयों पर उनका बिलकुल ध्यान ही नहीं है। वे इतने उच्च स्वर में तारक मंत्र का जप कर रहे हैं कि उनकी ध्वनि पंपा सरोवर में नाव पर चलने वाली ईरी के कानों में जा पड़ती है। उस ध्वनि को सुन ईरी अपनी नाव को किनारे की तरफ ले चलती है। वहां पर देखती है कि एक बलिष्ठ एवं नौजवान पंपा के तट पर बैठे किसीके ध्यान में मग्न है। उसके मुखमंडल पर ब्रह्मतेज की आभा दमक रही है। इस सुन्दर तथा स्वस्थ युवक को देख ईरी का मन ललचा जाता है। वह हनुमान् के निकट पहुंचकर ज़ोर से पुकारती है और तरह-तरह से उसे अपनी तरफ आकर्षित करने की असफल चेष्टा करती है। लेकिन थोड़ी देर तक हनुमान् ध्यान-मग्न ही रहे। ईरी के द्वारा बहुत शोर-गुल करने पर उनका ध्यान भंग हुआ। हनुमान् को आंखें खोलते देख ईरी उछल पड़ी। उसने बड़ी खुशी से स्वयं अपना परिचय कराया कि वह एक केवट नायक की पुत्री है और उस परिचय में यह भी बताया कि वह पंपा सरोवर की राजकुमारी है। उसने सोचा कि नायक की पुत्री कहने से वह युवक ज़रूर उससे

प्रसन्नतापूर्वक बोलेगा और उसके परिचय को पाकर वह अपने को धन्य समझेगा। लेकिन ऐसा न होते देख वह मन ही मन खीझ उठी। उसने यह भी सोचा कि उसकी चढ़ती जवानी पर वह युवक ज़रूर मोहित होगा। लेकिन उसके यौवन को तिरस्कृत करते देख वह कुपित हो गई। पर उसका मन हनुमान् पर रीझ गया था, इसलिए वह अपने क्रोध को दबाकर गिड़गिड़ाने लगी कि हनुमान् उसे मुहब्बत का सबक सिखाएं···हनुमान् ने बड़ी धीरता के साथ ये शब्द सुने। उन्होंने बड़ी सहृदयता के साथ ईरी से कहा, 'रामनाम तो प्रेममय है, इसलिए उसका जप करती जाओ तो तुम इस भवसागर से तर जाओगी।'

इसके उपरांत हनुमान् मौन हो गए। फिर वे ध्यानमग्न हो गए। हनुमान् को फिर से ध्याननिष्ठ होते देख ईरी सह न सकी। उसके सारे प्रयत्न निष्फल होते देख वह झुंझला उठी। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि वह अपनी इच्छा की पूर्ति करके ही छोड़ेगी। इस बार ईरी ने अपनी सारी शक्ति लगाकर हनुमान् को तंग करना चाहा। ईरी की करतूतों से हनुमान् ऊब उठे और वहां से चल दिए।

ईरी हनुमान् को जाते देख उनके पीछे-पीछे चल पड़ी।

हनुमान् एक रम्य प्रदेश में पहुंचकर फिर ध्यानमग्न हो गए। ईरी ने इस बार भी हनुमान् को अपनी तरफ आकर्पित करने की कोशिश की। आखिर उनका ध्यान भंग करने में वह सफल हो गई। हनुमान् ईरी के व्यवहार से तंग आ गए। क्रोध में आकर

गरज उठे, 'आखिर तुम्हें क्या हो गया है ? मुझे तंग क्यों करती हो ? कारण भी तो जानूं ?'

ईरी ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं तुमसे प्रेम करती हूं । अब समझे ?'

हनुमान् ने कहा, 'ओह ! तुम मुझसे प्रेम करती हो ? मेरी माता मुझसे प्रेम करती है। शबरी मुझसे प्रेम करती है। यहां के पशु-पक्षी सब मुझसे प्रेम करते हैं। लेकिन वे सब तुम्हारी तरह मुझे तंग नहीं करते।'

ईरी ने कहा, 'मेरा प्रेम कुछ दूसरे ढंग का है। मैं तुम्हें अपना बनाना चाहती हूं। समझे कि नहीं ? मैं भी तुम्हारी हो जाऊंगी। हम दोनों…'

हनुमान् चहचहाए, 'यह कैसे हो सकता है ? मैं श्री रामचन्द्र का हो गया हूं । मुझे माफ करो । मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकता…'

'वाह, क्यों नहीं ? तुम मुझसे शादी करो। मेरे साथ रहो। मैं भी तुम्हारे साथ रहूंगी। हम दोनों खूब सुख भोगेंगे।'

हनुमान् ने कहा, 'मेरे मन में श्री रामचन्द्र बस गए हैं। मैं उन्हींके साथ रहूंगा। मैं दुनिया के झमेले में पड़ना नहीं चाहता।'

'क्या तुम मर्द नहीं हो ? एक मर्द के लिए एक औरत चाहिए। तुम भी कैसे जंगली आदमी हो ?'

हनुमान् चुप रहे।

ईरी ने हनुमान् को तंग करने की बहुत कोशिश की। इतने में शबरी वहां आ पहुंची। हनुमान् ने शबरी से ईरी के बारे में

शिकायत की, और वहां से चले गए। ईरी के नेत्रों में आंसू छलछला उठे। शबरी ने बड़े प्रेम से उसकी पीठ थपथपाई और उसे प्रेम की महत्ता और रहस्य का परिचय कराया। ईरी प्रसन्न-चित्त हो वहां से चली गई।

३६

शबर लोग राहू के व्यवहार से तंग आ गए हैं। विष्कंभ और उसके अन्य साथी इस अवसर से फायदा उठाकर अपने स्वार्थ को सिद्धि कर रहे हैं। वे शबर लोगों पर इस तरह अत्याचार कर रहे हैं कि कुछ वर्णन नहीं किया जा सकता। शबर लोग विवश होकर इन कठिनाइयों को सहते जा रहे हैं। कभी-कभी वे सोचते हैं कि इस तरह के जीवन बिताने की अपेक्षा मृत्यु को प्राप्त होना ही अधिक सुखदायक होगा। जब सहनशीलता भी जवाब दे चुकी तब लोगों ने साहस करके विद्रोह करने की सोची। लेकिन बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे ?

आखिर शतभिप ने विद्रोह करने की ठानी। उसने सब लोगों को एक जगह इकट्ठा किया और उन्हें समझाया कि इस तरह हम लोग तकलीफ सहते जाएंगे तो कोई फायदा नहीं है। ये हमसे बेगारी लेते हैं और भूखों मारते हैं। इससे पशुओं का जीवन ही अच्छा है। हममें ज़रा भी आत्माभिमान है तो हमें इस प्रकार का निकृष्ट जीवन बिताने के लिए कभी तैयार नहीं होना है।

उसने लोगों को शबरी के सद्व्यवहार, उसकी शालीनता तथा उस समय के लोगों के जीवन का स्मरण दिलाकर उत्तेजना भरे शब्दों में कहा, 'क्या शबरी हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार करती थीं जैसे कि ये मूर्ख हमारे साथ करते हैं ? ये लोग तो हमारी मेहनत और मशक्कत का फायदा उठाकर सुख भोगना चाहते हैं। हमारे प्राणों के साथ खिलवाड़ करते हैं। हमको पशु मानकर हमसे बैल-गधे का सा परिश्रम लेते हैं। हमारे सुख और आराम के बारे में कभी नहीं सोचते। इसलिए भाइयो, आज से हम लोग खुद अपने स्वामी हैं। हम उनकी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे। उनके तलवे नहीं चाटेंगे। वे हमारे कोई नहीं होते। यदि वे हमपर ज़ोर-ज़बरदस्ती करें तो हम लोग ईंट का जवाब पत्थर से देंगे···'

शतभिष बोल ही रहा था कि इतने में वहां पर विष्कंभ और उसके कुछ साथी आए। आते ही विष्कंभ ने लोगों को आदेश दिया कि वे लोग कल का बचा हुआ काम जल्दी पूरा करें। विष्कंभ के मुंह से ये शब्द निकले ही थे कि शतभिष ने आगे बढ़कर वहां पर इकट्ठी भीड़ को लक्ष्य करके आदेश दिया, 'दोस्तो, इन दुष्टों को पकड़कर पेड़ों से बांध दो।' विष्कंभ तथा उसके साथी लोगों को उत्तेजित देख परिस्थिति को समझ गए और हवा से बातें करने लगे।

शतभिष ने लोगों को समझाया, 'सुनो, ऐ मेरे दोस्तो, हमारी बेवकूफी, सब्र, और बुद्धूपन को देख वे लोग हमपर हुकुम चलाते थे। हमें अपने पैरों का जूता समझते थे लेकिन जब हम उनके विरुद्ध हो गए तब उन लोगों की अक्ल ठिकाने पर आ गई।

अब तुम लोग देखते हो, कैसे वे लोग बेतहाशा दौड़ते चले जा रहे हैं। इसलिए यदि हम लोग शांति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं तो हमें फिर शबरी की खोज करनी पड़ेगी और उनको ले आकर हमें फिर से उन्हें अपना नायक बनाना होगा। उनके समय में हम लोग सुख की नींद सोते थे। फिर जल्दी वे दिन आने वाले हैं। तुम सब लोग उठो, तैयार हो जाओ। हम लोग ढूंढ़कर शबरी को ले आएंगे।'

थोड़ी देर के बाद सभी लोग उठे और शबरी की खोज में चल पड़े।

३७

शबरी ध्यान-निष्ठा में निमग्न हो तारक नाम का मंत्र जपती पंपा सरोवर के तट पर बैठी हुई है। आश्रम के सभी पशु-पक्षी रामनाम का गान कर रहे हैं। वहां के आसपास का वातावरण ऐसा शांत एवं तन्मय है कि मानो समस्त प्रकृति तारक मंत्र का उच्चारण कर रही हो।

वायुमंडल में तारक मंत्र की ध्वनि गूंज रही है। सारा नभमंडल रामनाम का जप करते प्रतीत हो रहा है। उसी समय गगनमंडल पर जाते कबंध राक्षस के कानों में तारक मंत्र की मीठी तान जा टकराई। उसने चौंककर पृथ्वी की तरफ देखा ध्यानमग्न बैठी शबरी पर उसकी दृष्टि पड़ी। वह मुस्कराया। उसने अनुभव किया कि उसे आज अच्छा भोजन मिल गया है।

ज़रा नीचे की तरफ उतरकर कबंध ने अपने लंबे हाथ शबरी को पकड़ने के लिए फैलाए। लेकिन हठात् उसके हाथ पीछे की ओर खिच गए। शबरी के तारक मंत्र की शक्ति उसकी रक्षा कर रही थी। इसलिए उसके हाथ आगे न बढ़ सके। उसी समय शबरी के भीतर ज्वाला-सी एक वस्तु निकली और ऊपर की ओर फैली। कबंध ने झटके का अनुभव किया। उसकी आंखें चौंधिया गईं। वह विस्मित हो देखता ही रह गया। यह उसके लिए नया अनुभव था।

कबंध इस प्रकार छटपटा ही रहा था कि इतने में उसने देखा कि राहू विष्कंभ तथा उसके अन्य साथियों को लेकर घटनास्थल की ओर आगे बढ़ा चला आ रहा है। आश्रम के पशु-पक्षियों ने उस दल के लोगों को अपना शत्रु समझा और उनपर धावा बोल दिया। कबंध ने राहू के अनुयायियों को देखा। उसने अपना हाथ बढ़ाया और एक-एक करके सबको हज़म कर डाला। राहू यह देखकर भाग गया और झट एक झाड़ी के पीछे छिप गया। उसने अपने साथियों को कबंध का भोजन बनते अपनी आंखों देखा। लेकिन वह उनकी ज़रा भी मदद नहीं कर सका। इधर कबंध ने सबको समाप्त किया। फिर चारों तरफ अपनी दृष्टि दौड़ाई। झाड़ी के पीछे छिपे राहू पर उसकी नज़र पड़ी। पल भर में हाथ बढ़ाया। दूसरे क्षण राहू कबंध का ग्रास बना था। वह छटपटाया। शबरी से बचाने की याचना की। परन्तु शबरी के नेत्र खोलने से पूर्व ही राहू को कबंध ने हज़म कर लिया था।

तदुपरान्त शबरी को भी अपना भोजन बनाने के विचार से कबंध ने फिर प्रयत्न किया किन्तु इस बार जो झटका लगा उससे

वह बहुत दूर जा गिरा ।

श्री रामचन्द्र और लक्ष्मण एक भयंकर जंगल से होते हुए जा रहे हैं । उनके रास्ते में कबंध एक पहाड़ की भांति पृथ्वी पर पड़ा हुआ है । श्री रामचन्द्र और लक्ष्मण ने तो उसको पहले नहीं देखा । कबंध ने उन दोनों सुन्दर राजकुमारों को देखा तो उसके अधर और दांत उन्हें चबाने के लिए ललचा उठे । उसकी जिह्वा से लार टपकने लगी । उसने जल्दी अपने दोनों हाथ फैलाए और राम-लक्ष्मण को अपनी दोनों बाहुओं में कस लिया । दूसरे ही क्षण वह आकाश की ओर उड़ गया । श्री राम और लक्ष्मण ने देखा कि वे दोनों एक राक्षस के हाथों में बंदी हैं । तुरन्त उन दोनों ने कबंध के दोनों मजबूत हाथ काट डाले । कबंध राक्षस धम्म से पृथ्वी पर ऐसा गिर गया मानो कोई मिट्टी का ढेर हो । कबंध ने श्री रामचन्द्र जी को पहचाना । उसने श्री रामचन्द्र जी को अपने शाप का सारा वृत्तान्त कह सुनाया और यह भी बताया कि वह जल्दी मरने जा रहा है । श्री रामचन्द्रजी ने उस-पर बड़ी दया दिखाई । कबंध की मृत्यु के बाद उन्होंने लक्ष्मण की सहायता से दाह-संस्कार किया । वह कुरूप राक्षस तुरन्त एक सुन्दर गन्धर्व के रूप में परिवर्तित हो गया । गन्धर्व ने श्री रामचन्द्र और लक्ष्मण की कृतज्ञतापूर्वक प्रशंसा की । तदुपरांत उन्हें शबरी का वृत्तान्त सुनाया । फिर नभोमंडल की ओर उड़कर थोड़ी ही देर में अदृश्य हो गया श्री रामचन्द्र और लक्ष्मण अपने रास्ते फिर जंगल से होकर आगे बढ़े ।

उस जंगल की शोभा का वर्णन करना वाणी के लिए भी असंभव है। प्रकृति की शोभा पराकाष्ठा को पहुंच गई है। वहां की प्रकृति स्वर्ग का स्मरण दिला रही है। ऐसा मालूम होता है मानो प्रकृति अपने संपूर्ण सौन्दर्य को एकत्रित करके प्रसन्नवदन श्री रामचन्द्रजी के स्वागत में मंदहास कर रही है।

३८

प्रकृति में इस विचित्र एवं अपूर्व परिवर्तन को देख विश्वंभर मुनियों को सूचित करता है कि श्री रामचन्द्र बहुत शीघ्र ही हमारे यहां पधारने वाले हैं। वह सब आश्रमवासियों को आदेश देता है कि श्री रामचन्द्रजी के स्वागत के लिए आवश्यक अच्छी तैयारियां की जाएं। आश्रम के एक वृक्ष पर बैठा तोता सुन लेता है और वह यह चिल्लाते हुए उड़ता है, 'श्री राम, श्री राम, श्री रामचन्द्रजी आने वाले हैं...'

उधर शबरी अपने आश्रम में सभी पक्षियों को तारक मंत्र का उपदेश देते हुए उन्हें फल दे रही है। इतने में वहां तोता पहुंच जाता है। शबरी उसको विलंब से आते देख पूछती है :

'तुमने देरी क्यों की ? कहां गए थे ? बताओ तो ?'

तोता कहता है, 'मैं एक अच्छा समाचार लाया हूं। वह श्री रामचन्द्रजी के बारे में है।'

शबरी बड़ी आतुरता से पूछती है, 'वह क्या समाचार है ? जल्दी बताओ। बोलते क्यों नहीं ?'

'उहुं ! मैं नहीं बताऊंगा…'

शबरी उससे अनुनय-विनय करती है। उसके सामने गिड़-गिड़ाती है। उससे प्रार्थना करती है। आखिर तोता शबरी पर तथा उसकी भक्ति पर प्रसन्न हो बताता है—

'श्री रामचन्द्र कल सुबह मुनिवाटिका में पधारने वाले हैं। यह शुभ समाचार अभी-अभी मुझे मुनिवाटिका में मालूम हुआ है।

शबरी अनिर्वचनीय आनन्द में तन्मय हो रामचन्द्रजी का भजन करते नाचने लगती है।

शबरी मातंग महर्षि की समाधि के निकट पहुंचकर घुटने टेककर बैठ जाती है। वह अपने आनन्द का परिचय देते हुए कहती है, 'वह दिन सत्य सावित हुआ है। महात्माओं की वाणी व्यर्थ कभी नहीं जाती। गुरुदेव ! आप इस समय होते तो कितना अच्छा होता !'

सूर्य भगवान् अपनी स्वर्णिम किरणों को समस्त प्रकृति में फैलाए मंदहास के साथ निकल रहा है। समस्त प्रकृति अपार हर्ष के मारे प्रफुल्लित है। सृष्टि के समस्त वृक्ष, पौधे, सब अपनी हरियाली को बिखेरते मानो अपनी प्रसन्नता का परिचय दे रहे हैं। धरती माता पुलकित हो मानो अवतार-पुरुष के स्वागत में अपनी आंखें बिछाए प्रतीक्षा कर रही है।

शबरी सुन्दर प्रकृति के उपहार फूल, फल तथा शहद चुन-कर मुनिवाटिका की ओर आगे बढ़ती है। पक्षी और पशु सब

उसका अनुगमन करते हैं । वे सब तारक मंत्र का जप करते पथ पर जाते ऐसे दिखाई देते हैं मानो साधुओं की कोई जमात अपने आराध्य की खोज में जा रही हो।

शबरी अपने अनुयायियों को साथ लेकर मुनिवाटिका के निकट पहुंच जाती है । वहां पर रामचन्द्रजी के अपूर्व स्वागत की अच्छी तैयारियां देख वह बहुत सुख का अनुभव करती है। रामचन्द्रजी के आगमन का समाचार उसके जीवन के लिए एक दिव्यामृत प्रदान करने वाला था। वह उसी खुशी में अलंकृत आश्रम को देखने आगे बढ़ी।

आश्रम के मुनियों ने शबरी को मुनिवाटिका के द्वार के पास पहुंचते ही रुक जाने का आदेश दिया और पूछा, 'तुम कौन हो ? और यहां पर किस लिए आई हो ?'

शबरी ने अपना वास्तविक वृत्तांत सुनाकर कहा, 'मैं अवतार-पुरुष के दर्शन कर अपने जन्म को धन्य बनाने के लिए आई हूं । उससे भी बढ़कर एक दूसरा कारण यह है कि मातंग महर्षि ने मुझे यह आदेश दिया था कि मैं रामचन्द्रजी को उनके कुछ महत्त्व सन्देश पहुंचाऊं।'

मुनियों ने यह कहते हुए शबरी को वहां से भगा दिया कि वह एक पापिनी है। वह उस परमपावन मूर्ति के समक्ष उपस्थित होने लायक नहीं है । उन मुनियों में से एक-दो ने शबरी के हाथ से फूल, फल छीन लिए और उन्हें ज़मीन पर पटक दिया। यह देख शबरी के साथ आए हुए पशु और पक्षी क्रोधित हो उठे। उन सबने आश्रमवासियों पर चढ़ाई कर दी । शबरी ने उन्हें अपने शीतल शब्दों के द्वारा समझा-बुझाकर शांत किया

और उन्हें अपने आश्रम की ओर वापस ले गई ।

शबरी अब मातंग महर्षि की समाधि के पास बैठी हुई है । उसका चित्त व्याकुल है । उसके मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे हैं । कभी वह अधीर हो उठती है। लेकिन उसकी अन्तरात्मा समझाती है कि रामचन्द्रजी अवश्य आ जाएंगे । तथा महर्षि के वचन बेकार साबित नहीं होंगे ।

शबरी को अब अपने ऊपर प्रबल विश्वास हो गया। पुनः उसका मन निर्मल हो उठा। वह मारे प्रसन्नता के उछलती कूदती बाहर आ गई।

प्रातःकाल का समय है । समस्त प्रकृति अपने आनन्द को लुटा रही है । जंगल के पशु-पक्षी तथा सारी प्रकृति के लिए भी यह एक अपूर्व एवं चिरस्मरणीय दिन है । आज सभी परम पुरुष के पवित्र चरणों की धूलि पाकर अपने जन्म को सार्थक बनाने वाले हैं। शबरी के आनन्द की तो कोई सीमा ही नहीं है । वह अपने उद्धारक प्रभु राम के स्वागत की तैयारी में निमग्न है। उसकी सारी तपस्या का फल आज मिलने जा रहा है। उसने जीवन भर जिस लक्ष्य को प्राप्त करने की साधना की है वह आज पूर्ण होने वाला है। उसके हृदय-सागर में अपूर्व आनन्द की तरंगें कल्लोल करने लगीं। वह तन्मय हो अपने आराध्य का गुण गाने लगी :

यः पृथ्वीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थिताश्चिन्मयः।
संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः।

निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद् ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां।
कीर्ति पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥[1]

विश्वोद्भवस्थितिलयादिषु हेतुमेकं
मायाश्रयं विगतमायमचिन्त्यमूर्तिम्।
आनन्दसान्द्रममलं निजबोधरूपं
सीतापति विदिततत्त्वमहं नमामि ॥[2]

मुनिवाटिका में भी सभी मुनि एकत्र हो अवतार-पुरुष के स्वागत की तैयारी में लगे हुए हैं। आज से सबके मन में उत्साह और उमंग हिलोलें मार रहा है। वे सब यह सोचकर बहुत प्रसन्न हैं कि इतने समय के बाद उन्हें अपनी तपश्चर्या का महत्त्व अपने आराध्य को जताने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त होने वाला है। मुनिपत्नियां तो अपने पतिदेवों की प्रशंसा अवतार-पुरुष के मुंह से सुनने की उत्कण्ठा से श्री रामचन्द्रजी के आगमन की प्रतीक्षा में प्रत्येक पल को एक युग के समान व्यतीत कर रही हैं। मुनिवाटिका के बालक और अन्य पशु-पक्षी भी प्रसन्न हैं।

---

१. जिन चिन्मय अविनाशी प्रभु ने पृथ्वी का भार उतारने के लिए देवताओं की प्रार्थना से पृथ्वीतल पर सूर्यवंश में मायामानव रूप से अवतार लिया और जो राक्षसों के समूह को मारकर तथा संसार में अपनी पाप-विनाशिनी अविचल कीर्ति स्थापित कर पुनः अपने आद्य ब्रह्म-स्वरूप में लीन हो गए, उन श्री जानकीनाथ का मैं भजन करती हूं।

२. जो विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय आदि के एकमात्र कारण हैं, माया के आश्रम होकर भी मायातीत हैं, अचिन्त्यस्वरूप हैं, आनंदघन हैं, उपाधिकृत दोषों से रहित हैं तथा स्वयंप्रकाश-स्वरूप हैं। उन तत्ववेत्ता श्री सीतापति को मैं नमस्कार करती हूं।

क्योंकि अवतार-पुरुप के दर्शन सबको प्राप्त नहीं होते।

आश्रम में एक उच्चवेदिका तैयार की गई है। उसमें मुलायम गद्दियां लगाई गई हैं। थालियों में फल-फूल तथा शहद भरकर भगवान् को समर्पित करने के लिए रखे गए हैं। एक कमंडल में पवित्र गंगोदक वेदिका के नीचे अवतार-पुरुष के चरण धोने के लिए रखा हुआ है। सभी आश्रमवासी आज बहुत तड़के ही उठकर स्नान-पान तथा पूजा-पाठ समाप्त कर मुनि-वाटिका के सामने अवतार-पुरुष के स्वागत के लिए खड़े हुए हैं। श्री रामचन्द्रजी के आने का समय निकट आ गया है।

शबरी ध्यान-निष्ठा में निमग्न हो रामनाम का स्मरण कर रही है। आश्रम के पशु-पक्षी भी संगीतमय स्वर में रामनाम का गान कर रहे हैं। सब अपने नेत्र मूंदे सब कुछ भूलकर भगवान् के ध्यान में तन्मय हैं। आखिर श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मण को साथ लिए वहां पर पहुंचते हैं। शबरी को ध्यान-निष्ठा में निमग्न देख रामचन्द्रजी उसके निकट पहुंचकर बड़े ही प्रेम भरे स्वर में पुकारते हैं, 'मां !…'

शबरी ध्यान-निष्ठा से विचलित नहीं हुई। वह अपने नेत्र बन्द किए ध्यान में तन्मय है। यह अपने हृदय में श्री रामचन्द्रजी की मूर्ति प्रतिष्ठा करके उसका आनन्द लूट रही है। श्री रामचंद्रजी शबरी के कोमल हाथ का स्पर्श करते हुए कहते हैं, 'मां ! मैं आ गया हूं…'

शबरी अपने नेत्र खोलकर नीचे देखती है। श्री रामचंद्रजी

के पवित्र चरणों को देखती है । वह उन पादपद्मों पर अपना मस्तक झुका लेती है। इसके बाद वह बड़ी प्रसन्नता से उठ खड़ी होती है और सभी पशु-पक्षियों को यह सूचित करती है कि उनके अनेक रक्षक आए हुए हैं। वे सब रामचन्द्रजी के दर्शन कर पुलकित हो उठते हैं।

आश्रम में सभी मुनि बड़ी उत्सुकता के साथ श्री रामचन्द्रजी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। विश्वम्भर हिसाब लगाकर देखता है तो उसे मालूम होता है कि श्री रामचन्द्रजी के आने का समय हो गया है। यह खबर सब लोगों को सूचित करता है। सब आश्रमवासी स्वागत की तैयारी में खड़े हो जाते हैं। समय बीतता जा रहा है। लेकिन श्री रामचन्द्रजी के आने की कोई सूचना नहीं दिखाई दे रही है। इतने में वहां पर एक मुनि-बालक आता है और विश्वम्भर को यह समाचार सुना देता है, 'मुनि-वर! मुझे मालूम हुआ कि अवतार-पुरुष श्रीराम शबरी के आश्रम की ओर चले गए हैं।'

सभी मुनि हतोत्साह हो जाते हैं।

श्री रामचन्द्रजी पुष्पशय्या पर बैठे हुए हैं। पक्षी सभी राम-नाम का गान कर रहे हैं। मयूर नृत्य कर रहे हैं। सभी जन्तु हर्षोल्लास से सिर हिला रहे हैं। हथिनी शांति अपनी सूंड से पानी लाकर दे देती है। शबरी उस जल को लेकर श्री रामचन्द्रजी

के चरण धोती है। और अपने आंचल से उन्हें पोंछ लेती है। पोंछते समय वह श्री रामचन्द्रजी के तलुए देखती है। उसकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। वह रामचन्द्रजी के चरणों की ध्यान से परीक्षा करती हुई पूछती है :

'प्रभु ! क्या आप कंकड़ और कांटों पर से चलते हुए आए हैं ? आपके पैर कंकड़ों और कांटों के घुस जाने के कारण सूज गए हैं। नाथ ! हम पापियों के उद्धार के लिए इतने कष्ट सह रहे हैं ?'

इस प्रकार कुशल-प्रश्नादि के उपरांत उसने दोनों चरण धोए, उस चरणोदक को अपने सिर पर डाल लिया और श्रद्धा एवं भक्ति के साथ अर्घ्यादि विविध सामग्रियों से राम-लक्ष्मण का विधिवत् पूजन किया।

इसके बाद शबरी ने सोचा कि रामचन्द्रजी बहुत भूखे-प्यासे होंगे; इसलिए जो फल लाई थी उसने उसकी टोकरी सामने लाकर रख दी। उसमें से अच्छे-अच्छे एव पके हुए फल चखकर रामचन्द्र जी को देने लगी। ताकि रामचन्द्रजी को खट्टे फल खाने की नौबत न आए।

श्री रामचन्द्रजी ने बड़े स्नेह और प्रेम के साथ उन फलों को लिया और उन्हें खाने लगे। लक्ष्मण क्रोधपूर्ण नेत्रों से शबरी की ओर देखने लगे। उस दृष्टि में यह भाव छिपा हुआ था कि वह जूठे फल प्रभु को खिला रही है। श्री रामचन्द्रजी लक्ष्मण की ओर देखकर मुस्करा उठे। उनकी मुस्कराहट में यह अभिप्राय निहित था कि भगवान् का भक्त के प्रति कैसा प्रेम होता है। इतने में लक्ष्मण के कानों में यह ध्वनि सुनाई पड़ी—

पुंस्त्वे स्त्रीत्वे विशेषो वा जातिनामाश्रमादयः ।
न कारणं मद्भजने भक्तिरेव हि कारणम् ।।[1]

फिर रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण को भी समझाया :

'सुनो, लक्ष्मण, यह तो शुद्ध एवं सात्त्विक भक्ति है···वही शुद्ध, अलौकिक एवं पवित्र प्रेम है···'

इसी समय मुनि लोग रामचन्द्रजी की खोज में वहां आ पहुंचे । आते ही उन लोगों ने रामचन्द्रजी से पूछा :

'भगवन् ! आप क्यों इस नीच औरत के गृह में आए हैं ? यह चण्डालिन है, पापिनी है, इसका मुंह देखने मात्र से लोग कलंकित हो जाते हैं ।'

इसके उपरांत मुनियों ने रामचन्द्रजी को मुनिवाटिका में पधारने का निमन्त्रण दिया । उनसे कहा, 'आपके आतिथ्य और सत्कार के लिए वहां पर मधु, फल, फूल, कंद-मूल इत्यादि संग्रह करके रखे गए हैं । आपके न आने से हमें बड़ी निराशा होगी ।'

श्री रामचन्द्रजी मुस्कराते हुए बोले, 'भगवान् तो शुद्ध हृदय वालों से ही प्रेम करते हैं, न कि अपवित्र हृदय वालों के द्वारा दिए गए असंख्य फल और फूल को । जहां भक्ति होती है वहीं भगवान् का निवास भी होता है । और मैं भी···'

शबरी के दिए हुए सभी फलों को रामचन्द्रजी बड़े प्रेम से खाने लगे ।

---

१. पुरुषत्व-स्त्रीत्व का भेद अथवा जाति, नाम और आश्रम—इनमें से कोई भी मेरे भजन का कारण नहीं है । भजन का कारण तो एकमात्र मेरी भक्ति ही है ।

शबरी ने मातंग महर्षि के सन्देश को रामचन्द्रजी के सामने रखना चाहा इसलिए वह रामचन्द्रजी को तथा लक्ष्मण को मातंग महर्षि की समाधि के पास ले गई।

शबरी ने भगवान् रामचन्द्रजी को महर्षि मातंग के महात्म्य का परिचय दिया। तदुपरांत उस महात्म्य के स्मृति-चिह्न सात अद्भुत विषयों का परिचय कराया।

श्री रामचन्द्रजी ने देखा--(१) महर्षि ने समाधिस्थ होने के पूर्व स्नान करके जो वल्कल सुखाए थे, वे अभी तक गीले थे। (२) उन्होंने जिन पुष्पों से भगवान् की आराधना की थी, वे सब मुरझाए हुए नहीं थे। बल्कि उसी रूप में खिले महक रहे थे। (३) आश्रम के सामने जो शिला थी, उसमें सप्त स्वरों की ध्वनि हो रही थी। सुनने वालों को लगता था जैसे वह तारक मंत्र का जाप कर रही हो। तथा भगवान् ने पाषाणों में भी प्राणप्रतिष्ठा की हो। (४) वहां के जंतु परस्पर वैरभाव को त्याग एक घाट पर पानी पीते तथा एक ही वृक्ष के नीचे सोते थे। (५) समस्त वृक्ष सदा बहार को लिए अपना सौन्दर्य लुटा रहे थे। (६) सप्त सागर का जल सात वर्णों में अपनी विशेषता का परिचय देते लहराते दिखाई दे रहा था। (७) महर्षि की समाधि पर वायुमण्डल में दो दिव्य ज्योतियां दमक रही थीं।

इसके उपरांत शबरी ने श्री रामचन्द्रजी से बताया, 'भगवन्, यह समाधि मातंग महर्षि की है। उन्होंने ही मुझे ज्ञान का प्रकाश प्रदान किया। समाधिस्थ होने से पहले उन्होंने आपको सुनाने के लिए एक सन्देश मुझे दिया था। वह यह कि आप ऋष्यमूक पर्वत पर पहुंच जाइए। वहां वानरों के राजा सुग्रीव

रहते हैं । उनसे मिलने पर वे आपकी सीताजी के अन्वेषण में बहुत बड़ी सहायता करेंगे ।'

तदुपरान्त शबरी राम-लक्ष्मण को पंपा सरोवर के पास ले जाती है । वहीं सप्त-सागर-प्रतिष्ठा की कहानी उन्हें सुना देती है । मातंग जब युवावस्था में थे तब से पूर्ण वृद्ध होने तक वे प्रतिदिन सातों सागरों में जाकर स्नान करके लौटते थे । किन्तु जब वे चलने-फिरने में कुछ अशक्त हुए तव उन्होंने सातों समुद्रों का जल लाकर पंपा सरोवर में प्रतिष्ठित कर दिया । इस पावन जल में स्नान करने से लोग पवित्र हो जाते हैं ।

श्री रामचन्द्रजी उस पावन सरोवर में सप्त सागर के दर्शन करते हैं और उसमें स्नान कर पितृतर्पण करते हैं ।

मुनि लोग श्री रामचन्द्रजी से प्रार्थना करते हैं कि उन तड़ाग का जल उन्हींकी बेवकूफी के कारण अपवित्र हो गया है । अतः उसे पहले की भांति शुद्ध बनाएं । श्री रामचन्द्रजी मंदहास करते हुए बड़े स्नेह से शबरी की ओर देखते हैं और उसे आदेश देते हैं कि वह जाकर उस तड़ाग में स्नान करे ।

मुनिवाटिका के समीप स्थित तड़ाग में शबरी स्नान करती है । उसके स्नान के समाप्त होते ही तड़ाग का सारा जल निर्मल हो जाता है । तपस्वी यह विचित्र घटना देख चकित और आनन्दित हो जाते हैं ।

शबरी श्रीराम के निकट पहुंचकर उनसे प्रार्थना करती है कि उसके जीवन का लक्ष्य पूर्ण हो गया है । अतः कैवल्य प्रदान करें ।

श्री रामचन्द्रजी मंदहास करते हुए शबरी को आशीर्वाद देते

हैं । शबरी चिता जलाकर उसमें प्रवेश करती है । इतने में शतभिष शबर लोगों को साथ लिए हुए वहां पर आ पहुंचता है । वे सब चिता के सामने मूर्तिवत् खड़े हो जाते हैं । शबरी को अग्निज्वालाओं के बीच निर्भय और शांत खड़े देख शबर लोग उसे बाहर आकर उनके उद्धार करने की प्रार्थना करते हैं । शबरी मौन धारण करती है ।

आकाश को स्पर्श करने वाली अग्निज्वालाएं कुछ ही क्षण में शांत हो पृथ्वी का चुम्बन करने लगती हैं। लोग विस्मित नेत्रों से देखते हैं कि शबरी पुनः युवती हो गई है । वह श्री रामचन्द्रजी के निकट पहुंचकर उनके चरणस्पर्श करती है तथा उनकी पदधूलि को अपने सिर पर लेती है । फिर शबर लोगों की ओर मुड़कर उन्हें सलाह देती है, 'तुम लोग आज से अपनी परंपरागत परिपाटी—लूट-खसोट, हत्याकाण्ड, खूनखराबा इत्यादि को छोड़कर शांति के साथ जीवन अपनाओ । मानव-मात्र की सेवा करना अपना धर्म समझो और अपने जीवन के लक्ष्य तक पहुंचने की कोशिश करो । यही तुम लोगों से मेरा निवेदन है। आज भगवान् के दर्शनों से तुम लोग भी पवित्र हो गए हो। मुनियों एवं देवताओं के लिए दुर्लभ प्रभु-दर्शन तुम्हें प्राप्त हुआ । सदाचार-संपन्न हो शेष जीवन बिताओ ।'

शबरी परिपूर्ण शक्ति, श्रद्धा एवं विश्वास के साथ श्री रामचन्द्रजी के चरणों पर अपना मस्तक झुका लेती है। श्री रामचन्द्र जी उसे आशीर्वाद देते हैं । शबरी धीरे-धीरे आकाश की ओर उड़ती जाती दिखाई देती है। समस्त पशु-पक्षी और ऋषि गाते रहते हैं ।

श्री रामचन्द्रजी अपना हाथ उठाकर आशीर्वाद देते हैं, 'अमर बनी रहो।'

उस सरोवर से एक नदी का जन्म हुआ। वह शबरी की चिता की राख का स्पर्श करते हुए आगे बढ़ी और श्री रामचन्द्र-जी के पवित्र चरणों को धोती हुई कलकल ध्वनि के साथ बहने लगी।

श्री रामचन्द्रजी ने उस नदी का नाम शबरी के स्मृति-चिह्न के रूप में 'शबरी' रखा।

शबरी नदी उछलते-कूदते धरती माता के हृदय को शांत बनाते आगे बढ़ी और दक्षिणी गंगा कहलाने वाली गोदावरी में जा मिली।

* * *

आज भी गोदावरी की उपनदियों में शबरी अपना विशिष्ट स्थान रखती है तथा वह अपनी गौरव-गाथा के लिए विशेष प्रख्यात है।